

संपादक

अभिजीत कुमार, 9431006107

प्रबंध संपादक

मुकेश कुमार सिंह, 9534207188

समाचार संपादक

अखिलेश कुमार, 9431089053

राजनीतिक संपादक

प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337

सहायक संपादक

प्रभाकर कुमार राय/एस. एन. श्याम

संपादकीय सलाहकार

राजीव कुमार सिंह 9431210181

रंजीत कुमार 8800689555

कॉन्सेप्ट एडिटर

अनूप कुमार शर्मा, 7004821433

विधि सलाहकार

वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

बिहार ब्लूरे

अनूप नारायण सिंह

मुख्य संचादाता

सोनू सिन्हा, 9431006189

आशोष कुमार

सुशांत साईं सुंदरम

पण्ठम बंगाल ब्लूरे : सचिन पर्वत

जिला ब्लूरे

बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316

अमित सिंह, 9430595995

भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,
(ब्लूरे चीफ), 9334114515

सारण प्रमंडल : सचिन पर्वत, 9430069987

समस्तीपुर : मृत्युंजय कुमार ठाकुर, 8406039222

चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993

हसनपुर : विजय चौधरी : 9155755866

दरभंगा : जाहिद अनवर : 8541849415

बाराहाट : हेमन्त कुमार (संचादाता)

सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संचादाता)

बिहार-झारखण्ड : अभिनव कुमार 7903292877

दिल्ली : नवल वत्स

ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318

प्रधान कार्यालय

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर,

काली मंदिर रोड नं.- 7, पटना – 800 020 (बिहार)

मो.- 9431006107, 9939815347

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली

मंदिर रोड नं.- 7 पटना – 800 020 (बिहार) से

प्रकाशित व एस. एम. ऑफरेटर पंडुईकोठी लंगर घोली,

डीएन दास लेन, पटना-800 004, से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निवटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक



डॉ. संजय मयूर जय जयराम सिंह

राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
माजपा

समाजसेवी

चर्चित बिहार

वर्ष : 6, अंक : 12, अगस्त 2019, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका



6

भारतीय राजनीति की उजावान ओजस्विता की सुषमा खो गई !



ना उम्मीदों की उम्मीद ...

8



डा .तारा श्वेता आर्या ...

18



धरती, आकाश और भारत

24



गरीबी से गोल्ड तक का सफर ... 26

अब धारा नहीं बहेगी

कु

छ खबरें हैं जो हवा में तैर जाती हैं और पल भर में जन-जन तक पहुंचती हैं। जम्मू-कश्मीर में पिछले कुछ दिनों से जो तैयारी चल रही थी, वह जर्मी से लेकर हवाओं तक में कई तरह के सवाल-सदेह और अटकलें पैदा कर रही थी। हर जुबान पर था कि कुछ होने जा रहा है। आखिर में इतना बड़ा हुआ जो कड़यों का कद छोटा कर गया। संसद में जम्मू-कश्मीर के पुनर्गठन बिल ने कई गाठें खोल डालीं तो कड़यों की आंखें खोल डालीं। जिन्हें पहले से नहीं पता था कि धारा 370 में क्या है, पता चलने पर दांतों तले अंगुली दबा ली। अब सारा देश एक तरफ और मुट्ठीभर दूसरी तरफ। और ये मुट्ठीभर भी सिर्फ वे हैं जो अगर विरोध नहीं करेंगे तो भी मारे जायेंगे और करेंगे तो भी। पर अपने देश में दीवानों की भी कमी नहीं है। जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन बिल पर मतदान के समय संसद में कुछ तो ऐसे दीवाने निकले, जिन्होंने पार्टी लाइन तोड़कर अपनी आत्मा की आवाज सुनकर अपने कंठ से वे सुर निकाले, जिन्होंने इतिहास में उनका नाम दर्ज कर दिया। दरअसल हमारी आदत हो गयी है कि देश से जुड़े मुद्दों पर भी हम एक नहीं हो सकते और महाभारत करके ही दम लेते हैं। कितना अच्छा मौका था पूरी दुनिया को दिखाने का कि हमारे देश की अखण्डता के सामने राजनीति के सारे खंड एकजुट होकर एक सुर में बोलते हैं। पर ऐसा हुआ नहीं। और यदि शासक दल ने कभी संसद में यह कह दिया कि धरती गोल है तो भी विरोधी पक्ष चिल्ला उठेगा-नहीं, धरती चौकोर है। एक बार एक लड़की यूनिवर्सिटी टॉप कर गयी। उसके एक क्लासमेट को उसकी मेरिट पर विश्वास नहीं हुआ तो पूछने लगा-मैं तुझे टॉपर तब मारूँगा जब तू मेरे एक सवाल का तसल्लीबख्ता जवाब देगी। लड़की गर्व से बोली-पूछ क्या सवाल है तेरा? लड़का बोला-यूं बता अक जूती मारने से पहले झड़काई क्यों जाती है? सवाल सुनकर लड़की की सिर्फ़ी-पिर्फ़ी गुम हो गयी। उसकी हालत उन नेताओं जैसी हो गयी जो यह नहीं बता सके कि धारा 370 से कश्मीरियों का आज तक क्या फायदा हुआ है। एक बर की बात है अक मास्टरणी रामप्यारी क्लास के सबतै अलबादी टाब्बर नथू तैं धमकाते होये बोल्ली-या बात समझ लिये अक जै तू नीं पढ़ैगा तो तनै मैं नम्बर भी नहीं दूंगी। नथू बोल्ल्या-मनै थारा नम्बर चहिय ए कोनी। लंबे समय से कहा जा रहा था कि भाजपा नवंबर 2020 तक उच्च सदन राज्यसभा में अपने बूते बहुमत जुटा लेगी। मगर हाल ही में राजग सरकार ने कई ऐसे विधेयक राज्यसभा से सफलतापूर्वक पारित करवा लिये, जिनके पारित होने की दूर-दूर तक संभावना नजर नहीं आ रही थी। इन विधेयकों के अंतिविरोध व विपक्षी दलों के मुखर विरोध के चलते ये संभव नहीं था। मोदी सरकार पिछले कार्यकाल में भी कुछ विधेयकों को पारित कराने की असफल कोशिश कर चुकी थी। सोमवार को जम्मू-कश्मीर से जुड़े अनुच्छेद-370 के प्रावधानों को खत्म करने व राज्य पुनर्गठन विधेयक पारित करवाकर भाजपा ने सबको चौकाया। यह भाजपा के प्रबंधकों के चातुर्य का ही परिणाम था कि भाजपा व बिल के मुखर विरोधी या तो बिल के समर्थन में आ गये या अनुपस्थित रहकर अथवा बाकाउट करके भाजपा सरकार के हाथ मजबूत कर गये। पिछले कुछ ही दिनों में सूचना का अधिकार कानून में संशोधन, विधि विरुद्ध क्रियाकलाप निवारण संशोधन विधेयक (यूपीपीए), नेशनल मेडिकल कमीशन, तीन तलाक को अपराध घोषित करने वाले मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण विधेयक-2019 और अब अनुच्छेद-370 को खत्म करने वाला विधेयक पारित होना भाजपा के कुशल राजनीतिक प्रबंधन की ही मिसाल है। दरअसल, भाजपा ने कुछ क्षेत्रीय दलों मसलन टीआरएस, बीजद, वाईएसआर व अन्नादुमक जैसे दलों को साधने में कामयाबी हासिल की है। ये दल चाहते हैं कि केंद्र से बेहतर संबंध बने रहें ताकि उनकी लोककल्याणकारी योजनाओं के लिए वित्तीय संसाधन जुटाये जा सकें। कुछ राजनीतिक दल केंद्र द्वारा सीबीआई और ईडी जैसे विभागों के राजनीतिक हितों के लिये इस्तेमाल से भी सशक्ति रहते हैं।



अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107

cbhindi.news@gmail.com

कश्मीर में मोदी शाह की अग्रस्त क्रांति



सुशांत साईं सुंदरम

छोटे थे तो इतवार का शिद्धत से इंतजार रहता था. तब एकमात्र टीवी चैनल दूरदर्शन ही हुआ करता था. उस बक्त एक सीरियल प्रसारित होता था - 'शक्तिमान'. इस सीरियल के शुरूआत में कास्टिंग के बक्त गाना आता था - अद्भुत अदम्य साहस की परिभाषा है... तब के बक्त के बच्चों के जुबान पर यह गाना रहता था. आज भी इसके बोल सुर के साथ याद हैं. वर्तमान परिवर्ष में देखें तो इसी अद्भुत अदम्य साहस की नई परिभाषा भारत सरकार के गृह मंत्री अमित शाह ने लिख डाली है, जिस उम्मीद और भरोसे से देश की जनता ने भाजपा के कदावर नेता नरेंद्र मोदी के नेतृत्व को स्वीकारते हुए एनडीए गठबंधन को पुनः पूर्ण बहुमत के जनादेश के साथ देश के सत्ता की चाही सौंपी, उस जनता जनादेन की आशा, अपेक्षा और आकांक्षाओं पर मोदी सरकार अपने दुसरे कार्यकाल के पहले ही दो-तीन महीनों में खरी उतरी है. जम्मू-कश्मीर जो अब तक भारत का होकर भी भारत का न था. जहाँ के विधान, प्रधान और निशान तक अलग थे. जो भारत का होने के बावजूद भी अलग-थलग पड़ा था. जहाँ के लोग उन्नति और प्रगति की बात करना तक हास्य-प्रलाप समझा करते थे. उसी जम्मू-कश्मीर में एक नई आशा की किरण का उदय हुआ है. अनुच्छेद 370 - जिसने अब तक विशेष दर्जा देकर जम्मू-कश्मीर के विकास के रास्तों को

अवरुद्ध कर रखा था, उसे हटाकर एनडीए नीत नरेंद्र मोदी सरकार ने इतिहास रच दिया है. जम्मू-कश्मीर अब से विशेष राज्य न होकर केंद्र शासित राज्य होगा जहाँ विधानसभा होगी. जनता के मत से सरकार चुनकर आएंगी. यहाँ की विधानसभा दिल्ली जैसी होगी. उपराज्यपाल ही यहाँ के प्रशासनिक सर्वेसर्वा होंगे. पुलिस उपराज्यपाल को ही रिपोर्ट करेंगी. जबकि लद्दाख को अलग कर केंद्र शासित राज्य का दर्जा दिया गया है. लद्दाख में विधानसभा नहीं होगी, वहाँ चंडीगढ़ जैसी तर्ज पर उपराज्यपाल होंगे. अलग विधान, प्रधान और निशान की बेड़ियों की जकड़न से छूटकर घाटी के लोग भी विकास का स्वन देख सकेंगे और उसे पूरा करने के लिए यथासंभव आगे भी बढ़ पायेंगे. हालाँकि अनुच्छेद 370 का समापन करना सरकार के लिए कम दुष्कर नहीं था लेकिन इस अनुच्छेद का ही प्रयोग करते हुए सरकार ने इसे खत्म कर दिया. इसी अनुच्छेद के तीसरे खंड में राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया है कि वह किसी भी वक्त इसे निष्क्रिय कर सकते हैं, जिस प्रावधान का उपयोग करते हुए राष्ट्रपति द्वारा आदेश जरी किया गया और इस आस्थाई व्यवस्था का अंत हो गया. सात दशकों से एक अलग देश की तरह संचालित हो रहा जम्मू-कश्मीर वास्तविक रूप में अब जाकर भारत का अभिन्न अंग बन सका है.

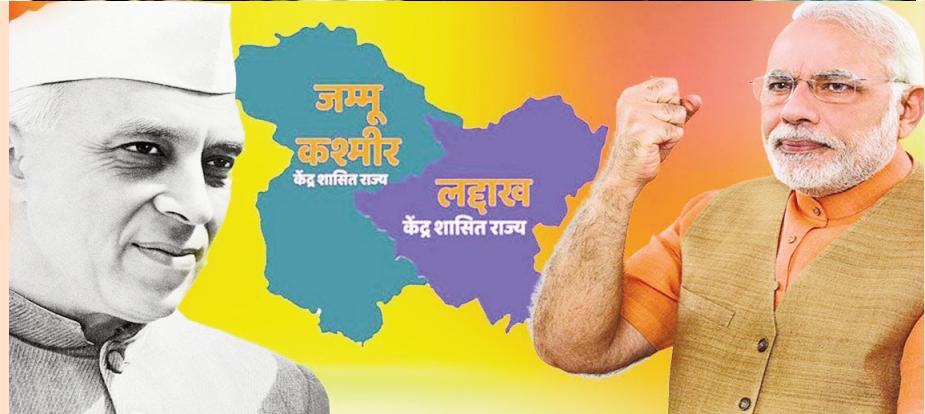
अब देश के केंद्र की सरकार अपने नियम-कानून जम्मू-कश्मीर में भी लागू कर सकेगी. इसमें कोई दोराय

नहीं कि जिस मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को दो अलग-अलग केंद्र शासित प्रदेश बनाया है, वह वहाँ के विकास को फुल स्पीड से आगे बढ़ाने में अपना सर्वस्व झोंक देगी. जम्मू-कश्मीर और लद्दाख का विकास मोदी सरकार के लिए किसी चुनौती से कम नहीं. मोदी सरकार के दुसरे कार्यकाल का यह शुरूआती समय ही है. सरकार के अभी पूरे पांच साल बचे हैं. जबकि विपक्ष इस फैसले के खिलाफ है, और भाजपा लगातार यह कहकर काट कर रही है कि इस ऐतिहासिक कदम से घाटी का विकास होगा, ऐसे में इन दो नए केंद्र शासित राज्यों में विकास कार्यों को निर्बाध रूप से आगे बढ़ाने की बड़ी चुनौती भी केंद्र सरकार के पास होगी. पहले कार्यकाल के दौरान जीएसटी और नोटबंदी जैसे बड़े फैसले और दुसरे कार्यकाल के शुरूआत में ही तीन तलाक और अनुच्छेद 370 समाप्ति के बड़े फैसले लेना सरकार के दूरदर्शी सोच को प्रतिबिंबित करता है. यह भारतीय जनता पार्टी और उसके शीर्ष स्तरीय नेताओं की दृढ़ इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता, संकल्पशक्ति और सकारात्मक सोच ने असंभव को भी संभव कर दिखाया.

मोदी और शाह की जोड़ी और उनका आपसी सामंजस्य अद्वितीय है जिसने इस बड़े निर्णय को लेते हुए जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न और अदूर अंग बना दिया. कश्मीर अब पूर्णरूपेण भारत का सिरमौर बन गया है. जम्मू-कश्मीर भी अब भारत के



संविधान, निशान और प्रधान के साथ विकास पथ पर आगे बढ़ेगा। परिवारवाद, अलगाववाद और आतंकवाद जैसे मसलों से हटकर अब उन्नति और प्रगति पथ पर चलेगा। भाजपा नीत एनडीए पर जनता का भरोसा और भी बढ़ गया है। मैनिफेस्टो में किये जो बादे लोगों को हास्याप्पद और असंभव प्रतीत होते थे, वे भी अब सार्थक होते प्रतीत होंगे। जनत को इस बाद का भरोसा हो गया है कि उनके एक-एक वोट वाकई देश की एकता, अखंडता और विश्वास को अक्षुण बनाये रखने में इस्तमाल हो रहा है। आज ठंडक मिली होगी उन माँओं को जिनके जिगर के टुकड़े जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा करते वीरगति को प्राप्त हुए। चैन मिला होगा उन बेवाओं को जिनके सुहाग कश्मीर में बहे रक्त में उजड़ गए, सुकून मिला होगा उन बहनों को जिनकी राखियाँ उन शहीद हो चुके भाइयों के कलाई पर बंधने से बच्चित रह गईं। उम्मीद है इस नई सुबह की रात नहीं होगी। सात दशकों का अंधेरा धीरे-



धीरे छठेगा। कश्मीर की वादियों के पहाड़ों से नव उर्जा लिए सूर्य उदित होगा। घाटी में भय, आक्रांत और आतंक का माहौल नहीं होगा। वहाँ रहने वाले लोगों के सर पर चिंता के बल नहीं पड़ेंगे। खुशनुमा माहौल में स्वर्णिम भविष्य लिखा जायेगा। बच्चे अपने सपनों को साकार करेंगे। और हाँ! आने वाली पीढ़ियों को आज की पीढ़ी इन बेड़ियों से आजादी की कथा रोमांचक कहानी सुनाएंगी।

बाबा साहब अंबेडकर भी थे 370 के खिलाफ -जयराम विप्लव

अब एक देश में एक निशान और एक विधान लागू

मोदी सरकार द्वारा धारा 370 हटाने और जम्मू कश्मीर को दो अलग केंद्र शासित प्रदेश बनाने के सरकार के इस साहसपूर्ण कदम का सम्पूर्ण देश में अभिनंदन हो रहा है। यह जम्मू-कश्मीर सहित पूरे देश के हित के लिए अत्यधिक आवश्यक था। सभी को अपने स्वार्थों एवं राजनीतिक भेदों से ऊपर उठकर इस पहल का स्वागत और समर्थन करना चाहिये। हमने तो सरदार पटेल को नहीं देखा न हमारे जनरेशन ने देखा लेकिन आज अमित शाह जी और नरेंद्र मोदी जी को देखकर यह मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मैंने अपने जीवन में जीता जागता सरदार पटेल को देखा है। मोदी जी और शाह जी दोनों को भारत के पूर्ण एकीकरण के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। जो रोज कहते थे कि दम है तो हटा के दिखाओ धारा 370, आज हटाए जाने के ऐलान के बाद कह रहे हैं लोकतंत्र की हत्या कर दी। और हत्या तो तब हुई थी जब विलय के चार साल बाद 370 को बगैर संसद से पारित किए संविधान में घुसाया गया था। डॉक्टर अंबेडकर स्वयं इसके खिलाफ थे। आजादी के बाद कश्मीर और लद्दाख को आज आजादी मिली है और जिस उद्देश्य को लेकर भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई थी, 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे', का सपना पूरा हुआ है।

अनुच्छेद 370 - डैमेज कंट्रोल में लगे नीतीश कुमार

जनता में जबरदस्त विरोध के बाद
जॉर्ज फर्नार्डिस को बनाया मोहरा

अखिलेश कुमार

अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष राज्य की दर्जा देने संबंधित धाराओं को केंद्र सरकार द्वारा समाप्त किए जाने के बाद भाजपा को पूरे देश में मिल रही व्यापक समर्थन से परेशान बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उनकी पार्टी जनता दल यू बैकफुट पर आ गई है। और अब वह डैमेज कंट्रोल के लिए खुद बचाव की मुद्रा में दिख रही है। दरअसल अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू कश्मीर राज्य को दिए गए विशेष दर्जा के खिलाफ भाजपा शुरू से ही रही है। लेकिन उसका सहयोगी दल जनता दल यू हमेशा इसका विरोध करते रहा है। राज्यसभा में छिछले 5 अगस्त को तथा लोकसभा में 6 अगस्त को जब इस बिल को पेश किया गया तो जदयू ने इसका पुर्जोर विरोध करते हुए सदन में बहिष्कार किया। हालांकि राज्यसभा में दो तिहाई मतों से यह बिल पास हुआ। बिल के समर्थन में 125 तथा विरोध में मात्र 61 मत ही पड़े। वहीं लोकसभा में भारी बहुमत के साथ यह बिल पास हुआ। बिल के पश्च में 366 तथा विरोध में मात्र 66 सांसदों ने मतदान किया। अब सदन के बाहर आम जनता भी इस बिल का पुर्जोर समर्थन करते हुए नरेंद्र मोदी सरकार की भूरी भूरी प्रशंसा कर रही है। भाजपा को

देश के सभी वर्गों से मिल रहे अपार समर्थन के बाद जदयू बैकफुट पर आ गई है। दरअसल नीतीश कुमार को उम्मीद थी कि इस बिल का विरोध करने से खासकर मुस्लिम मतदाता उनके समर्थन में खड़े हो जाएंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यहां तक कि बिहार में उनके समर्थक अति पिछड़ा वर्ग युवा वर्ग और नेताओं द्वारा भी इस बिल के लिए भाजपा का जबरदस्त समर्थन प्राप्त हो रहा है। नीतीश कुमार अनुच्छेद 370 को लेकर देशवासी और बिहारवासी के भावनाओं को समझने में विफल रहे। उन्हें आम जनता द्वारा भाजपा को ऐसे समर्थन मिलने की उम्मीद नहीं थी। जबकि भाजपा के घोर विरोधी दल बहुजन समाज पार्टी, बीजू जनता दल, आम आदमी पार्टी, वाइआरएस, एआईएडीएमके जैसे राजनीतिक दल अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने के खिलाफ लाए गए बिल के पक्ष में भाजपा के साथ सदन में खड़े नजर आए। जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले कानून के विरोध में आम देशवासियों के भावना को समझने में शायद नीतीश कुमार भूल कर बैठे। उन्हें भाजपा ने तृत्व वाली केंद्र सरकार को ऐसा व्यापक समर्थन मिलने का उम्मीद नहीं थी। जब बिहार में उनके इस कदम की चौतरफा आलोचना होने लगी तो वे अपने सबसे करीबी कर्ते जाने वाले पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सह राज्यसभा सांसद आरसीपी सिंह को आगे कर अपनी सफाई दी। आरसीपी सिंह ने कहा है कि चुकिं बिल पारित होने के बाद अब वह देश का

कानून हो गया है, इसलिए पूरा देश को इस कानून को मानना चाहिए। और केंद्र सरकार का साथ देना चाहिए। हम इस कानून का सम्मान करते हैं। विरोध किए जाने के सवाल पर जदयू राष्ट्रीय महासचिव ने कहा कि इस मामले में जॉर्ज फर्नार्डिस का नाम जोड़ दिया। तथा कहा कि चुकि 1996 में भाजपा के साथ समझौते के दौरान जॉर्ज फर्नार्डिस ने कश्मीर को विशेष राज्य का देने के दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 का समर्थन जारी रखने का निर्णय लिया था और इस बिन्दु पर भाजपा से असहमति जाताई थी। जॉर्ज फर्नार्डिस के विचारधारा का समर्थन करते हुए जदयू ने इस बिल का विरोध किया था। लेकिन अब इस पर छाती पीटने से क्या फायदा? हम केंद्र सरकार के साथ हैं। विश्वस्त सूत्र बताते हैं अनुच्छेद 370 पर लाए गए बिल का नीतीश कुमार द्वारा विरोध करने के निर्णय श्री कई नेता भी असहमत थे वही जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने के लिए लागू अनुच्छेद 370 के प्रधानों का समर्थन करने वाले कई मुस्लिम नेता नीतीश कुमार के नीयत और नीति पर डंगली उठा रहे हैं उनका कहना है कि नीतीश कुमार ने इस बिल का केवल दिखावे के लिए विरोध किया था यदि सचमुच में उन्हें विरोध करना था तो लोकसभा और राज्यसभा में बिल पर हुए मतदान के दौरान उन्हें इसमें हिस्सा लेना चाहिए था तथा बिल के विरोध में मतदान करना चाहिए था परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया और सदन का बहिष्कार कर एक तरह से भाजपा का समर्थन ही किया है।



भारतीय राजनीति की उजावान ओजस्तिवा की सुषमा खो गई!

महिला सशक्तिकरण की ज्वलंत उदाहरण बनी रही सुषमा स्वराज



बिधुरंजन उपाध्याय

भारतीय जनता पार्टी की शीर्ष स्तरीय नेत्री एवं पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज अब नहीं रहीं, मंगलवार, 6 अगस्त की रात जब पूरा देश सोने की तैयारी कर रहा था तब उनके हृदयधात्र से निधन की खबर आई। इस खबर पर सहसा किसी को भी यकीन नहीं हुआ। खबर आने के बाद कईयों की रात करवट लेते हुए कटी। प्रखर वक्ता एवं ओजस्वी गुणों वाली इस राजनेता ने विश्वभर में अपनी अद्वितीय पहचान बनाई थी। सुषमा स्वराज ने पने की कई पहली कहानियाँ लिखीं। चाहे वो हरियाणा कैबिनेट की पहली सबसे युवा मंत्री बनाई गई, चाहे दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री। या फिर किसी राजनीतिक दल की पहली महिला प्रवक्ता या भारत की पहली (पूर्णकालिक) महिला विदेश मंत्री (इनके पूर्व इंदिरा गांधी कार्यवाह विदेश मंत्री के रूप में योगदान दे चुकी हैं)। सुषमा जी ने हर रोल में अपने आप को अद्वितीय से सांतित किया।

बतौर महिला नेत्री सुषमा स्वराज ने विपक्षी दलों के नेताओं के साथ भी सामंजस्य और मधुर सम्बन्ध बनाकर रखा। वर्ष 1970 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता के रूप में अपनी राजनीतिक करियर की शुरूआत कर भारत देश का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने का गैरव प्राप्त किया। सुषमा जी आप लोगों से जुड़ी नेता रहीं। शायद यही वजह है कि आज उनके जाने के बाद हर किसी की आँखें गमीन हैं। नरेंद्र मोदी की पहली सरकार में बतौर विदेश मंत्री उन्होंने अमित छाप छोड़ी।

प्रधानमंत्री मोदी जिस डिजिटल इंडिया के हिमायती रहे उसे सफलता के शीर्ष तक पहुँचाने और जनकल्याण में यथार्थ योगदान देने में सुषमा स्वराज का बड़ा हाथ रहा। ट्वीटर के जरिये वे देश-विदेश के लोगों से जुड़ी रहीं और उनकी आवश्यकतापूर्ति के लिए सहर्ष प्रयासरत भी रहीं। फिर चाहे मूक-बधिर गीता की पाकिस्तान से भारत वापसी हो या फिर पाकिस्तानी दम्पति को उनके बच्चे के भारत में इलाज के लिए वीजा उपलब्ध कराने की बात हो। सुषमा जी ने सोशल मीडिया को जनता से सीधा संवाद का सुलभ माध्यम बनाया। इस बारे में एक यूजर ने जब ट्वीट किया कि यह सुषमा जी नहीं हो सकतीं, बल्कि उनकी पीआर टीम है जो ट्वीट करती है। इसके जवाब में सुषमा स्वराज



ने चुटकी लेते हुए लिखा - ये मैं ही हूँ, मेरा भूत नहीं। नरेंद्र मोदी की विदेश नीति और उनके विदेश दौरों की चर्चा और बहस होती रही। लेकिन इसके पीछे भी सुषमा जी का ही कुटनीतिक दिमाग रहा, जिससे आज के समय में बड़े और शक्तिशाली राष्ट्र भी भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान एवं महत्व को स्वीकार कर रहे हैं और भारत सरकार के लिए कड़े फैसलों पर भी अपना समर्थन दे रहे हैं। सुषमा स्वराज के अचानक निधन से दुनियाभर के प्रमुख नेता दुःख प्रकट कर रहे हैं। एससीओ समिट 2018 में बतौर विदेश मंत्री के हिस्सा लेने गई सुषमा जी की यह तस्वीर भारतीय महिला की अंतर्राष्ट्रीय शक्ति को परिलक्षित कर रही है। इस तस्वीर की खासियत यह है कि इसमें शामिल दस विदेश मंत्रियों में एकमात्र सुषमा स्वराज ही महिला शामिल हैं। इस तस्वीर में ही दुनिया ने वैश्विक मंच पर भारतीय महिला की शक्ति और दिव्यता को देखा। इस तस्वीर के सामने आने के बाद दुनिया ने भारत में नारी सशक्तिकरण को सलाम किया।

सुषमा स्वराज जितनी मधुर और सौम्य मिजाज की थीं राजनीति में उन्हीं ही कड़ी और अनुशासित। तभी तो वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में जब यूपी गढ़बंधन की जीत हुई थी तब सोनिया गांधी के नेतृत्व में सरकार बनाए जाने की चाहाएँ थीं। इसका भारतीय जनता पार्टी ने जोरदार विरोध किया था। भाजपा ने सोनिया गांधी के विदेशी मूल के होने को मुद्दा बनाकर खिलाफत की थी। भाजपा द्वारा किये गए विरोध-प्रदर्शन की अगुआई सुषमा स्वराज ने की थी। यह उनके विरोध का ही असर था कि सोनिया गांधी के बजाय मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाया गया। राजनीतिक मंत्रों पर भले ही सुषमा जी विपक्षी दलों का विरोध करती नजर आई हों लेकिन व्यक्तिगत जीवन में उनके विपक्षी दलों के नेताओं से सम्बन्ध मधुर ही रहे। ऐसे में बशीर बद्र की लिखी यह पंक्तियाँ याद आती हैं जिसमें सुषमा जी ने संसद में एक बार कहा था -

"दुश्मनी जमकर करो लेकिन ये गुंजाईश रहे,
जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शमिर्दा न हों।"

सुषमा स्वराज ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत बिहार से ही की। वे जॉर्ज फर्नार्डिस की करीबी रहीं और उनके मार्गदर्शन में राजनीति का कक्षहरा सीखा। यह प्रासांगिक है कि आपातकाल के दौर में जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्णक्रांति आन्दोलन में हिस्सा ले रहे समाजवादी नेता जॉर्ज फर्नार्डिस को जब गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया तो सुषमा स्वराज ने यह नारा दिया था - 'जेल का फाटक टूटोगा, जॉर्ज हमारा छूटोगा'। यह नारा जन-जन के



जुबान पर चढ़ गया था। आपातकाल के इस स्थान समय में जॉर्ज और उनके साथियों को जून 1976 में गिरफ्तार कर लिया गया था। वर्ष 1977 के लोकसभा चुनाव में जॉर्ज ने मुजफ्फरपुर लोकसभा के लिए जेल से ही नॉमिनेशन का प्रचार भरा। जेल में रहते ही जॉर्ज ने चुनाव लड़ा और जीते थे। चुनाव के दौरान जॉर्ज तो जेल में थे, ऐसे में जनमानस के बीच उनकी आवाज सुषमा स्वराज बनी। वे उनकी स्टार प्रचारक बन कर विहार के मुजफ्फरपुर आई थीं। सुषमा लोकसभा क्षेत्र में अहले सुबह से सूज ढलने तक बिना किसी ताम-झाम के लगातार नुकड़ सभाएं करतीं वह आपातकाल और देश के विकास को केन्द्रित कर भाषण देतीं और लोगों से परिवर्तन की अपील करतीं। जॉर्ज के चुनाव प्रचार के लिए सुषमा दस दिनों तक मुजफ्फरपुर में अपना डेरा डाला। कार्यक्रमों के सहयोग से उनके रहने-खाने का बंदोबस्त किया गया। यह लोकसभा चुनाव और इसका प्रचार अधियान ऐतिहासिक रहा। हाथ उठाये हथकड़ी वाला जॉर्ज का कटआउट चुनाव का बैनर-पोस्टर बना। इस चुनाव में जॉर्ज जेल में थे, बाहर सुषमा उनके प्रतिनिधि के रूप में जनता से मुखातिब हो रहीं थीं और आप लोग स्वयं इस चुनाव में हिस्सा ले रहे थे। भले ही सुषमा स्वराज अब हमारे बीच नहीं रहीं लेकिन उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व युगों-युगों तक प्रासारित रहेंगे। वे असाधारण प्रतिभा की धनी थीं। सुषमा की बेटी बांसुरी ने उनके अंतिम संस्कार की रस्म अदायगी की। इस दौरान सुषमा के पति स्वराज कौशल भी मौजूद रहे। रुद्धिवादी भारत देश में जहाँ पति या पुत्र के हाथों अंतिम संस्कार सम्पन्न करवाया जाता है, वहाँ उनके अंतिम संस्कार की सभी रस्में उनकी बेटी बांसुरी द्वारा पूरी की गईं। सुषमा स्वराज जी के अंतिम संस्कार में सभी दलों के उच्च स्तरीय नेता-पदाधिकारियों एवं भारत सरकार के लगभग सभी मर्यादों की उपस्थिति ने यह साजित कर दिया कि वे दलीय राजनीति से परे सबको गले लगाने वाली राजनेताओं में से एक थीं। वैशिक स्तर के प्रतिनिधियों एवं अधिकारीयों ने विभिन्न माध्यमों से सुषमा जी के निधन पर अपनी श्रद्धांजली अर्पित की है एवं शोक व्यक्त किया है। सुषमा स्वराज महज 67 की उम्र में गई हैं। महज इसलिए क्यूंकि अभी उनके पास वक्त बहुत था लेकिन विधि के विधान के आगे किसी की नहीं चलती। सुषमा जी अपने आप में 'न भूतो न भविष्यत' हैं। उनके जाने से भारतीय राजनीति में उपजा शून्य आने वाले समय में तो भरा जाना दुष्कर ही मालूम पड़ता है। सुषमा जी महिला सशक्तिकरण की ज्वलंत उद्धारण बनी रहेंगी। वे सदैव नायियों को प्रेरित करती रहेंगी। उनके आचार और विचार पीढ़ियों तक मार्गदर्शन करेंगे। शालीनता, सौम्यता, विनम्रता, वाकपटुता, नीति, सिद्धांत एवं उजार्वान औजस्तिवा की सुषमा खो गईं।

राजनीतिक दायित्वों से बंधीं सुषमा अपने पति स्वराज की इच्छा भी पूरी नहीं कर सकीं



बिधुरंजन उपाध्याय

भारतीय राजनीति ने अपनी एक कद्दाकर नेत्री को खो दिया। भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता सुषमा स्वराज के दिल का दौरा पड़ने के कारण निधन की खबर आते ही पूरे देश में शोक की लहर छा गयी। मात्र 25 वर्ष की आयु में कैबिनेट मंत्री बनने वाली सुषमा जी दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। देश की विदेश मंत्री के पद पर वित्तीय कार्यकाल सुषमा जी द्वारा निभाए सभी दायित्वों से ऊपर माना गया। इस दौरान इन्होंने ऐसी परिस्थितियों से लोगों को बचाया जब लोग विदेश से वापस घर लौटने की उमीद खो चुके थे। उनके द्वारा बचाए गये कई लोग उन्हें अपनी मां के बराबर का दर्जा देते हैं। सुषमा स्वराज की भाषा शैली उनकी ताकत थी। उनकी भाषा शैली में जितनी गर्जना थी उतना ही संतुलन भी। वह विराधियों को जवाब भी देती थीं तो बड़े सम्मान के साथ। आजम खान द्वारा जयप्रदा पर की गयी अभद्र टिप्पणी पर सुषमा स्वराज ने मुलायम सिंह यादव को कहा था "मुलायम थाई, आप पितामह हैं समाजवादी पार्टी के। आपके सामने रामपुर में द्वैषपी का चौर हरण हो रहा है। आप थोष की तरह मौन साधने की गलती मत करिये।" सुषमा स्वराज ने अपने देश और पार्टी को कितना समय दिया। इस बात का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि जिस प्रेम को पाने के लिए सुषमा जी ने अपने समाज से जंग लड़ी उस प्रेम को भी उतना ही समय दिया जितना उनके कर्तव्य के बाद बचा। जी हां सुषमा शर्मा के लिए सुषमा स्वराज बनना आसान नहीं रहा। आज भले ही हर क्षेत्र में हरियाणा की बेटियां बढ़ कर हिस्सा ले रही हैं लेकिन वो दौर ऐसा था जब बेटियों के लिए प्रेम विवाह तो दूर प्रेम के बारे में सोचना तक पाप माना जाता था। लेकिन 14 फरवरी 1952 को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख सदस्यों में से एक हरदेव शर्मा के घर जन्मीं। इस बेटी ने ज़िंदगी की हर चुनौती को स्वीकार किया तथा। उस चुनौती पर जीत हासिल की। सुषमा व स्वराज कौशल की प्रेम कहानी कलेज में शुरू हुई थी। इनकी पहली मुलाकात पंजाब यूनिवर्सिटी के चंडीगढ़ के लॉ विभाग में हुई थी। अलग सोच, विचार, सिद्धांत के होते हुए भी इन दो अलग अलग ओपरेटर नेचर वाले लोगों में प्यार बढ़ा था। इतना ही नहीं सुषमा पूरी तरह हिंदी व स्वराज पूरी तरह से इंग्लिश जानते थे। लेकिन नियति में सुषमा के साथ स्वराज का जुड़ना लिखा था तो फिर भला कौन इसे रोक सकता था। दोनों में प्रेम हुआ, हमेशा साथ रहने का मन बना लिया दोनों ने, लेकिन यह वो दौर था जब हरियाणा सहित देश के कई हिस्सों में प्रेम विवाह के बारे में सोचना भी गुनाह था। इनके माता पिता इनकी शादी के लिए राजी भी नहीं थे, उसके बावजूद इन्होंने स्वराज कौशल से 13 जुलाई 1975 में विवाह किया तथा सुषमा शर्मा से सुषमा स्वराज हो गयीं। बता दें कि स्वराज कौशल सुप्रीम कोर्ट के जाने-माने तांत्रिय हैं। उन्हें 34 साल की उम्र में देश का सबसे युवा एडवोकेट जनरल बना दिया गया था। उसके बाद स्वराज कौशल 37 साल की उम्र में मिजोरम के गवर्नर भी बन गए थे, जिसके बाद वह 1990 से 1993 तक उस पद पर रहे। जिसने अपने प्रेम को इतने पापड़ बेलने के बाद पाया हो वह तो चाहेगा कि हर समय उसकी प्रेमिका उसके साथ रहे, वह उससे अपने दिल की बातें करे, जिन सपनों को प्रेम करते हुए आंखों में सजाया था कभी उन्हें एक एक कर के पूरा करे लेकिन इधर सुषमा जी के पास इतना समय ही नहीं होता था। उनका दायित्व जैसे जैसे बढ़ता गया वैसे वैसे प्रेम के लिए समय कम पड़ता गया। यही कारण था कि सुषमा स्वराज की रिटायरमेंट के बाद सबसे ज्यादा खुश होने वाला इंसान कोई विपक्षी पार्टी का बंदा नहीं बल्कि उनके खुद के पतितेव ही थे। वह चाहते थे कि अब सुषमा जी उन्हें समय दें। दरअसल, जब सुषमा स्वराज ने इस बात की धोषणा की थी कि वह लोकसभा चुनाव नहीं लड़ेगी तो उनके पति स्वराज कौशल ने खुशी जताई थी। उन्होंने कई ट्वीट कर सुषमा स्वराज को धन्यवाद दिया था। सुषमा स्वराज के पति ने सुषमा का लोकसभा चुनाव ना लड़ने का फैसले का किया था स्वागत उन्होंने लिखा था, "मैडम (सुषमा स्वराज) अब कोई चुनाव नहीं लड़ने का फैसला करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे वह बहुत याद आ रहा है, जब मिल्खा सिंह ने भी दौड़ना बंद कर दिया था। आपकी मैराथन 1977 से चल रही है। आप जब 25 साल की थीं, तबसे चुनाव लड़ रही हैं। इन 41 सालों में आप 11 बार सीधे चुनाव लड़ चुकी हैं। मैडम, मैं आपके पीछे 46 साल से दौड़ रहा हूं। अब मैं 19 साल का नहीं हूं। मैं भी थकने लगा हूं।" स्वराज कौशल इस बात से खुश थे कि उनकी पत्नी सुषमा स्वराज उनके साथ समय बिताएंगी। मगर नियति को ये मंजूर कहां था। सुषमा जी अपने पति की यह आखिरी इच्छा पूरी नहीं कर सकीं और रिटायरमेंट से पहले ही इस दुनिया को अलविदा कह गयीं।

ना उम्मीदों की उम्मीद बने हैं भागलपुर

रेंज डीआईजी विकास वैभव

हर दिन लगता है फरियादियों का मैला, ॐ द स्पोर्ट होता है निबटारा

बिधुरंजन उपाध्याय



भागलपुर-चंद दिनों की तरह दम तोड़ती उम्मीदों के बीच आखिरी सांस की आस लगाए फरियादी भागलपुर रेंज डीआईजी विकास वैभव के कार्यालय के पास उमड़ी भीड़ के साथ बैठे थे। ठीक 11 बजे अचानक अंदर से इशारा हुआ और बंद दरवाजे सबके लिए खुल गए। हर दिन की तरह 6 घंटे लगभग डीआईजी विकास वैभव आम जनों के दर्द के साझेदार बन गए। गरीबों के जख्म पर 'मरहम' बन समस्याओं को सुन औन द स्पोर्ट उसका निदान किया। जाते-जाते फरियादी कहते गए "साहब बड़ी बढ़िया हतिन"...

खास कर हर मंगलवार को भागलपुर रेंज डीआईजी विकास वैभव का कार्यालय फरियादियों से भरा रहता है। वो दुःखी लोगों की बात बड़े तन्मयत के साथ सुनते हैं। फरियादियों को बड़े आदर के साथ अंदर कुर्सियां पर बैठाते हैं। उसके बाद आवेदन पढ़ते हैं। उनसे तखलीक पूछते हैं। समस्याओं को सुनकर फरियादी के आवेदन पर हरी स्थाही से आदेशनुमा कुछ लिखते हैं। सम्बधित जिला पुलिस अधीक्षक, डीएसपी या थानाध्यक्ष को फोन कर नियमानुसार कार्रवाई करने का आदेश देते हैं। उसके बाद डीआईजी फरियादी को आवेदन देते हुए कहते हैं। आप यहाँ से जाईये। अगर थानेदार आपकी समस्या का समाधान नहीं करेगा तो फिर आकर बताइयेगा। बड़ी आस से डीआईजी कार्यालय में आनेवाले फरियादी



डीआईजी द्वारा ग्रीन स्याही से लिखे गए आवेदन को बड़ी तसल्ली के साथ लेकर बाहर निकल जाता है.बड़ी सुकून के साथ बाहर निकलते ही अपनी बारी के इंतजार में बैठे फरियादीयों में एक नई उम्मीद की किरण जगती है.

यह सिलसिला सिर्फ मंगलवार को ही नहीं बल्कि अपनु हर दिन देखने को मिलता है.फरियादीयों से घिरे रहने की वजह से उनका भोजन करने की समय सरिणी गडबड हो चुकी है.उन्होंने हर वक्त चिंता रहती है की कोई भी फरियादी जो दूर गांव कस्खों से बहुत आस लगाए आते हैं.वैसे लोग बिना समस्याओं का समाधान किये बिना नहीं लौटे.इस मंगलवार 61 फरियादी अपनी समस्या को लेकर डीआईजी कार्यालय आये थे.डीआईजी के पास ज्यादातर मामले घरेलू झगड़े के आते हैं.किसी को पति से परेशानी है तो कोई परिवार की प्रताङ्गन का शिकार है.कोई बुजुर्ग अपने बेटे-बहु की कुटिल व्यवहार से तो कोई जान मारने की धमकी से उनकी शरण में आता है.अपनी समस्या को लेकर डीआईजी के पास आने वाले को भरोसा है की बड़े साहब जरूर न्याय दिलवाएंगे.तभी तो दुखियारी की भीड़ रोजाना लगती है.कभी-कभी ऐसा भी होता है की विभाग के कामों से डीआईजी फील्ड में निकल जाते हैं तो फरियादी घटों तक उनकी आस में कार्यालय के बाहर बैठ जाते हैं.जब कार्यालय के पुलिस कर्मियों द्वारा यह बताया जाता है की साहब आज नहीं मिल पाएंगे फिर भी फरियादी कार्यालय के बाहर आस लगाए बैठे रहते हैं की साहब आएंगे तो जरूर बुलाएंगे.हमें भी कही ना कहीं हमें भी लगता है की पुलिस विभाग के छोटे से बड़े अधिकारी हर फरियादी की समस्याओं को सुनें और उनकी समस्याओं का अॅन द स्पॉट निबटारा करने लग जाये तो यह दुनिया स्वर्ग बन जायेगा.

मई 2017 से चल रहा है फरियादी की भीड़

भागलपुर डीआईजी विकास वैभव के पास अपनी समस्याओं को लेकर आने वाले फरियादीयों की भीड़ मई 2017 से लगातार अब तक चलता आ रहा है.डीआईजी दफ्तर में रखी गयी पंजी हकीकत बया करती है की अपनी तखलीफों को लेकर आने वालों में साल-दर-साल इजाफा होते आया है.अगर इन समस्याओं पर एक नजर डालें तो साल 2017 में 4676 फरियादी,साल 2018 में 6686 फरियादी,साल

2019 में 6 अगस्त तक कुल 4729 आवेदन आये हैं.जबकि साल 2019 बीतने में अभी 5 महीने बाकी है.भागलपुर रेंज डीआईजी विकास वैभव बताते हैं की लोगों की तखलीफों का निदान भी निकला है.इसलिए फरियादीयों की भीड़ लगातार बढ़ती जा रही है.एक बात तो तय है की भागलपुर में डीआईजी का पद 1945 से अंग्रेजों के जमाने से है.डीआईजी विकास वैभव से पहले भागलपुर में कई डीआईजी आये हैं.1974-75 से भागलपुर में डीआईजी के पद पर आए कई आईपीएस अधिकारी में अजीत दत्त के बाद विकास वैभव ही ऐसे अधिकारी हैं जो जनता से घुले-मिले उनके दुःख-दर्द को समझा है.

विकास वैभव के मुंगेर रेंज छोड़ने पर काफी दुखी थे लोग,बोले- बहुत मिस करेंगे आपको

डीआईजी विकास वैभव,बिहार कैडर के काफी लोकप्रिय आईपीएस अफसर.आम-अवाम पर जितनी पकड़,उतनी ही पकड़ सोशल मीडिया पर भी है.एक रिंग पर फोन उठा लेते हैं,तो फेसबुक व व्हाट्सअप पर मिली शिकायत पर उतनी ही मुस्तैदी के साथ एक्शन लेते हैं.डीआईजी बनकर भागलपुर गये तो उन्हें मुंगेर रेंज का भी चार्ज दे दिया गया.कार्यक्षेत्र बढ़ गया.दायित्व बढ़ गया.जिम्मेवारी बढ़ गयी.लेकिन इन्होंने हर चुनौती को स्वीकार किया.पुलिसिंग के साथ ही सोशल मीडिया पर भी वे छाये हुए हैं.वे पुलिस अधिकारी के साथ ही कितने बड़े लेखक हैं,यह उनकी लेखनी से पता चलता है.सोशल मीडिया पर डीआईजी विकास वैभव को 2 लाख से अधिक लोग फॉलो करते हैं.अब डीआईजी विकास वैभव का मुंगेर रेंज छूट गया है.मुंगेर रेंज से हटने के बाद वहां की जनता को काफी दुख हुआ.मुंगेर रेंज के लोग बहुत ही भावुक हुए थे.काफी कम दिनों में लोगों से उनका लगाव हो गया था.लोगों को लगाने लगा था कि कोई अपना अफसर है.दरअसल डीआईजी विकास वैभव ने काम ही ऐसा किया कि मुंगेर रेंज के लोगों के दिलों में वे बस गये.अब वे ट्रेनिंग के लिए मुंगेर से जा रहे हैं तो लोगों को लग रहा है कि अब घर जैसी शिकायत उनका कौन सुनेगा.लोगों का कहना है कि विकास सर फोन और फेसबुक दोनों पर मिली शिकायत पर तुरंत एक्शन लेते थे.सोशल मीडिया पर छानेवाले डीआईजी विकास वैभव का मुंगेर रेंज में कब 8 माह बीत गया,पता ही नहीं चला.शनिवार 7 अप्रैल 2018 को वे अपने फेसबुक पेज पर लिखते हैं- डीआईजी

मुंगेर की भूमिका में आज कार्यालय का अंतिम दिवस रहा.झुंझु मुंगेर क्षेत्र में बीते पलों की मधुर स्मृतियां मन में सदैव अक्षुण्ण बनी रहेंगी.इसके बाद तो उनके फॉलोवर्स उनके चाहनेवाले के लगातार कमेंट्स आने लगे.फॉलोवर ने लिखा था ह्यमुंगेर के डीआईजी के रूप में अपने छोटे से कार्यकाल में आपने अपनी विद्वान,बौद्धिकता,कर्मठता,नैतिकता व सक्रियता के बल पर अपनी एक अलग छाप छोड़ी है.हमें उम्मीद है कि हम सबकी मंगलतामन है कि आपको अपने कार्यकाल व जीवन में हमेशा पद,प्रतिष्ठा,प्रसिद्धि व सुख-शानि प्राप्त हो.अरूप-झुंझु डॉ११८ ढंलाई लिखते हैं- ह्यालोग बहुत मिस करेंगे आपको.ईश्वर से कामना है कि आप यूं ही संवेदन के साथ लोगों की समस्याओं का सार्थक निदान करते रहें.डीआईजी विकास वैभव के लिए ऐसी ही दुआएं लगभग एक हजार से अधिक लोगों ने की हैं.गौरतलब है कि लगभग 8 माह पहले के कार्यकाल में डीआईजी विकास वैभव मुंगेर में फिर से छा गए.उन्होंने फेसबुक पर तब शेरर किया.तब उन्होंने लिखा- 12 साल पहले फिल्ड पुलिसिंग का मेरा पहला दिन मुंगेर में ही जीता था,जब तत्कालीन पुलिस अधीक्षक द्वारा राट्रीय हितों के प्रति सर्वोच्च बलिदान दिया गया था.मुंगेर क्षेत्र का प्रभार मिलने पर पुरानी हृदयसर्पी स्मृतियां जहां मानस पटल पर उभर रही हैं.उस पहले दिन के अनुभव को पुनः साझा कर रहा हूं.बड़े दायित्वों में भी पुलिस की भूमिका पर मेरा विशेष ध्यान रहेगा.क्षेत्र की जनता से परिवर्तन में सहयोग की अपेक्षा है.जय हिन्द! गौरतलब है कि 5 जनवरी 2005 को ही तत्कालीन एसपी केसी सुरेंद्र बाबू शहीद हो गये थे.इससे वे काफी शॉक्ड थे.लेखन ही नहीं,कानून के पालन करने और कराने में भी डीआईजी विकास वैभव अच्छे हैं.यूं कहें कि बिहार की जनता के बीच कानून का दूसरा नाम विकास वैभव है.

लेकिन जितने सख्त कानून के पालन करने में,उतने ही पब्लिक फ्रेंडली भी हैं.पब्लिक फ्रेंडली की वजह से ही वे फेसबुक पर बिहार के सबसे पॉपुलर पुलिस ऑफिसर हैं.उनके फेसबुक पेज पर जहां 15 लाख से अधिक फॉलोवर्स हो गये हैं,वहां लाइक्स भी अब 10 लाख टच करने को हैं.सोशल मीडिया पर भी वे कितने संजीदे हैं,उनके फेसबुक पेज पर उनकी टिप्पणी देखने से पता चलेगा.उनके पोस्ट पर किये गये हर कमेंट का वे रिस्पांस लेते हैं,जिस पर जरूरत होती है,उस पर वे जवाब भी देते हैं.अपराधियों को पकड़ने में भी वे सोशल मीडिया का बखूबी इस्तेमाल करते हैं.बहरहाल पुलिस व लेखक से इतर भागलपुर में डीआईजी विकास वैभव युवाओं के लिए ह्यमेटर और गाइड भी बनते दिखे.पिछले साल 2 जुलाई 2017 को भागलपुर के युवाओं ने उनसे ह्यास्क्सेस टिप्प जाना.आयोजन सस्था ह्याअरंभ की ओर से इसका आयोजन किया गया था.काफी संख्या में स्टूडेंट्स पहुंचे थे.उनके शिक्षाप्रद बातों से सबों ने अपने भीतर नई ऊर्जा महसूस की.यहां भी उन्होंने ह्यालक्ष्य प्राप्ति के सिद्धांत विषय पर अपने व्याख्यान की शुरूआत इन चार पंक्तियों से कीज्ञ हाकाम शुरू करते नहीं भय से नीचे लोग,मध्यम त्यजते बीच में देख विषम संयोग.पर उत्तम वे लोग जो हर दुर्गम पथ ज्ञेल,दृढ़ता से बढ़ते सतत बाधाओं को ठेल.यही वजह है कि उनके मुंगेर रेंज से जाने से आम लोग ही नहीं,स्टूडेंट्स भी काफी दुखी थे.



तुष्टिकरण पर भारी पड़ते रघुवाद से बंगाल में परिवर्तन की कवायद तेज

सचिन पर्वत (कोलकाता) माँ, माटी और मानुस के सिद्धांत पर टिकी ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस की सरकार को बंगाल की जनता ने जिस उम्मीद के साथ बंगाल की कुर्सी सौंपी थी उसपर ममता बनर्जी की सरकार जन आकांक्षाओं पर खरा उत्तरने में लगभग असफल साबित हुई है। करीब तीन दशकों से सत्ता पर काबिज दमनकारी और निरंकुश वाममोर्चा की सरकार को उखाड़ फेंकने वाली बंगाल की जनता खुद को ठगा सा महसूस कर रही है। पंचायत चुनाव से शुरू हुआ सियासी हत्याओं का दौर लोकसभा चुनाव बीतने के कई हफ्तों बाद भी

थमने का नाम नहीं ले रहा है। बंगाल में मानो कानून व्यवस्था सत्तारूढ़ दल का आदेशपाल बनकर रह गया है, पुलिस पार्टी कार्यकर्ताओं की तरह व्यवहार करती दिख रही है। लगभग 9 वर्षों से सीएम की कुर्सी पर सत्तासीन ममता बनर्जी के प्रति आम आदमी का भरोसा लगातार कम होता दिखाई दे रहा है, जिसका जीता जागता उदाहरण लोकसभा चुनाव के नीजे हैं। जिसमें बीजेपी ने 18 सीटें जीतकर ममता बनर्जी को बैकफुट पर ला दिया है। तुष्टिकरण की राजनीति से त्रस्त बंगाल में ममता बनर्जी का विकल्प ही नहीं दिखाई दे रहा था, वामपंथी पार्टियां यहाँ टीम तोड़ चुकी हैं ये वजूद के लिए संघर्ष करती दिखाई दे रही हैं। निराशा में ढूबी बंगाल की जनता को बीजेपी ने संजीवनी देने का कार्य किया विकल्प ढूँढ़ रही बंगाल की जनता का मूड़ का बीजेपी ने बखूबी फायदा उठाते हुए ममता सरकार में व्याप भ्रस्टाचार के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया जिसे आम जनता का अप्रत्याशित समर्थन मिला और लोकसभा चुनाव आते-आते वह व्यापक जनांदोलन का रूप ले लिया।

भाजपा के आंदोलन को सड़क से संसद तथा जनमानस को जोड़ने वाले भाजपा युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष ओम प्रकाश सिंह ह्याओम' तुष्टिकरण रूपी ताबूत में आखिरी कील ठोकते हुए सड़कों पर हो रहे नमाज और इससे परेशान आम आदमी की पीड़ा को महसूस करते हुए मंगलवार को हनुमान मंदिरों के सामने सड़क पर हनुमान चालीसा का पाठ करना शुरू कर दिया जिसे बंगाल में अपार जनसमर्थन मिला। इस अनूठे हनुमान चालीसा आगोजन पर प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा नेता ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि,

जब कानून है सबके लिए समान....

तो अब्दुल को छूट ओम को क्यों व्यवधान?

सड़क चलने के लिए होता है, लेकिन जब सड़कों का दूरुपयोग जनता को परेशान कर के धार्मिक कार्यों के लिए होगा तो प्रतिवाद करना हमारा संवैधानिक अधिकार है। धार्मिक कार्यों के लिए धर्म में एक स्थान चिन्हित है, हिंदुओं के लिए मंदिर, मुसलमानों के लिए मस्जिद, सरदारों के लिए गुरुद्वारा और ईसाइयों के लिए



चर्च है, तो फिर सड़क को घंटों बन्द कर के एक धर्म विशेष को छूट देना क्या उचित है? ममता बनर्जी सरकार आने के बाद से बंगाल में ये नजारा ज्यादा बढ़ रहा है। कानून की नजर में जब सब समान है तो अब्दुल को छूट फिर ओम के लिए क्यों व्यवधान है? अतः हावड़ा

जिला भाजपुमो की ओर से सरकार को संज्ञान दिलाने के लिए हमने मंगलवार को बाली में जीटी रोड बंद कर के हनुमान चालीसा का पाठ किया, हमारा इरादा किसी की भावनाओं को आहत करना नहीं है पर जब तक सड़कों पर शुक्रवार को घंटों बंद होना चलता रहेगा, तब तक हमारा भी प्रत्येक मंगलवार को हनुमान चालीसा पाठ करने का अभियान जारी रहेगा। इस तरह के आंदोलनों से बंगाल में भाजपा हिंदुओं के लिए एक उम्मीद का किरण बनकर उभरी है जिसे आम जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। लोकसभा चुनाव में भाजपा को मिले अपार जनसमर्थन से घबराई ममता बनर्जी ने खुले मंच से अपने कार्यकर्ताओं को आम आदमी से लिया गया ह्याकट मनी' अर्थात ऑफिसियल कार्यों में अनिवार्य रूप से ली गई रिश्वत को लौटाने का फरमान जारी कर दिया जिसके बाद सरकार की और किरकिरी हुई। जन मानस में यह चर्चा का विषय बन गया। इस स्वीकारकि के साथ ही यह माना जाने लगा कि जो भी रिश्वत ली जाती थी उसे सरकारी सहमति थी। विधानसभा चुनाव में लगभग एक वर्ष बाकी है ऐसे में टीएमसी सत्ता बचाने के लिए कुछ भी करने तथा भाजपा सबकुछ झोंकने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई दे रही है। ऐसे में आने वाले दिनों में और स्पष्ट हो जाएगा कि बंगाल में चल रही सत्ता परिवर्तन की बायर सुनामी का रूप लेती है या फिर ममता बनर्जी हैट्रिक लगाने में कामयाब होंगी।



जनतंत्र में जनता ही मालिक प्रोफेसर बीके सिंह

**सिवान जिले के दराँदा विधानसभा
चुनाव में जदयू के टिकट पर ताल
ठोकने की तैयारी में लगे ख्याति
प्राप्त शिक्षक प्रो बी के सिंह से वरिष्ठ
पत्रकार अनूप नारायण सिंह की
खास बातचीत**

**प्रश्न 1: आप शिक्षक हैं, फिर पढ़ाना छोड़कर
राजनीति में क्यों जाना चाहते हैं?**

उत्तर: क्षमा करेंगे महोदय, अगर सच पूछा जाए तो हम शिक्षकों को ही राजनीति में आना चाहिए। हमारे नहीं आने का ही परिणाम है की आज राजनीति का स्तर इतना नीचे गिर गया है और सर्वत्र घोटाले और भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है।

प्रश्न 2: क्या शिक्षक भ्रष्टाचारी नहीं होते?

उत्तर: होते हैं हुजूर, यह मैं कैसे कह दूँ कि नहीं होते हैं। किंतु हाँ, एक शिक्षक की मुहर लग जाने मात्र से ही उनपर अन्य की अपेक्षा थोड़ा लोक लाज का डर अधिक बना रहता है। इसलिए वे कुछ गलत भी करते हैं तो एक सीमा के भीतर।

**प्रश्न 3: जब आप राजद में थे उस समय आपको
पता नहीं था कि लालू जी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं?**

उत्तर: पता था किंतु आरोप सिद्ध नहीं हुआ था और जब तक किसी पर आरोप तय नहीं हो जाता अथवा जब तक कोई सजायापता करार नहीं किया जाता तब तक हम उसे एक भ्रष्टाचारी कैसे कह सकते हैं।

**प्रश्न 4: उसके बाद भी तो उनको 2015 में जदयू
से अधिक 80 सीट आयी?**

उत्तर: इसलिए की वे चन्द्रन के वृक्ष से लिपटे हुए थे जिसकी छवि जनता के बीच एक साफ सुधरे नेता के रूप में थी तथा जो सुशासन बाबू के नाम से प्रसिद्ध था। वह कोई और नहीं माननीय महोदय, आप स्वयं हैं।

**प्रश्न 5: आप जीतकर क्षेत्र के लिए क्या करना
चाहेंगे?**

उत्तर: व्यक्तिगत स्तर पर क्षेत्र की आवश्यकताओं एवं समावनाओं से पार्टी आला कमान को अवगत कराऊँगा तथा पार्टी स्तर पर पार्टी के नीतियों एवं कार्यक्रमों को जमीन पर उतार उसे सफल बनाने का प्रयास करूँगा।

**प्रश्न 6: आपका अपना कोई क्षेत्रोद्धार का
दृष्टिकोण या सुझाव?**

उत्तर: क्षेत्र को जल जमाव से मुक्त कर भूमि को कृषि योग्य बनाना, प्रत्येक गांव में सामूहिक डेरी फार्म की स्थापना एवं अन्य कृषि आधारित उद्योग-धंधों का विकास करना, आदि।

प्रश्न 7: आप स्वयं एक शिक्षक हैं, कोई

शैक्षणिक उपक्रम की स्थापना सम्बन्धी विचार?

उत्तर: बिल्कुल है महोदय। एक कृषि महाविद्यालय की स्थापना का सुझाव होगा मेरा। लगभग पूरा उत्तर बिहार इस कमी का दरा झेल रहा है। कृषि विकास से सम्बंधित कोई भी कॉलेज या यूनिवर्सिटी इस पूरे उत्तर बिहार में नहीं है। इसकी स्थापना मेरी प्राथमिकता होगी।

प्रश्न: राजद छोड़ने का आपका कोई ठोस कारण?

उत्तर: इसके कई कारण हैं और प्रत्येक कारण अपने आप में एक ठोस कारण है। यथा;

1. मूल रूप से एक शिक्षक हूँ इस नाते मेरी मेंटालिटी बहुत हद तक राजद की कार्य संस्कृति से कभी मेल नहीं खाई,

2. राजद की कोई ठोस आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक नीति नहीं है।

3. निम्न स्तर पर समाज को तोड़कर राज करना इनकी कितरत रही है।

4. ग्रामीण स्तर पर ऊंच-नीच, अगड़ी-पिछड़ी जातियों के बीच बैमनस्य की भावना काफी हद तक समाप्त हो गई है खासकर जदयू के शासनकाल में, किन्तु, राजद के कार्यकर्ताओं द्वारा आज भी इस बैमनस्य को दूर करने में सहायता करने के बजाय आग में घी डालने का काम किया जाता है, जो मेरे टेम्परामेंट के बिल्कुल भिन्न है।

5. राँची के जेल में सजा काट रहे राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की लोक सभा की सदस्यता समाप्त कर दी गई है। चुनाव के नए नियमों के अनुसार अब वे 11 वर्षों तक चुनाव नहीं लड़ सकेंगे। इस बावत लोकसभा से जारी अधिसूचना के मुताबिक लालू प्रसाद यादव संसद की सदस्यता गँवानेवाले भारतीय इतिहास में पहला सांसद हो गए हैं। अब ऐसी स्थिति में जिस पार्टी का सर्वे सर्वा ही भ्रष्टाचार के मामले में सजायपत्र हो उसका भविष्य कैसा होगा उसकी कल्पना मात्र से ही बदन सिहर जाता है। इन्हीं सब कारणों से मैंने इस पार्टी को अलविदा करने का मजबूत मन बना लिया है।



मिलिए बिहार के रिजनिंग के चर्चित शिक्षक एमके झा से



पटना से अनूप नारायण सिंह

कहते हैं कि दिल में अगर कुछ कर गुजरने की का जज्जा हो तो तमाम मुश्किलों के बावजूद इंसान अपनी मजिल को प्राप्त कर ही लेता है कठिन से कठिन परिस्थितियों में अपने अदम्य साहस और आत्मबल के सहारे रिजनिंग के जादूगर के रूप में विभावत चर्चित शिक्षक आर.के झा बिहार के श्रेष्ठ शिक्षकों में शामिल हैं जिनसे पढ़ने की तमन्ना लिए हजारों छात्र पटना आते हैं। प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के सर्वश्रेष्ठ संस्थान के रूप में इनका आर के झा रिजनिंग क्लासेज आज बिहार में स्थापित है बिहार की राजधानी पटना प्रारंभिक काल से ही शिक्षा के केंद्र बिंदु रही यहाँ के शिक्षकों का डंका पूरे देश ही नहीं विदेशों तक मे बजता आ रहा है। इसी पटना के बाजार समिति इलाके में स्थापित है आर के झा रिजनिंग क्लासेज .जहां हजारों की तादाद में छात्र विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए रिजनिंग पढ़ने इनके पास आते हैं। बिहार का बेगुसराय जिला अपनी बौद्धिक उर्वरता के कारण आज देश ही नहीं पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान रखता है गंगा के अविरल धारा के समानांतर जिलों में कलम क्रांति का आगाज हुआ करता है। राष्ट्रकवि दिनकर की इस पवित्र भूमि के बछवारा में एक ऐसे ही अनमोल रथ के रूप में पैदा हुए बिहार के संप्रति रिजनिंग के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक आरके झा। आरके झा का बचपन अपने गांव में ही बीता कॉलेज की शिक्षा भागलपुर से हुई जहां इनके पिता प्रोफेसर थे। इनके पिता इन्हें आईएएस आईपीएस की जगह एक योग्य नागरिक बनाना चाहते थे। उनका



कहना था कि जिस क्षेत्र में जाइए श्रेष्ठ बनिये और समाज के उत्थान के लिए काम कीजिए। इस बात को अपने जीवन का मूल मंत्र बनाया आरके झा ने उनका कहना है कि पिता के दिए गए ज्ञान ने उनके जीवन का मार्ग परिवर्तित कर दिया। पिता ही इनके पहले गुरु थे। भागलपुर व पटना से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद वर्ष 1996 में पटना के चर्चित करतार कोचिंग से अपने शिक्षण करियर की शुरूआत की। इनके संस्थान कहना था कि जिस क्षेत्र में जाइए श्रेष्ठ बनिये और समाज के उत्थान के लिए काम कीजिए। इस बात को अपने जीवन का मूल मंत्र बनाया आरके झा ने उनका कहना है कि पिता के दिए गए ज्ञान ने उनके जीवन का मार्ग परिवर्तित कर दिया। पिता ही इनके पहले गुरु थे। भागलपुर व पटना से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद वर्ष 1996 में पटना के चर्चित करतार कोचिंग से अपने शिक्षण करियर की शुरूआत की। इनके संस्थान



मे निधन विकलांग छात्रों को नाममात्र के शुल्क पर शिक्षा दी जाती है। इनके संस्थान में लाइव वीडियो क्लासेज की व्यवस्था भी है। सफलता की कहानी इनकी धर्मपती के बिना अधूरी है। 23 वर्षों के पढ़ाने के अभियान मे इनका योगदान काफी बेहतर है। छात्रों के आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनके लिए आर्थिक आधार पर भी काफी सहायता की व्यवस्था करती हैं। इनके संस्थान में पढ़ने वाले छात्र कहते हैं इनके पढ़ाने की तकनीक काफी अलग है जिस कारण से रिजनिंग जैसे कठिन विषय भी छात्रों को कंठस्थ हो जाते हैं। जिस तकनीक से पढ़ते हैं। उसके कारण विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में रिजनिंग के प्रश्न हल करना काफी आसान हो जाता है। इसी कारण छात्रों की दिली तमन्ना रहती है कि वह झा रिजनिंग मे जरूर पढ़े। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित रिजनिंग के जादूगर आरके झा को उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री हरिश रावत पूर्व सीबीआई डायरेक्टर जोगिंदर सिंह ने श्रेष्ठअवार्ड से भी सम्मानित किया है। बातचीत के क्रम में उन्होंने बताया कि पढ़ने पढ़ाने के अलावा वे कुछ भी नहीं सोचते हैं उन्हें लगता है कि छात्रों के अंदर सब कुछ है बस उसे परोसने की कला सीखनी है। रिजनिंग के बारे में छात्रों के दिमाग में बचपन से ही बैठा दिया जाता है कि कठिन है लेकिन तकनीक के माध्यम से पढ़ते हैं जिससे छात्रों को लगता है कि अन्य विषय से रिजनिंग के सवालों को हल करना काफी आसान है। अरिहंत और रायल पब्लिकेशन से भी इनके रिजनिंग के कोई किताब प्रकाशित हो चुके हैं जिससे देशभर के बच्चे पढ़ते हैं।

भारत की अग्रणी दवा कं पनी अल्केम ग्रुप के चेयरमैन व आइकॉन ऑफ बिहार

जहानाबाद निवासी संप्रदा सिंह का मुंबई के लीलावती हॉस्पिटल में निधन

जानिए कौन थे संप्रदा बाबू

संप्रदा सिंह का जन्म बिहार के जहानाबाद जिले के मोदनगंग प्रखंड के ओकरी गांव में एक किसान परिवार में हुआ था। वहाँ के लोग बताते हैं कि आखिरी बार वह अपने गांव 2004 में आए थे। लेकिन अब ओकरी स्थित घर में कोई नहीं रहता, वहाँ ताला लटका हुआ है। लोग बताते हैं कि संप्रदा सिंह बिहार आते भी हैं तो वे अपने पटना स्थित घर में ही ठहरते हैं। सालों से इस घर में कोई नहीं आया।

लेकिन एक ऐसा भी समय था जब 3.3 बिलियन डॉलर (21 हजार 486 करोड़ रुपए) के मालिक संप्रदा सिंह पढ़ लिखकर खेती करने अपने गांव आए तो वहाँ के लोगों ने उनका खूब मजाक उड़ाया जिसके बाद वे मुंबई चले गए और फिर वापस नहीं लौट।

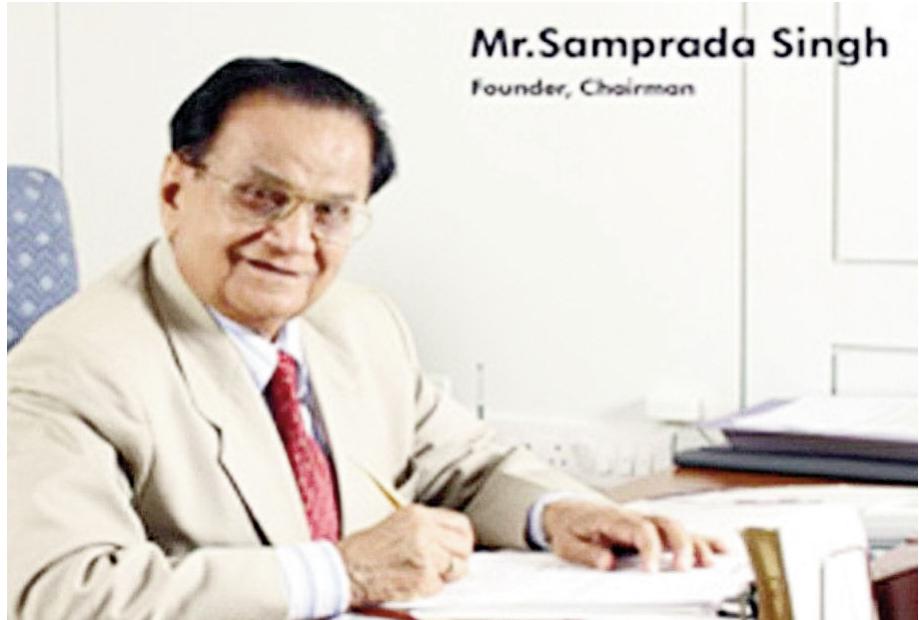
अकाल ने फेरा मेहनत पर पानी

संप्रदा सिंह के पड़ोसी, देवेंद्र शर्मा और नवल शर्मा बताते हैं कि वे शुरू से ही पढ़ने में कापी तेज थे। घोसी स्थित हाई स्कूल में पढ़ने के बाद उन्होंने इंटर किया और गया जाकर बीकॉम की डिग्री ली।

पढ़ाई पूरी करने के बाद वे गांव वापस लौटे, जहाँ उन्होंने आधुनिक तरीके से खेती करने की कोशिश की। संप्रदा सिंह के पिता के पास करीब 25 बीघा जमीन थी, इसी जमीन में वे धान और गेंहूं की जगह सब्जी की खेती करना चाहते थे। और जब उन्होंने खेती शुरू की उन्हें सिंचाई को लेकर काफी परेशानियां आईं। बारिश कम होने के चलते गांव से होकर बहने वाली फल्लू नदी में पानी कम था। संप्रदा ने डीजल से चलने वाला वाटर पंप लोन पर लिया और उससे सब्जी की सिंचाई करने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हुए। और तभी किस्मत की भी मार गई और उसी साल गांव में अकाल पड़ गया। इंसानों और जानवरों के पीने के लिए पानी नहीं मिलता था तो खेती कहाँ से होती।

छोड़े कई काम

खेती में जब कुछ नहीं हुआ तो उन्होंने एक प्राइवेट हाई स्कूल में टीचर की नौकरी शुरू की। लेकिन वहाँ उन्हें बेहद कम सैलरी मिलती थी, जिससे खर्च चलाना



Mr. Samprada Singh

Founder, Chairman

मुश्किल था। कुछ समय तक नौकरी करने के बाद उन्होंने इसे भी छोड़ दिया और पटना जाकर बिजनेस करने का फैसला किया। जहाँ उन्होंने बीएस कॉलेज के पास सड़क किनारे छाते की दुकान शुरू की। लेकिन इस काम में भी उन्हें मुनाफा नजर नहीं आ हा था जिसके बाद संप्रदा सिंह ने इसे भी छोड़ दिया।

पार्टनर से विवाद के बाद खोली अल्केम कंपनी फिर उन्होंने अपने एक संबंधी की दवा दुकान पर काम करना शुरू किया। अपनी व्यवहार कुशलता के चलते पीएमसीएच के डॉक्टरों से उनका अच्छा संपर्क हो गया था। जिसकी वजह से उन्होंने लक्ष्मी पुस्तकालय के मालिक लक्ष्मी शर्मा के साथ खुदाबक्श लाइब्रेरी के पास दवा की दुकान शुरू की। वह हॉस्पिटल में दवा की सप्लाई भी करने लगे। दुकान अच्छी चली, लेकिन कुछ समय बाद दोनों पार्टनर के बीच पैसे को लेकर विवाद हो गया। और दोनों अगल हो गए। इसके बाद संप्रदा

सिंह ने अपने दोस्तों से पूँजी लेकर खुद की दुकान अल्केम फर्म खोली। वह दवा कंपनियों की एजेंसी लेकर पूँजी बिहार में दवा की सप्लाई करने लगे। संप्रदा सिंह की दवा एजेंसी अच्छी चल रही थी, लेकिन वह इतने से संतुष्ट होने वाले नहीं थे। वह अपने सपनों को उड़ान देने के लिए एक लाख रुपए की पूँजी के साथ वे मुंबई चले गए और दवा कंपनी शुरू करनी चाही। लेकिन लोगों ने एक बार फिर उनका मजाक बनाया। लोगों ने दूसरों की बातों को नजरअंजाद कर उन्होंने अल्केम नाम की कंपनी बनाई और दूसरे की दवा फैक्ट्री में अपनी दवा बनवाई। डॉक्टरों से संबंध अच्छे रहने के कारण उनकी दवा बिहार में तेजी से बिकने लगी। दवा की मांग इतनी बढ़ गई कि जल्द ही संप्रदा सिंह ने अपनी दवा फैक्ट्री शुरू कर दी। जिसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

अकेडमी ऑफ फिजिक्स के संस्थापक राशिद इकबाल खान हुए सम्मानित

दरभंगा: प्रतिष्ठित संस्था अकेडमी ऑफ फिजिक्स के संस्थापक और संचालक इंजीनियर राशिद इकबाल खान को दरभंगा की प्रसिद्ध संस्था काजी अब्दुल अजीज फाउंडेशन के द्वारा विगत दिनों दरभंगा में आयोजित एक भव्य समारोह में दरभंगा एकेडमिया अवार्ड 2019 के CONSISTENT PERFORMER AWARD से नवाजा गया। इंजीनियर राशिद इकबाल खान को ये अवार्ड बिहार सरकार के पूर्व मंत्री और वरिष्ठ राजद नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी के हाथों दिया गया। इस मैके पर इंजीनियर राशिद इकबाल खान ने कने सोशल मीडिया एकाउंट पर खुशी का इजहार करते हुए काजी अब्दुल अजीज फाउंडेशन का शुक्रिया अदा किया। साथ ही उन्होंने इस कामयाली के लिए अपने तमाम छात्रों और अभिभावकों का भी शुक्रिया अदा किया। विदेशी हो कि सीतामढ़ी के नानपुर प्रखंड के गोरी ग्राम निवासी इंजीनियर राशिद इकबाल खान विगत कई सालों से दरभंगा में अकेडमी ऑफ फिजिक्स नामक संस्था के माध्यम से विभिन्न अकेडमिक और प्रतियोगी परीक्षाओं के विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य कर रहे हैं और हर साल उनके संस्था से दर्जनों छात्र उत्कृष्ट प्रदर्शन करके अपने माता पिता, गांव और इलाके का नाम रौशन कर रहे हैं।

बेगूसराय के एक ऐसे युवा उद्यमी ओम प्रकाश भारद्वाज पुट्टु की कहानी

बेगूसराय के एक ऐसे युवा उद्यमी की कहानी जिसने महज मैट्रिक तक की पढ़ाई की है पर जिसकी सोच ने हजारों लोगों की जिंदगी बदल दी है अकेला यह व्यक्ति एक संस्था से कम नहीं है. नाम है ओम प्रकाश भारद्वाज पुट्टु. ग्रामीण स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए विगत दो दशकों से सक्रिय है. बेगूसराय में एक ऐसा अनूठा अभियान चलाते हैं जिसकी चर्चा बिहार ही नहीं देश के अन्य प्रांतों में भी अब सोने लगी है इस अभियान का नाम है साइकिल यात्रा एक विचार. रविवार के दिन साइकिल से इनका दल शहर के बिहारी एक इलाके में जाकर सफाई अभियान चलाता है और वृक्षारोपण भी करता है विवाह जन्मदिन के अवसर पर गिफ्ट में यह समूह लोगों को वृक्ष प्रदान करता है यह अभियान विगत 5 वर्षों से अनवरत जारी है शहर के आवारा पशुओं के लिए पेयजल की व्यवस्था लाचार बेसहारा लोगों के लिए आश्रय और भोजन व्यवस्था कराना भी इनके अभियान में शुभार है। विगत 5 वर्षों में ओम प्रकाश जी साइकिल यात्रा एक अभियान के माध्यम से हजारों पेड़ लगवा चुके हैं शहर के सैकड़ों मुहल्लों की सफाई हो चुकी है उनके इस अभियान में शुरूआत हुई थी तो इक्का-दुक्का लोग ही साइकिल लेकर पहुंचते थे। मोबाइल आज इसकी तादाद हजारों में पहुंच गई है अभियान पर रविवार के दिन शहर के हर किसी मामले में



पहुंचता है इनका दल और लोगों को कूरा कचरा निर्धारित स्थान पर फेकने पेड़ पौधे लगाने यत्र तत्र नहीं थूकने और अपने गली मोहल्ले को साफ रखने की नसीहत देता है। ओम प्रकाश जी के द्वारा चलाए गए अभियान पर बिहार सरकार ने संज्ञान लेते हुए सरकारी

विद्यालयों में लड़कियों के लिए सेनेटरी नैपकिन बांटने की योजना प्रारंभ की इसके लिए वर्षों तक संघर्षरत थे कई बार सरकार के आला अधिकारियों तक अपनी आवाज पहुंचाई थी उसके बाद इनका दूसरा अभियान था कि सड़कों के किनारे छायादार नहीं फलदार वृक्ष लगाया जाए इससे लोगों को छाया तो मिलेगा ही फलदार होने के कारण उसकी देखभाल भी करेंगे। समाज के लिए प्रेरक का कार्य कर रहे ओम प्रकाश जी ने बेगूसराय नगरपालिका चौक पर आवारा पशुओं के लिए चार और पीने के लिए पानी की व्यवस्था कर रखी है। प्रतिभा से अपना जन्मदिन भी अनूठे ढंग से मनाते हैं हजारों गरीब बच्चों के बीच भोजन की व्यवस्था होती है उन्हें बैग बांटा जाता है इनके प्रेरणा से बेगूसराय में लोग बूके के बदले बुक और शादी विवाह में गुलदस्ते के बदले में फलदार वृक्ष लोगों को उपहार स्वरूप देने लगे हैं। इनका पूरा परिवार बेगूसराय के लिए आदर्श है इनके पिताजी जवाहर भारद्वाज बेगूसराय नगर परिषद के सदस्य रह चुके हैं इनके एक भाई शिव प्रकाश भारद्वाज बेगूसराय में एक अनूठे विद्यालय का संचालन करते हैं इसका नाम है भारद्वाज गुरुकुल उनके छोटे भाई दिनकर भारद्वाज फिल्म निर्माता है चौहर जैसी चर्चित फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं दिनकर फिल्म सिटी की स्थापना भी उनके परिवार के द्वारा ही की गई है।

बछवाड़ा में खिलेगा कमल तभी पूरा होगा संकल्प: अमिय कश्यप

मंसूरचक, "पार्टी नहीं परिवार है संस्था नहीं संस्कार" के नारों के साथ प्रबंद उप प्रमुख डॉ. अंजना कश्यप के अहियापुर स्थित आवास पर भाजपा मंसूरचक मंडल की बैठक की गई। अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष अखिलेश्वर प्रसाद एवं संचालन भाजपा के वरिष्ठ नेता सह गोविंदपुर-2 के मुखिया सुधीर कुमार राय मुना ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के जिला उपाध्यक्ष प्रेमशंकर राय ने कहा कि राज्य और देश में भाजपा ने अपने विचारों व सिद्धांतों से लोगों के दिल में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है और अब यदि लोगों का यही प्रेम रहा तो बछवाड़ा में भी कमल खिलने से कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि भाजपा ही बछवाड़ा का सबांगीण विकास करेगी। सुधीर कुमार राय मुना ने अधिकाधिक सदस्यता बढ़ाने की बात कार्यकातारों से की। सिने कलाकार सह भाजपा नेता अमिय कश्यप ने कार्यकातारों से चट्टानी एकता बनाये रखने की अपील की। कहा कि जबतक भाजपा बछवाड़ा में कमल नहीं खिल जाता हमलोगों का संकल्प पूरा नहीं होगा। उक्त

अवसर पर मंसूरचक पंचायत के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता शम्भू दास, मोमिनाबाद के मदन महतों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। आपैके पर बछवाड़ा दक्षिणी मंडल के अध्यक्ष बासुकी शर्मा, वरिष्ठ नेता परशुराम चौधरी, सदस्यता प्रभारी विधिन कुमार, कृष्ण कुमार चौधरी, विनय कुमार पोद्दार, पवन कुमार

पवनदेव, महामंत्री हैण्डी सिन्हा, जिला पार्षद प्रतिनिधि सह महामंत्री रंजीत चौधरी, डॉ बम्बम रमन ज्ञा, संजय चौधरी, पंसस रमाकौत महतों, कृष्ण कुमार वर्मा, शम्भू सिंह, शशिधर ज्ञा, शिवजी महतों, अविनाश कुमार, रमफल साह, रविन्द्र चौधरी "गोरख", महेश प्रसाद महतों, उदय कुमार राय आदि सहित दर्जनों लोग थे।



पत्रकारों के हमलावरों की खैर नहीं : डीजीपी



बिहार प्रेस मेन्स यूनियन के अध्यक्ष एवं वरीय पत्रकार एस एन श्याम के नेतृत्व में मिलने गये पत्रकारों के एक शिष्टमंडल से बिहार पुलिस के डी जी पी गुप्तेश्वर पांडे ने कहा है कि पत्रकारों के हमलावरों को किसी भी किमत पर बर्खा नहीं जायेगा।

पत्रकारों पर किसी भी प्रकार का हमला उहे बर्दास्त नहीं होगा । बी पी एम यू ने मधुबनी के पत्रकार प्रदीप मंडल को गोली मारे जाने को लेकर डी जी पी से मुलाकत कर पत्रकारों के सुरक्षा को लेकर ज्ञापन दिया था । श्री पांडे ने यूनियन का ज्ञापन पढ़ने के बाद कहा की मंडल के हमलावरों को गिरफ्तार कर लिया गया है । उसे कड़ी से कड़ी सजा दिलवाई जायेगी । यूनियन के इस शिष्टमंडल में यूनियन के सचिव अनमोल कुमार, प्रेस फोटोग्राफर संजय कुमार एवं पत्रकार जय कुमार ज्ञा इत्यादि शामिल थे ।

विधानसभा में उठा समस्तीपुर के कल्याण छात्रावास में बेडों की कमी का मामला

समस्तीपुर । संवाददाता

समस्तीपुर के स्थानीय विधायक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने बिहार विधानसभा में तारांकित प्रश्न संख्या 2644 के द्वारा समस्तीपुर जिला के अंतर्गत राजकीय अम्बेडकर कल्याण छात्रावासों में बेडों की कमी का मामला उठाया । साथ ही सरकार से मांग किया कि समस्तीपुर जिला अंतर्गत राजकीय अम्बेडकर कल्याण छात्रावास पटोरी, दलसिंहसराय तथा रोसरा में बेडों की संख्या बढ़ाया जाय । उन्होंने कहा की अध्यनरत छात्रों की संख्या अधिक है जबकि बेडों की संख्या बेहद कम है । फलतः छात्रों को रहने तथा पढ़ने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पर रहा है । अतः इन कल्याण छात्रावासों में बेडों की संख्या को बढ़ाने की जरूरत है । सरकार की ओर से जवाब देते हुए

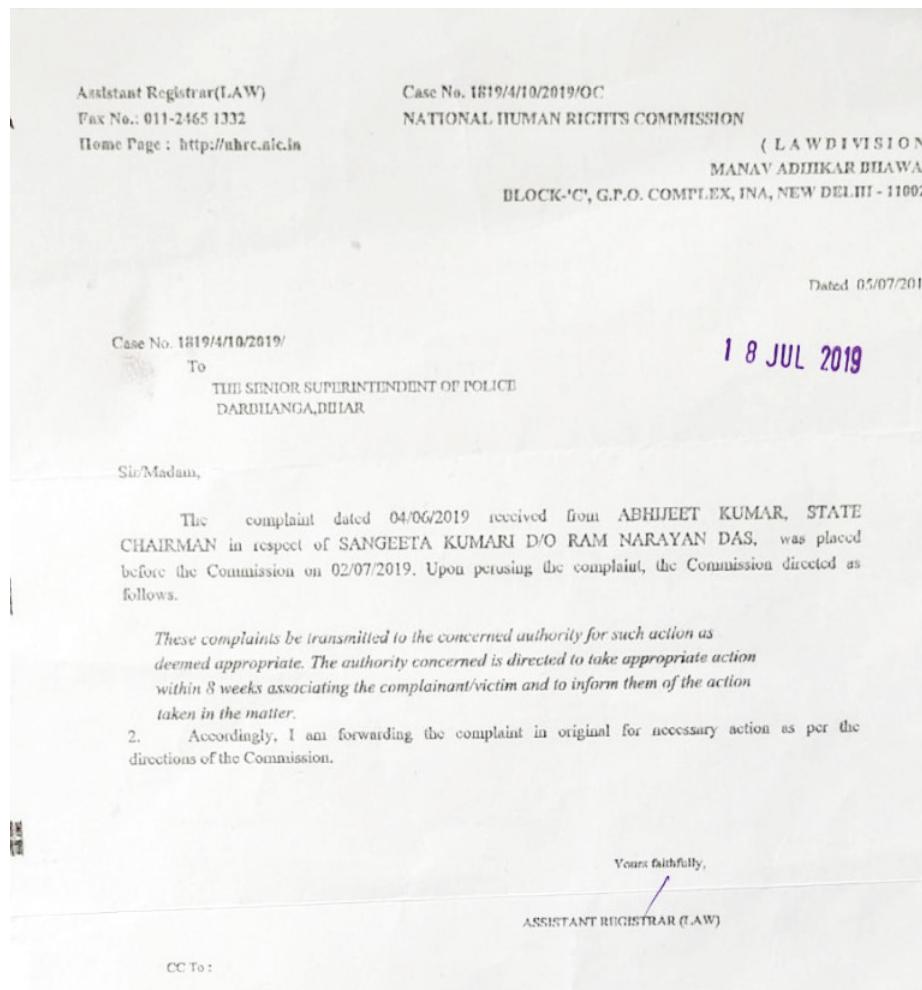


अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण मंत्री डॉ रमेश ऋषेश्वर ने सदन को बतलाया की राजकीय अम्बेडकर कल्याण छात्रावास पटोरी में स्वीकृत बेडों की संख्या 50 तथा दलसिंहसराय एवं रोसरा में 25 है । राजकीय अम्बेडकर कल्याण छात्रावास दलसिंहसराय व समस्तीपुर में 100 बेड वाले नए छात्रावास निर्माण के लिए तकनीकी अनुमोदित प्राक्कलन उपलब्ध कराने का अनुरोध भवन निर्माण विभाग बिहार, पटना से किया गया है । वही दूसरी ओर उन्होंने याचिका के माध्यम से समस्तीपुर में बद पड़े चीजों मिल तथा जूट मिल को चालू करने एवं इनके कर्मचारियों के बकाया वेतन भुगतान करने की मांग की । उन्होंने याचिका समिति के माध्यम से सरकार से अनुरोध किया कि समस्तीपुर में कृषि आधारित उद्योग लगाने हेतु आवश्यक व अपेक्षित पहल किया जाय ।

बिशनपुर थाना अध्यक्ष पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग नई दिल्ली ने दिए वरीय पुलिस अधीक्षक दरभंगा को कार्रवाई के निर्देश

जाहिद अनवर राजु) / दरभंगा

दरभंगा--मानवाधिकार इमरजेंसी सोशल हेल्पलाइन के प्रदेश अध्यक्ष अभिजित कुमार ने बिशनपुर थाना अंतर्गत बंगला कमलपुर मैं घटित अपहरण एवं बाल विवाह को लेकर थाना अध्यक्ष बिशनपुर को दो बार पत्र लिखकर कार्रवाई की मांग की गई थी लेकिन थाना अध्यक्ष द्वारा कार्रवाई नहीं की गई। जिसके बाद राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को थाना अध्यक्ष बिशनपुर पर कार्रवाई हेतु सूचित किया गया। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा केस रजिस्टर्ड कर वरीय पुलिस अधीक्षक दरभंगा को 8 सप्ताह के अंदर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया है। बताते चले कि दिनांक 1/04/19 को बांग्ला कमलपुर गांव के एक लड़के द्वारा उसी गाँव की लड़की को जो कि नाबालिंग थी लेकर फरार हो गया था। पंचायत के प्रतिनिधियों के दबाव के बाद 5/04/19 को पंचायत प्रतिनिधि द्वारा दोनों को माता पिता के हवाले कर बंधपत्र बना दिया गया था। वहीं दूसरी ओर लड़के ने अपने फेसबुक पर लड़की के साथ विवाह का फोटो अपलोड कर दिया जिसकी सूचना मिलने के बाद अध्यक्ष अभिजीत कुमार किशनपुर थाना के अवर निरीक्षक हरेंद्र सिंह के साथ घटनास्थल पर जाकर सारी जानकारी प्राप्त की। पंचायत प्रतिनिधियों के दबाव के कारण लड़की पक्ष ने कोई मामला दर्ज नहीं कराया। प्रदेश अध्यक्ष अभिजीत कुमार ने सारे बात का जिक्र करते हुए थानाध्यक्ष बिशनपुर को पत्र भेज कार्रवाई की मांग की गई थी बावजूद इसके थानाध्यक्ष ने मामले को गंभीरता पूर्वक नहीं लिया।



स्वयंसेवी संस्था REWHO और रहबर ने अलग अलग जगह लगाया स्वास्थ्य कैम्प, बड़ी संख्या में लोग हुए लाभान्वित

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

दरभंगा--पिछले कई वर्षों से सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेने वाली स्वयंसेवी संस्था रुरल एजुकेशनल वेलफेयर एंड हेल्थ आगेनाइजेशन ने एक बार पुनः स्वास्थ्य शिविर कैम्प लगाकर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में मुफ्त चिकित्सीय सेवा सहित मुफ्त दवा का वितरण किया। संस्था के सचिव डॉ कमाल अहमद ने बताया कि ये कैम्प हायाघाट के नयाटोला गाँव में लगाया गया जिसमें मुफ्त दवा के साथ फूड पैकेट और हॉलिक्स का पैकेट भी वितरण किया गया जिसमें लगभग 230 लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराया। मौजूद लोग मो.असलम, रीता देवी, प्रमोद कुमार,



आयशा प्रवीन और मो.मुश्ताक ने संस्था के फलने और फूलने की खूब दुआ दी। उधर दूसरी ओर हायाघाट के एक और स्वयंसेवी संस्था रहबर के द्वारा भी बाढ़ राहत के बीच स्वास्थ्य शिविर का आयोजन हायाघाट के सरायहमीद में किया। इस कैम्प में डीएमसीएच के सीनियर डॉक्टर मनीष कुमार एवं मेडिकल आलोक कुमार ने मिलकर 192 मरीजों कि जाँच कर उनका उपचार किया। मौजूद सभी को मुफ्त में दवा वितरण किया गया। शिविर का नेतृत्व डॉक्टर खुदादाद अब्दुल अली ने किया। शिविर में एनजीओ के सभी सदस्य मोहम्मद आबिद, मोहम्मद गुफान, श्री रतिकान्त झा, श्री शंकर महतो और फर्मेसिस्ट फैयाज हसन मौजूद थे।

फल्वाद गजाली एक बार इंटरनेशनल मंच पर फिर हुए सम्मानित, शुभचिंतको ने दी बधाई

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

दरभंगा/मोतिहारी—देश के पूर्व राष्ट्रपति एवं मिसाइल मैन डॉ एपीजे अब्दुल कलाम की चौथी पुण्यतिथि विगत 27 जुलाई 2019 को मनाई गई। इस अवसर पर महात्मा गांधी के कर्मस्थली मोतिहारी में कलाम यूथ अन्तर्राष्ट्रीय लीडरशिप कॉन्फ्रेंस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन इंटरनेशनल यूथ कमिटी और खाली फाउंडेशन के द्वारा पहली बार मोतिहारी में और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चौथी बार किया गया। इस कॉन्फ्रेंस में सकारात्मक बदलाव लाने वाले देश के विभिन्न राज्यों तथा विदेशों से आए नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, चीन, भूटान, ईरान, अफगानिस्तान, जर्मनी, इलैंड तथा अमेरिका के जाने माने नेतृत्वकर्ता, प्रखर वक्ता, शिक्षाविद, सामाजिक कार्यकर्ता, मोटिवेशनल गुरु एवं पर्यावरणविद जैसे हस्तियों ने शिरकत की तथा विभिन्न क्षेत्रों में अपना अहम योगदान देने वाले 100 प्रतिनिधियों को इस कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इसी क्रम में दरभंगा जिले के सैयद अब्दुल रहीम तथा अंजुम प्रवीण के पुत्र फल्वाद गजाली को भी कलाम यूथ लीडरशिप अवार्ड इंटरनेशनल यूथ कमिटी के चेयरमैन डॉ के. के सिंह एवं खुआब फाउंडेशन के चेयरमैन मुना कुमार तथा इंटरनेशनल यूथ कमेटी की एडवाइजर डॉ अर्चना बद्धुचार्य के हाथों से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान अब तक के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतरीन योगदान देने और उनकी क्षमताओं को देखते हुए इस अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर सम्मानित किया गया। साथ ही इस अवसर पर 'क्रिएटिंग यूथ लीडरशिप फॉर दुमारे' विषय पर पावर प्रीजेटेशन के माध्यम से व्याख्यान भी दिया तथा अपने कार्यों के बारे में विस्तार से रू ब रू भी कराया। विदित हो इससे पूर्व भी अब तक के जीवन काल में विभिन्न क्षेत्रों में अतुल्य कार्य के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में यह स्वयं डॉ एपीजे



अब्दुल कलाम एवं पद्म श्री डॉ मानस बिहारी वर्मा की संस्था विकसित भारत फाउंडेशन बिहार ब्रांच तथा अगस्त्या इंटरनेशनल फाउंडेशन बंगलुरु में बतौर सीनियर साइंस एंड टक्नोलॉजी इंस्ट्रक्टर के तौर पर विगत 5 वर्षों से ग्रामीण क्षेत्रों तक के सरकारी विद्यालयों में मोबाइल साइंस लैब द्वारा 6 से 12 तक के बच्चों को प्रयोग एवं लैपटॉप से सिखाने पढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। इससे बच्चों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी उत्सुकता एवं जागरूकता बढ़ी है साथ ही कौशल का भी भरपूर विस्तार हुआ है। साथ ही साथ पर्यावरण की समस्याओं को देखते हुए, इन्होंने अबतक कई पेड़ भी लगाया है साथ ही साथ तालाब, कुंआ एवं पानी संरक्षण के क्षेत्र में भी काफी योगदान दे रहे हैं। इनका हाल में ही एक रिसर्च पेपर अपने विषय वनस्पति विज्ञान से संबंधित जिसका टॉपिक 'रीसेंट एडवांस ऑफ रिसर्च इन प्लांट पैथोजेन एयरपोएनिक टैक्निक' छा है जो कि ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में मार्च 2019 में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में पेपर प्रिसेंटेशन भी किया गया। यह हमेशा समाज के प्रति काफी सजग रहते हैं और अपना भरपूर कदम बढ़ाते हैं।

चाहे प्राकृतिक आपदा हो या समाज के लोगों को जैसी भी जरूरत पड़ती हो यह हमेशा तप्तर रहते हैं। इस मौके पर डॉ कलाम का चित्र बालू पर जानेमाने राष्ट्रीय स्तर के सैंड अर्टिस्ट मधुरेंद्र कुमार ने बनाया तथा अतिथियों ने पृष्ठ से श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री गजाली को बेस्ट डेलीगेट्स की उपाधि से भी सम्मानित किया गया। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपनी माता पिता के इलावा भाई सैयद फहीम गजाली, प्रोजेक्ट ऑफिसर आई आई. टी रुड्की, उत्तराखण्ड, में कार्यरत फहद गजाली बहन रुखसार नाहीद, सज्जाद इकबाल, नाजरा निगर, न्यूज़हत परवीन, मुंतहा महीन, मनशा मनाल, अयोजा फलक, हानिया मेहविश, डॉ मदीहा एवं अनम तथा परिवार अन्य सदस्यों में मामा सीनियर ऑफिसर इकबाल उमर, वरिष्ठ पत्रकार चौथी दुनिया आसिफ उमर, एपीजे अब्दुल कलाम वूमेंस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के निर्देशक डॉ एम.डी नेहाल एवं दोस्तों में निदा अफरीन और राजीव कुमार को देते हैं जिनका भरपूर योगदान रहा और हर पल इनके साथ रहे। इन सब के अलावा पद्म श्री डॉ मानस बिहारी वर्मा ने भी इस सफलता पर शुभकामना एवं बधाई दी।

विवो हेल्थकेयर पारामीडिकल इंस्टिट्यूट दरभंगा में शिक्षाविदों का आगमन जारी

बट्ट्यों से नामांकन कराने की अपील

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

दरभंगा—विवो हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट दरभंगा अपने उच्च शिक्षा, गुणवत्ता एवं आर्थिक कमज़ोर वर्ग के छात्र-छात्राओं को सहायता प्रदान करने के कारण बहुत कम समय में प्रगति की ओर बढ़ रहा है। जिसका सारा श्रेय डॉ अहमद नसीम आरजू एवं उनकी पूरी टीम को जाता है। यह बातें इंजीनियर जावेद कौसर नशरत जह्वा सऊदी अरब के

मशहूर उद्योगपति मेजबान गुप्त रेस्टरां के मालिक में अपने भारत प्रवास के दौरान विवो हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट में बताया। उन्होंने आगे कहा कि जहां तक संभव हो सकेगा मैं गरीब एवं मेहनती बच्चों को शिक्षा दिलवाने में मदद करूंगा। इस अवसर पर विविध विद्यालयों एवं आईटी शिक्षक विकसित भारत फाउंडेशन बिहार फल्वाद गजाली ने विवो को देखकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा के दृष्टिकोण से मिथिलांचल जैसे पिछड़े क्षेत्र में विवो की

अपनी पहचान देश-विदेश में होती जा रही है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यहां से पढ़े हुए छात्र-छात्राएं चिकित्सा के क्षेत्र में चिकित्सकों को पूरी सहायता प्रदान करेंगे एवं विवो के साथ साथ समाज का नाम रोशन करेंगे। इस अवसर पर मैक्सीमाइंड हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली के बोडे ऑफ डायरेक्टर्स एवं विवो हेल्थ केयर इंस्टीट्यूट के फ्रेंचाइज पार्टनर शाहिद अतहर एवं सेंटर हेड अहमद रशीद ने आगंतुकों का हार्दिक अभिनंदन किया।

डा.तारा श्वेता आर्या ने चिकित्सा और सामाजिक क्षेत्र के साथ ही अब मॉडलिंग और फैशन की दुनिया में भी

विशिष्ट पहचान बना ली है। उन्होंने हाल ही में दिल्ली में आयोजित रूबरू मिसेज इंडिया प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और विजेता का ताज अपने नाम कर लिया।

बिहार के रोहतास जिले के डेहरी ओन सोन में जन्मीं तारा श्वेता के पिता श्री तारक नाथ शर्मा भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएस) अधिकारी थे जबकि माँ श्रीमती कमलेश शर्मा प्रोफेसर थी। उनके दो बड़े भाई हैं। माता-पिता घर की लाडली छोटी बेटी को डॉक्टर बनाने का ख्वाब देखा करते हालांकि श्वेता की रूचि बचपन के दिनों से मॉडलिंग और फैशन की ओर थी और वह इस क्षेत्र में अपना और देश का नाम रौशन करना चाहती थी।

तारा श्वेता आर्या ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा डेहरी ओन सोन, चाइबासा और जमशेदपुर से पूरी की। डेहरी ओन सोन से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह अपने परिवार बालों के साथ राजधानी पटना आ गयी जहां उन्होंने जेडी बुमेन्स कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। माता-पिता की इच्छा के अनुरूप तारा श्वेता ने किशनगंज मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की। इसी दौरान उनकी शादी किशनगंज के मशहूर चिकित्सक डा. वेद आर्या से हो गयी। शादी के बाद वह कुछ वर्षों तक पारिवारिक जिम्मेवारियों में बंध गयी।

तारा

श्वेता की ख्वाहिश थी कि वह बतौर चिकित्सक समाज की सेवा करे। इसी को देखते हुये उन्होंने पहले पीजी और फिर बाद में एमएस का कोर्स किया और क्लिनिक खोल चिकित्सक का काम करने लगी।

जानी मानी गायनेकोलिजिस्ट डा. तारा श्वेता आर्या राजनीति के क्षेत्र में जुड़कर समाजेवा करना चाहती थी। इसी को देखते हुये वह पहले पूर्व सांसद पप्पू यादव की पार्टी जन अधिकार पार्टी (जाप) और बाद में असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिसे इत्तेहदुल मुसलिमी (एआईएमआईएम) से जुड़ गयी और किशनगंज जिला महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष बनायी गयी। उनका कहना है कि समाज के प्रत्येक नागरिक को अपने सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों के साथ-साथ समाजसेवा के लिए भी समय अवश्य निकालन चाहिए। समाजसेवा पुनीत कार्य है, इसमें सभी वर्ग के लोगों को बढ़चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। अपकी छोटी सी मदद गरीबों के लिए लाभदायक साबित हो सकती है। यह सेवा भाव उन्होंने महान समाजसेविका और भारत रत्न मटर टेरेसा से सीखी है। डा.तारा श्वेता आर्या का मानना है कि महिलाओं में उर्जा का भंडारहोता है उनके अंदर इच्छाशक्ति होती है। महिलाओं को राजनीति में भी भाग्य आजमाना चाहिए। उनके अंदर उतनी क्षमता होती है कि वह दूषित राजनीति को शुद्ध कर सके। महिलाओं को मिलकर कार्य करना होगा। देश की तरक्की के लिए महिलाओं का सकारात्मक ढंग से कार्य करना जरूरी है। महिला



चाहे तो देश की तकदीर बदल सकता है। महिलाओं को भ्रष्टाचार, नशाखोरी एवं सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई लड़ाई चाहिए। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की जरूरत है। महिलाओं को भी आगे बढ़ कर राजनीति में आते हुए देश एवं समाज के विकास में कार्य करना चाहिए। वह समाजसेवा में बढ़चढ़कर हिस्सा लेती है। उन्होंने हाल ही में बाढ़ पीड़ितों के बीच जाकर राहत सामग्री बांटी थी। पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन को रोल मॉडल मानने वाली डा. तारा श्वेता आर्या फैशन की दुनिया में भी पहचान बनाना चाहती थी। इसी दौरान सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक के जरिये उन्हें पता चला कि राजधानी पटना में रूबरू और ईंडिया का आयोजन किया जा रहा है। रूबरू और आईग्लैम की ओर से आयोजित ऑफिशन में उन्होंने हिस्सा लिया और मिसेज बिहार के खिताब से नवाजी गयी। इसके बाद उन्होंने दिल्ली में हुये मिसेज रूबरू ईंडिया के फिनाले में बिहार का प्रतिनिधित्व किया और विजेता का ताज अपने नाम कर लिया। वह अब फिलीपींस में होने वाले रूबरू मिसेज यूनिवर्स भारत का प्रतिनिधित्व करने जा रही है। डा. तारा श्वेता आर्या ने



बताया कि आज महिलाएं किसी भी पैमाने पर पुरुषों से कम नहीं हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाली बेटियां आज अपने दम पर समाज में फैली कुरीतियों को मिटाकर और पुरुषों के साथ हर कदम पर साथ चलकर इतिहास रच रही हैं। यदि हमें सशक्त समाज का निर्माण करना हैं तो सबसे पहले बेटियों को सशक्त करना होगा। डा. तारा श्वेता आर्या को उनके करियर में अबतक के उल्लेखनीय योगदान को देखते हुये मान-सम्मान खूब मिला। समाज सेवा के प्रति जागरूकता और कर्मठता को देखते उन्हें केन्द्रीय मंत्री श्री अश्विनी चौबे के द्वारा वर्ष 2018 में आईकॉन ऑफ बिहार और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और मंत्री श्री मंगल पांडेय के द्वारा हेल्थ एक्सेलेंसी अवार्ड से नवाज गया है। वह आज कामयाबी की बुलंदियों पर है। वह अपनी सफलता का श्रेय अपने शुभचितकों और खासकर मां श्रीमती कमलेश शर्मा को देती हैं जिन्होंने उन्हें हर कदम सपोर्ट किया है। उन्हें खाली समय में गाना गुनने और ट्रैवलिंग का बेहद शौक है। संगीत की देवी लता मंगेश्कर को अपना आदर्श मानने वाली डा. तारा श्वेता आर्या को गाने का भी शौक है।



राम के नाम से रावण भावना वाले को डर लगेगा : गुंजन मिश्रा

भारतीय जनता युवा मोर्चा के द्वारा जय श्री राम को उन्मादी नारा बताने के लिए इसे बैन करने के लिए जिन 49 लोगों के द्वारा पीएम को खुला पत्र लिखा गया इसके विरोध में अरबी साल पैदल मार्च जिला कार्यालय से गांधी स्मारक स्टेशन चौक तक निकाला गया इस विशाल पैदल मार्च का नेतृत्व युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष श्री गुंजन मिश्रा कर रहे थे गांधी स्मारक स्टेशन चौक पहुंचने पर एक छोटी सभा में यह यात्रा तब्दील हो गई सभा में संबोधित करते हुए युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष गुंजन मिश्रा ने कहा यह देश को बांटने की साजिश है इन लोगों को जब भारतीय सेना पर कश्मीर में मस्जिद से एक आवाज निकलती है और उसके बाद एक रैली निकलता है और भारतीय सेना पर पत्थरबाजी करता है उस समय में मॉब लिंचिंग नजर नहीं आती है बांगल के मालदा में पूरी थाना को आग लगा दिया जाता है उस समय में मॉब लिंचिंग नजर नहीं आती है अलीगढ़ के छोटी सी परी बच्ची 3 वर्ष की टिक्काकल को रेप कर उसे अंग अंग काट दिया जाता है उसमें मॉब लिंचिंग नजर नहीं आती मेरठ के भरत यादव को लस्सी के पैसे मांगने की विरोध में ईंट के दिन 5 मुस्लिमों के द्वारा उन्हें पीट-पीटकर मार दिया गया 1990 में कश्मीर से हिंदुओं को पीट पीट कर उनकी माँ बहनों के साथ दुष्कर्म किया गया भगा दिया गया और आज वो अपने ही देश में शरणार्थी बन कर जी रहे हैं तब तो इन्हें मॉब लिंचिंग नजर नहीं आई जेएनयू में भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशाल्लाह इंशाल्लाह का नारा लगता है उस समय इन्हें यह नारा उन्मादी नहीं लगता है यह दक्षिणपंथी अर्बन नक्सली हैं जिन्हें भारत से मतलब नहीं है भारत को टुकड़े टुकड़े करने का प्रयास शुरू से ही करते रहते हैं और उन्होंने एक प्रयास फिर किया है हिंदू की अस्मिता ऊपर प्रहार करके लेकिन उन्हें पता होना चाहिए कि अब हिंदू सजग है जागृत है और हिंदू कभी उन्मादी हो ही नहीं सकता है जय श्री राम से जिन्हें डर लगता है उन्हें डर लगना ही चाहिए जय श्री राम से उन्हीं लोगों



को डर लगता है जो रावण हैं जो रक्षस हैं जो अत्याचारी हैं उन्हें तो अवश्य ही जय श्री राम के नारों से डर लगना चाहिए आगे युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने पीएम नरेंद्र मोदी जी को खुला पत्र लिखा है कि 49 लोगों ने हिंदू भावनाओं को ठेस पहुंचाया है धार्मिक भावनाओं को आहत किया है इसलिए इन लोगों पर धार्मिक भावना भावना को ठेस पहुंचाने का मामला दर्ज कर कार्रवाई करने का मांग किया है मैंके पर राजकपूर सिंह, जिलामहामंत्री कृष्णवालक जी, हिंदुपुत्र प्रदेश अध्यक्ष अविनाश सिंह

बादल, सुशांत मनीष, संजय साह, चन्दन झा, रंजीत साहू, रौशन झा, अविनिष्ठ चौधरी, गौरव सिंह, जितेंद्र झा, विपिन पासवान, रौशन, धीरज सिंह, गौड़ी शंकर, आलोक केसरी, रविश सिंह, निखिल झा, कैलाश यादव, राकेश चौधरी, अखिलेश गुप्ता, श्यामकांत मिश्रा, रजनीश पोद्दार, गौरव सिंह, राहुल, राजीव सूर्यवंशी, नीतीश यादव, प्रवीण सिंह, चिन्मय चौधरी, बाबुल गुप्ता, मुन्ना सिंह, रूपेश चौधरी, राजीव सूर्यवंशी, संतोष पासवान, बिद्धु, पुरेश चौधरी, एवं सैकड़ों युवामोर्चा के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

नगर परिषद अध्यक्ष पद पर जीत

समस्तीपुर। समस्तीपुर नगर परिषद अध्यक्ष पद के लिए मंगलवार को समाहरणालय सभाकक्ष में हुए मतदान के बाद काटे की टक्कर में तारकेश्वर नाथ गुप्ता ने महज दो वोट से जीत हासिल की। आज के चुनाव के साथ ही पिछ्ले दो महीने से जारी गहमागहमी का दौर भी समाप्त हो गया। आज के वोटिंग में पूर्व अध्यक्ष तारकेश्वर नाथ गुप्ता को 15 मत मिले वहीं उनके प्रतिद्वन्द्वी बिनोद गुप्ता की 13 मत ही मिला। बता दें कि समस्तीपुर नगर परिषद में 29 वार्ड पार्षद हैं जिसमें एक बीमार होने की वजह से गैरहाजिर रहे। गैरतलब है कि पहले से भी नगर परिषद अध्यक्ष पद पर तारकेश्वर नाथ गुप्ता और उपाध्यक्ष पद पर शारिक रहमान लवली ही थे लेकिन पार्षदों ने मिलकर करीब 2 महीने पहले दोनों पर अविश्वास प्रस्ताव लाकर पद से हटा दिया। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार यह फिर शुरू हुआ पैसे का लेनदेन और पार्षदों के लिए हॉस्टेलिंग का दौर जिसमें काफी जोर आजमाइश के बाद पूर्व के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष ही बरकरार रह गए। अध्यक्ष की जीत के बाद इनके गुट के पार्षदों ने जमकर एक दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर और मिटाईंग खिलाकर जशन मनाया। अध्यक्ष का मानना है कि उन्हें पद से हटाने के लिए काफी खरीद फरोखा हुई लेकिन इन तमाम मतभेदों को भुलाकर वे फिर से शहर के विकास कार्य में जुट जाएंगे।

जम्मू-कश्मीर अलगाववाद, आतंकवाद, परिवारवाद और भ्रष्टाचार से मुक्त हुआ : पीएम नरेंद्र मोदी

टेलीविजन के जरिए प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों को सम्बोधित किया

बिधुरंजन उपाध्याय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार 8 अगस्त को रात 8 बजे देश के नागरिकों को टेलीविजन के जरिए संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हमने पूरे देश में एक ऐतिहासिक फैसला किया। आर्टिकल 370 एक ऐसी व्यवस्था थी जिससे जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के हमारे भाई-बहन अनेक अधिकारों से वंचित थे। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लोग विकास से वंचित थे, वह समस्या अब दूर हो गई है।

पीएम मोदी ने कहा कि सरदार पटेल, श्यामप्रसाद मुखर्जी और करोड़ों देशभक्तों का सपना पूरा हो गया। यह जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लिए नए युग की शुरुआत है। जम्मू-कश्मीर और देश के लोगों को बहुत-बहुत बधाई। पीएम मोदी ने कहा कि अनुच्छेद 370 के बारे में मान लिया गया था कि यह बदलेगा ही नहीं। इससे जो हानि हो रही थी, उसकी चर्चा ही नहीं हो रही थी। अनुच्छेद 370 से जम्मू-कश्मीर के लोगों के जीवन में क्या लाभ हुआ? जम्मू-कश्मीर को अलगाववाद, आतंकवाद, परिवारवाद और व्यवस्था में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार सहना पड़ा। पीएम मोदी ने कहा कि एक राष्ट्र के तौर पर, एक परिवार के तौर पर, आपने हमने, पूरे देश ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया है। एक ऐसी व्यवस्था, जिसकी वजह से जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के हमारे भाई-बहन अनेक अधिकारों से वंचित थे, जो उनके विकास में बड़ी बाधा थी, वो हम सबके प्रयासों से अब दूर हो गई है। जो सपना सरदार पटेल का था, बाबा साहेब अंबेडकर का था, डॉक्टर श्याम प्रसाद मुखर्जी का था, अटल जी और करोड़ों देशभक्तों का था, वो अब पूरा हुआ है। अब देश के सभी नागरिकों के हक्क और दायित्व समान हैं। पीएम मोदी ने कहा कि समाज जीवन में कुछ बातें, समय के साथ इतनी घुल-मिल जाती हैं कि कई बार उन चीजों को स्थाई मान लिया जाता है। ये भाव आ जाता है कि, कुछ बदलेगा नहीं, ऐसे ही चलेगा। अनुच्छेद 370 के साथ भी ऐसा ही भाव था। उसके जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के हमारे भाई-बहनों की जो हानि हो रही थी, उसकी चर्चा ही नहीं होती थी। हैरानी की बात ये है कि किसी से भी बात करें, तो कोई ये भी नहीं बता पाता था कि अनुच्छेद 370 से जम्मू-कश्मीर के लोगों के जीवन में क्या लाभ हुआ। हमारे देश में कोई भी सरकार हो, वो संसद में कानून बनाकर, देश की भलाई के लिए काम करती है। किसी भी दल की सरकार हो, किसी भी गठबंधन की



सरकार हो ये कार्य निरंतर चलता रहता है। कानून बनाते समय काफी बहस होती है, वित्त मन्त्र होता है, उसकी आवश्यकता को लेकर गंभीर पक्ष रखे जाते हैं। पीएम मोदी ने कहा कि इस प्रक्रिया से गुजरकर जो कानून बनता है, वो पूरे देश के लोगों का भला करता है। लेकिन कोई कल्पना नहीं कर सकता कि संसद इतनी बड़ी संख्या में कानून बनाए और वो देश के एक हिस्से में लाग रही नहीं हो। देश के अन्य राज्यों में सफाई कर्मचारियों के लिए सफाई कर्मचारी एक्ट लागू है, लेकिन जम्मू-कश्मीर के सफाई कर्मचारी इससे वंचित थे। देश के अन्य राज्यों में दलितों पर अत्याचार रोकने के लिए सख्त कानून लागू है, लेकिन जम्मू-कश्मीर में ऐसा नहीं था। देश के अन्य राज्यों में अल्पसंख्यकों के हितों के संरक्षण के लिए माझनारिटी एक्ट लागू है, लेकिन जम्मू-कश्मीर में ऐसा नहीं था। देश के अन्य राज्यों में श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए मिनिमम वैगेज एक्ट स लागू है लेकिन जम्मू कश्मीर में ये सिर्फ कागजों पर ही मिलता था। पीएम मोदी ने कहा कि नई व्यवस्था में केंद्र सरकार की ये प्राथमिकता रहेगी कि राज्य के कर्मचारियों को, जम्मू-कश्मीर पुलिस को, दूसरे केंद्र शासित प्रदेश के कर्मचारियों और वहां की पुलिस के बराबर सुविधाएं मिलें। जल्द ही जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में केंद्रीय और राज्य के रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इससे स्थानीय नौजवानों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। केंद्र

की पब्लिक सेक्टर यूनिट्स और प्राइवेट सेक्टर की कंपनियों को भी रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। हमने जम्मू-कश्मीर प्रशासन में एक नई कार्यसंस्कृति लाने, पारदर्शिता लाने का प्रयास किया है। इसी का नतीजा है कि आईआईटी, आईआईएम, एम्स, हों, तमाम इंगिरेज़न प्रोजेक्ट्स हो, पावर प्रोजेक्ट्स हों, या फिर एंटी करराशन ब्यूरो, इन सबके काम में तेजी आई है। पीएम मोदी ने कहा कि आप ये जानकर चौंक जाएंगे कि जम्मू-कश्मीर में दशकों से, हजारों की संख्या में ऐसे भाई-बहन रहते हैं, जिन्हें लोकसभा के चुनाव में तो वोट डालने का अधिकार था, लेकिन वो विधानसभा और स्थानीय निकाय के चुनाव में मतदान नहीं कर सकते थे। ये वो लोग हैं जो बांटवारे के बाद पाकिस्तान से भारत आए थे। क्या इन लोगों के साथ अन्याय ऐसे ही चलता रहता है? हम सभी चाहते हैं कि आने वाले समय में जम्मू-कश्मीर विधानसभा के चुनाव हों, नई सरकार बने, मुख्यमंत्री बनें। मैं जम्मू-कश्मीर के लोगों को भरोसा देता हूं कि आपको बहुत इमानदारी के साथ, पूरे पारदर्शी बातावरण में अपने प्रतिनिधि चुनने का अवसर मिलेगा। जैसे पंचायत के चुनाव पारदर्शिता के साथ संपन्न कराए गए, वैसे ही विधानसभा के भी चुनाव होंगे। मैं राज्य के गवर्नर से ये भी आग्रह करूंगा कि ब्लॉक डबलपर्मेट कार्डिसिल का गठन, जो पिछले दो-तीन दशकों से लंबित है, उसे पूरा करने का काम

भी जल्द से जल्द किया जाए। पीएम मोदी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के केसर का रंग हो या कहवा का स्वाद, सेब का मीठापन हो या खुबानी का रसीलापन, कश्मीरी शॉल हो या फिर कलाकृतियां, लद्दाख के ऑर्गेनिक प्रॉडक्ट्स हों या हर्बल मेडिसिन, इसका प्रसार दुनियाभर में किए जाने का जरूरत है। युनियन टेरीटरी बन जाने के बाद अब लद्दाख के लोगों का विकास, भारत सरकार की विशेष जिम्मेदारी है। स्थानीय प्रतिनिधियों, लद्दाख और कारगिल की डलवल्मेंट काउंसिल्स के सहयोग से केंद्र सरकार, विकास की तमाम योजनाओं का लाभ अब और तेजी से पहुंचाएगी। लद्दाख में स्पीरिचुअल टूरिज्म, एडवेंचर टूरिज्म और इकोटूरिज्म का सबसे बड़ा केंद्र बनने की क्षमता है। सोलर पावर जनरेशन का भी लद्दाख बहुत बड़ा केंद्र बन सकता है। अब वहां के सामर्थ्य का उचित इस्तेमाल होगा और बिना भेदभाव विकास के लिए नए अवसर बनेंगे।

पीएम मोदी ने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि अब अनुच्छेद 370 हटने के बाद, जब इन पंचायत सदस्यों को नई व्यवस्था में काम करने का मौका मिलेगा तो वो कमाल कर देंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि जम्मू-कश्मीर की जनता अलगाववाद को परास्त करके नई आशाओं के साथ आगे बढ़ेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि जम्मू-कश्मीर की जनता, गुड गवर्नेंस और पारदर्शिता के बातावरण में, नए उत्साह के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेगी। दशकों के परिवारवाद ने जम्मू-कश्मीर के युवाओं को नेतृत्व का अवसर ही नहीं दिया। अब मेरे युवा, जम्मू-कश्मीर के विकास का नेतृत्व करेंगे और उसे नई ऊँचाई पर ले जाएंगे। मैं नौजवानों, वहां की बहनों-बेटियों से आग्रह करूँगा कि अपने क्षेत्र के

विकास की कमान खुद संभालिए।

पीएम मोदी ने कहा कि अनुच्छेद 370 से मुक्ति एक सच्चाई है लेकिन सच्चाई ये भी है कि इस समय ऐहतियात के तौर पर उठाए गए कदमों की वजह से जो परेशानी हो रही है, उसका मुकाबला भी वही लोग कर रहे हैं। कुछ मुद्दे भर लोग जो वहां हालात बिगड़ना चाहते हैं, उन्हें जवाब भी वहां के स्थानीय लोग दे रहे हैं। हमें ये भी नहीं भूलना चाहिए कि आतंकवाद और अलगाववाद को बढ़ावा देने की पाकिस्तानी साजिशों के विरोध में जम्मू-कश्मीर के ही देशभक्त लोग डटकर खड़े हुए हैं। जम्मू-कश्मीर के साथियों को भरोसा देता हूं कि धीरे-धीरे हालात सामान्य हो जाएंगे और उनकी परेशानी भी कम होती चली जाएगी। ईद का मुबारक त्योहार भी नजदीक ही है। ईद के लिए मेरी ओर से सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सरकार इस बात का ध्यान रख रही है कि जम्मू-कश्मीर में ईद मनाने में लोगों को कोई परेशानी न हो। हमारे जो साथी जम्मू-कश्मीर से बाहर रहते हैं और ईद पर अपने घर वापस जाना चाहते हैं, उनको भी सरकार हर संभव मदद कर रही है। पीएम मोदी ने कहा कि अब लद्दाख के नौजवानों की इनोवेटिव स्पिरिट को बढ़ावा मिलेगा, उन्हें अच्छी शिक्षा के लिए बेहतर संस्थान मिलेंगे, वहां के लोगों को अच्छे अस्पताल मिलेंगे, इंफ्रास्ट्रक्चर का और तेजी से आधुनिकीकरण होगा। हम सभी यही चाहते हैं कि आने वाले समय में जम्मू-कश्मीर विधानसभा के चुनाव हों, नई सरकार बने, मुख्यमंत्री बनें। मैं जम्मू-कश्मीर के लोगों को भरोसा देता हूं कि आपको बहुत ईमानदारी के साथ, पूरे पारदर्शी बातावरण में अपने प्रतिनिधि चुनने का अवसर मिलेगा। मैं आपको

विश्वास दिलाता हूं कि जैसे हमने पंचायत के चुनाव पारदर्शिता के साथ संपन्न कराए गए, वैसे ही विधानसभा चुनाव भी होंगे। मैं जम्मू-कश्मीर के अपने भाई-बहनों को एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं कि आपका जनप्रतिनिधि आपके द्वारा ही चुना जाएगा और आपके बीच से ही आएगा। जैसे पहले एमएलए होते थे वैसे ही आगे भी होंगे। यूनियन टेरीटरी बन जाने के बाद, जब इन पंचायत सदस्यों को नई व्यवस्था में काम करने का मौका मिलेगा तो वो कमाल कर देंगे। अब जम्मू-कश्मीर की जनता अलगाववाद को परास्त करके नई आशाओं के साथ आगे बढ़ेगी। पीएम मोदी ने अंत में कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोगों की सुरक्षा में तैनात सुरक्षाबलों के साथियों का आभार व्यक्त करता हूं। प्रशासन से जुड़े लोग, राज्य के कर्मचारी और जम्मू-कश्मीर पुलिस जिस तरह से स्थितियों को सँभाल रही है वो प्रशंसनीय है आपके इस परिश्रम ने मेरा ये विश्वास और बढ़ावा है कि बदलाव हो सकता है। ये फैसला जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के साथ ही पूरे भारत की अर्थिक प्रगति में सहयोग करेगा। जब दुनिया के इस महत्वपूर्ण भूभाग में शांति और खुशहाली आएगी, तो स्वभाविक रूप से विश्व शांति के प्रयासों को मजबूती मिलेगी। मैं जम्मू-कश्मीर के अपने भाइयों और बहनों से, लद्दाख के अपने भाइयों और बहनों से आह्वान करता हूं। आइए, हम सब मिलकर दुनिया को दिखा दें कि इस क्षेत्र के लोगों का सामर्थ्य कितना ज्यादा है, यहां के लोगों का हौसला, उनका जज्बा कितना ज्यादा है। आइए हम सब मिलकर नए भारत के साथ अब नए जम्मू-कश्मीर और नए लद्दाख का भी निर्माण करें।

बेरोजगारी के लिए हो ठोस उपाय

हमारा राष्ट्र आज दुनिया की तमाम अर्थव्यवस्थाओं को चुनौती देते हुए लगातार उन्नति के पथ पर अग्रसर है। पिछले कुछ वर्षों में हमने शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीक, खेल, प्रौद्योगिकी व रक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं और यह उम्मीद भी है कि आने वाले कुछ वर्षों में हम विश्व की पांच प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक होंगे। मगर, स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता के पथ पर सतत गतिमान भारत की इस राह का सबसे बड़ा रोड़ा है, जिसमें से 135 करोड़ से ज्यादा लोग भारत में रहते हैं। यानी दुनिया की कुल आबादी में 17.9 प्रतिशत भारतीय हैं। चीन के बाद हमारा देश दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी वाला वाला देश है। आजादी के समय भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी जो आज चार गुना तक बढ़ गयी है। इनमें आधे बिलियन से अधिक भारतीय 25 वर्ष से कम आयु के हैं। एक अनुमान के मुताबिक हमारी आबादी में हर दिन पचास हजार की वृद्धि हो रही है। अगर हमने अपनी जनसंख्या वृद्धि दर पर रोक नहीं लगाई तो 2027 तक चीन को पछाड़ कर भारत दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन जाएगा। गौरतलब हो कि 11 जुलाई 1987 को जब विश्व की जनसंख्या ने पांच अरब का आंकड़ा छुआ तो देश-दुनिया के प्रबुद्धजनों का ध्यान इस ओर गया कि धरती पर मौजूद प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के महेनजर मानव आबादी को नियंत्रित करना अति आवश्यक है। तब इस विशेष दिन को यूनाइटेड नेशन्स डेवलपमेंट प्रोग्राम द्वारा ह्यूमन विश्व जनसंख्या दिवस का घोषित कर प्रति वर्ष इसे मनाने की परम्परा डाली गयी ताकि जनसंख्या को काबू रखने के लिये लोगों को शिक्षित एवं जागरूक किया जा सके। सनद रहे कि आजादी के बाद 1952 में ही परिवार नियोजन कार्यक्रम को लागू करने वाला भारत विश्व का पहला देश था। बाबजूद इसके आज हमारे देश की जनसंख्या बढ़ती जा रही है, वह वाकई चिंताजनक है। यूं तो अलग-अलग देशों में देशकाल और परिस्थितियों के अनुसार जनसंख्या वृद्धि के अलग-अलग कारण होते हैं मगर भारत के संदर्भ में कारणों की पड़ताल करें तो पाएंगे कि वर्तमान में इसका सबसे बड़ा कारण देश की कुल जनसंख्या में 60 प्रतिशत से ज्यादा युवाओं का होना है। जाहिर है, जिस देश में साठ प्रतिशत से ज्यादा प्रजनन आयु समूह के युवा होंगे, वहां आप फर्टिलिटी को कम करने की चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, समुचित जीवन दृष्टि के अभाव में जनसंख्या बढ़ती ही रहेगी। इसके अतिरिक्त जन्मदर में वृद्धि, मृत्युदर में कमी, निर्धनता, धार्मिक एवं सामाजिक अन्धविश्वास, शिक्षा का अभाव इत्यादि कारणों से भी आबादी पर नियंत्रण टेढ़ी खीर साबित हो रहा है। इसके अलावा जल्दी शादी होने से गर्भधारण करने की अवधि भी बढ़ जाती है। आबादी के तेजी से बढ़ने का एक अन्य कारण गरीबी और निरक्षरता भी है। यूनिसेफ की रिपोर्ट बताती है कि भारत अब भी गर्भ नियोधकों और जन्म नियंत्रण विधियों के इस्तेमाल में पीछे है। मुस्लिम वर्ग में बहु-विवाह की प्रथा तथा कई बच्चों को अल्लाह की देन मानने की सीच ने भी इस समस्या को जटिल बनाता है। अवैध प्रवासीयों की लगातार वृद्धि से भी देश के जनसंख्या घनत्व में बढ़ोतरी हुई है।

भारत को नहीं चाहिए किसी की वकालत

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ट ट्रंप के मुहफट चरित्र और गैर जिम्मेवार बयानों से अब पूरी दुनिया वाकिफ है। उनका अपना देश और वहां की मीडिया तो इसकी अध्यस्त हो चुकी है। बावजूद दुनिया की महाशक्ति का नेता होने के कारण उनके बयान को महत्व मिलता है और उसका असर भी होता है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के साथ बैठक में उन्होंने जो कुछ कहा उससे पूरे भारत में कुछ समय के लिए खलबली मच गई। संसद का सत्र है इसलिए वहां इसकी प्रतिगूंज स्वाभाविक थी। भारत की घोषित नीति है- जम्मू कश्मीर में किसी तीसरे पक्ष की भूमिका नहीं हो सकती। यही नहीं पाकिस्तान के साथ सारे विवाद को हम द्विपक्षीय मामला मानते हैं जिसमें तीसरे पक्ष की कोई आवश्यकता नहीं। इसके विपरीत पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान से ट्रंप ने कहा कि दो महीने पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनसे कश्मीर पर मध्यस्थता करने का आग्रह किया था।

यह असाधारण बयान है। यह भारत की घोषित नीति के विपरीत है। जम्मू कश्मीर हमारे लिए अखंड भारत का भूभाग है। इसमें विवाद है तो इतना कि पाकिस्तान ने इसका कुछ हिस्सा जबरन हथियाया हुआ है जिसे वापस लेना है। भारत में विपक्षी दलों ने एक स्वर से जिस तरह हंगामा किया उसमें गुस्सा और राजनीति दोनों है। गुस्सा वाजिब है लेकिन राजनीति नावाजिब। यह एक ऐसा मामला है जिस पर पूरे देश को एक स्वर में बोलना चाहिए किंतु भारत के विपक्ष ने अपने ही प्रधानमंत्री को कठघरे में खड़ा करने की गैर जिम्मेवार रणनीति अपना ली। इससे पाकिस्तान में गलत सदेश गया। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने संसद के दोनों सदन में एक सक्षिप्त बयान दिया। उन्होंने कहा कि मैं सदन को स्पष्ट तौर पर विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि प्रधानमंत्री मोदी की तरफ से कश्मीर पर मध्यस्थता की कोई अपील नहीं की गई। हम अपने पूर्व के स्टैंड पर कायम हैं। कश्मीर का मुद्दा द्विपक्षीय मुद्दा है और इससे जुड़ी सभी समस्याओं का समाधान भारत-पाकिस्तान मिलकर ही करेंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सीमापार से होनेवाले आतंकवाद को खत्म किए बिना पाकिस्तान के साथ सांति वार्ता संभव नहीं है। विदेश मंत्री का बयान बिल्कुल साफ है। वैसे ट्रॉप का बयान आने के कुछ ही समय बाद देर रात विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रवीश कमार ने भी ट्वीट कर ट्रॉप के बयानों का दो टूक शब्दों में खंडन किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से ऐसा कोई आग्रह अमेरिकी राष्ट्रपति से नहीं किया गया। बहरहाल, एक बार पूरे घटनाक्रम और डोनाल्ड ट्रॉप के वक्तव्य को देखना जरूरी है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के लिए वाइट हाउस में आयोजित लंच समारोह के दौरान पत्रकारों से बातचीत के बीच इमरान के एक अनुरोध पर ट्रॉप ने कहा कि मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से दो हफ्ते पहले मिला था और हमने इस मुद्दे (कश्मीर) पर बात की थी। उन्होंने (मोदी) वार्कइ मुझसे कहा था कि क्या आप मध्यस्थता करेंगे? मैंने पूछ कहा? उन्होंने कहा कश्मीर के लिए क्योंकि यह समस्या सालों से



लगातार चली आ रही है। मैं वाकई आश्वर्यचकित हूँ कि
यह कितना लंबा खिंच गया।

ट्रैन ने कश्मीर समाधान की जरूरत पर बल देते हुए यह भी कहा कि इस मसले को जल्द से जल्द सुलझा लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसे सुलझाया जाना चाहिए क्योंकि यह बहुत लंबे समय से समस्या है और वह (पीएम मोदी) इसे इसी रूप में देख रहे हैं। हो सकता है कि मैं उनसे वार्ता करूँ और हम देखें कि इस पर क्या हो सकता है। कश्मीर दुनिया के सबसे खूबसूरत इलाकों में से एक है, लेकिन हिसा से जूझ रहा है। ट्रैन ने इमरान से कहा कि मुझे लगता है कि वे (भारतीय) इसे हल होते हुए देखना चाहेंगे। मुझे लगता है कि आप भी इसका हल होते हुए देखना चाहेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति ने इमरान से कहा कि भारत के साथ हमारे बहुत अच्छे संबंध हैं। पूरा दृश्य ध्यान से देखने से साफ पता चल रहा था कि पाकिस्तानी पत्रकार पूर्व नियोजित प्रश्न पूछ रहे थे जिसकी पूरी जानकारी इमरान को थी। तीसरा प्रश्न कश्मीर से संबंधित था। पत्रकार ने कश्मीर वाला अपना प्रश्न पूरा किया भी नहीं था कि इमरान बीच में बोलने लगा। इमरान खान ने कहा कि मैं राष्ट्रपति ट्रैन से कहना चाहता हूँ कि अमेरिका कश्मीर मुद्दे का समाधान दे सकता है। जब ट्रैन ने मध्यस्थता करने की बात की तो इमरान खान ने कहा कि यदि आप मध्यस्थता कर सकते हैं तो एक अरब से अधिक लोगों की प्रार्थना आपके साथ है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की यह रणनीति उनके अपने देश के हिसाब से सही हो सकती है। ट्रैन के बयान पर कुछ समय के लिए बैठे खुश हो जाएं। पाकिस्तान की मीडिया में इमरान को वाहवाही भी मिली। पाकिस्तान तो लंबे समय से ऐसा चाह रहा था। वैसे भी अमेरिकी यात्रा में इमरान खान की ट्रैन प्रशासन ने जिस तरह अनदेखी की उससे पाकिस्तान में ही उनकी तीखी आलोचना हो रही थी। पाकिस्तानी अपने प्रधानमंत्री का अपमान मान रहे थे। अमेरिका ने इमरान खान के साथ पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा, इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) प्रमुख लेफिनेंट जनरल फैज हमीद को भी साथ आने के लिए कहा था। अमेरिका मानता है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की कोई अर्थार्थी तभी है जब सेना और आईएसआई उनके साथ है। इसलिए अमेरिका ने तीनों के साथ बातचीत की। अपनी अपमानजनक यात्रा में ट्रैन का यह बक्तव्य उनके काम आ गया। हो

सकता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आतंकवाद पर चर्चा करते हुए ट्रूप से कहा हो कि आप पाकिस्तान पर दबाव डालिए ताकि वह हमारे कश्मीर में आतंकवाद फैलाना बंद करे। इसका उन्होंने अर्थ अपने अनुसार यह लगाया हो कि हमें मध्यस्थता के लिए कह रहे हैं। या फिर उनकी कुछ और रणनीति हो। ट्रूप अफगानिस्तान से भागना चाहते हैं। उनको रास्ता नहीं मिल रहा है। वे यहां तक तैयार हैं कि अफगानिस्तान का शासन भले तालिबान के हाथों चला जाए लेकिन अमेरिका ज्यादा दिन वहां नहीं रह सकता। इसमें उनको लगता है कि बगैर पाकिस्तान के सहयोग के यह नहीं हो सकता इसलिए पाकिस्तानियों को खुश करने के लिए उन्होंने बयान दे दिया है। जो भी हो ट्रूप की यह मूर्खता मानी जाएगी। वैसे उनके बयानों से अमेरिकी विदेश मंत्रालय को बार-बार परेशानी होती है। विश्व समस्याओं को लेकर ट्रूप की अनभिज्ञता अनेक बार सामने आ चुकी है।

ساف ہے کہ جامعہ کشمیر سامسیا، اُسکے انتاریت، ورتماں اور س्वیون امریکی نئیت کے بارے مें ٹنکو جانا کاری نہیں ہے۔ امریکا جیسے دेश کے راست پر اپنی کاری کا اس تاریخ کا گار جیمیوور بیان شرمناک ہے۔ امریکا کے ویدےش مانتریالیت نے بھی سماں کرنا دے دیا ہے۔ ویدےش مانتریالیت نے کہا کہ کشمیر مسلاً بھارت اور پاکستان کے بیچ دیپکشیہ مودہ ہے۔ امریکا دوں ہی دشمنوں کے ساتھ بائٹکر اس مودہ کے سامانہ دان کے لیے وارتا کی کوششیوں کا سواگت کر رہا۔ ٹنکی پارکیا ڈی خی-ہام دوں ہی دشمنوں کے بیچ تناول کم کرنے اور بات چیز کا مہاول بنا دے کی کوششیوں کا سامانہ دان کرتے ہیں۔ اسکے لیے سب سے جریڑی بات ہے آتابک واد کا خاتما اور جیسا کی راست پر اپنے کھانہ-ہام اس میں مدد کے لیے تیار ہیں۔ یہ یانی ساف ہے کہ پاک اپنے کشتی میں آتابک کو سانکشنا دینا بند کرے۔ پاکستان کی ترک سے اپنے بھوپال میں ہونے والی آتابک وادی گاتی ویڈیو پر سخت اور پ्रभاوا کی کاربائی کے بینا سارثک وارتا نہیں ہے سکتی۔ امریکی پ्रشاںن کے اس دوں ہی بیانوں کے باہم بھارت کی اور سے ناراجی بھرے وکٹو یا کیسی تاریخ کے نیندا پرستا و کی آواز یکتا نہیں ہے۔ امریکا کے ساتھ ورتماں اور بھیتھ کے رانیتیک سنبندھوں کا بھایا رکھتے ہوئے اک سیما سے آگے جا کر نیندا کرنا اپریکوکوتا کا پریتھیک ہے جا گا۔ ہام اپنے پریمان میں سے ٹرپ کو ڈیٹا کھل لوابی یہ بیکلکل عذیت نہیں ہے۔ ویسے ڈونالڈ ٹرمپ کی اپنے دشمن میں ہی آلاتو چانا شوہر ہو گیہ ہے۔ امریکی کاؤنٹریس کے سدھی ٹریڈ شرمن نے ٹوبیٹ کر کہا، میں نے ابھی بھارتی راجدھانی ہرچ شریانگا سے ٹرمپ کے انبوحہ ویں بیان کے لیے مانپی مانگی۔ جو بھی ٹوڈا بہت دشکشنا ایشیا کی ویدےش نئیت کے بارے میں جانتا ہے تو سے پتا ہے کہ بھارت کشمیر مودہ پر تیسرے پکش کا ہستکش پ نہیں چاہتا۔ دشکشنا ایشیا کی راجنیتی کے بارے میں ٹوڈی بھی جانا کاری رکھنے والے سبھی لोگ جانتے ہیں کہ بھارت کشمیر میں تیسرے پکش کی مധی سطھنا کا ہمے شا ویرو�ی رہا ہے۔

धरती, आकाश और भारत



यह निश्चय ही भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के लिए एक बड़ी उपलब्धि है कि उसने चंद्रयान 2 को सफलतापूर्वक पृथ्वी की कक्षा में पहुंचा दिया है, जहां से वह परिक्रमा मार्ग पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए चंद्रमा की कक्षा में पहुंच जाएगा और सितंबर के पहले सप्ताह में अपने उपकरण लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान को उतार देगा। इस सफलता के बाद भारत चंद्रमा की सतह को छूने वाला संसार का चौथा देश हो जाएगा। अब तक इस दिशा में तीन अन्य देश बड़ी उपलब्धियां दिखा चुके हैं। अमेरिका और रूस अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा में काफी आगे हैं। चीन इस प्रतिस्पर्धा में कुछ समय पहले ही सम्मिलित हुआ है, लेकिन कम समय में उसने काफी

उपलब्धि प्राप्त कर ली है। इतनी कि अब रूस को चीन से अंतरिक्ष विज्ञान में आगे होने के बावजूद अमेरिका के मुख्य प्रतिद्वंद्वी के रूप में नहीं देखा जाता। अमेरिका चीन को नई उभरती चुनौती के रूप में देख रहा है और उसने अपनी अलंधनीयता बनाए रखने के लिए अपने अनुसंधान कार्यक्रमों को प्रभूत साधन उपलब्ध करवाना आरंभ कर दिया है।

कुछ समय पहले तक भारत चीन से बहुत पीछे नहीं था। लेकिन चीन अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों को रणनीतिक कार्यक्रम के रूप में देखता है। उसने इस दिशा में पर्याप्त साधन उपलब्ध करवाए हैं और वह भारत से काफी आगे बढ़ गया है। इस समूची पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते

हुए ही हमें अपनी उपलब्धियों का आकलन करना चाहिए। यह हमारे लिए कोई विशेष गौरव की बात नहीं है कि अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा में अब हमें भी गिना जाने लगा है और भारत चंद्रमा की सतह को छूने वाली चौथी महाशक्ति बनने वाला है। भारत सदा एक महाशक्ति था और उसे अपनी सभी उपलब्धियों को दूसरी महाशक्तियों की उपलब्धियों की तुलना में ही देखना चाहिए। हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम पचास वर्ष पहले आरंभ हुआ था। 15 अगस्त 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना हुई थी। चंद्रयान 2 की उपलब्धि का श्रेय लेने की उतावली में कांग्रेस के नेताओं ने यह याद दिलाने का प्रयत्न किया कि अंतरिक्ष कार्यक्रम उनके

शासनकाल की देन है। उन्हें इस बात का भी उत्तर देना चाहिए कि भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना में स्वतंत्र होने के बाद हमें 22 वर्ष क्यों लग गए। उस समय कहा गया था कि देश के पास साधनों की कमी है। प्राप्त साधनों को पहले देश के लोगों के भौतिक जीवन को सुधारने में लगाना आवश्यक है।

यह दुविधा उस समय के कांग्रेस के नेतृत्व में अज्ञान का ही द्योतक थी। पहले और दूसरे महायुद्ध के अनुभव से निकलने के बाद यह सोचना नादानी ही लगता है कि देश की सामरिक चुनौतियों की अनदेखी की जा सकती है। दूसरे महायुद्ध के बाद सोवियत रूस काफी जर्जर हालत में था। उसके पास न साधन थे, न अमेरिका जैसी वैज्ञानिक और सामरिक प्रतिष्ठान। लेकिन उसे अपनी सामरिक चुनौतियों का ज्ञान था और उनके अनुरूप शक्ति और क्षमता प्राप्त करने का संकल्प था। उस संकल्प के बल पर ही वह अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका बनाने में सफल हो गया। 1949 में वह अमेरिका से सिर्फ चार वर्ष बाद नाभिकीय शक्ति बन गया। मिसाइल और रॉकेट इंजीनियरिंग क्षेत्र में भी उसने जल्दी ही अपनी उपलब्धियां दिखा दी थी। कांग्रेस के नेता जवाहर लाल नेहरू को आधुनिक निमाता बताते थकते नहीं हैं। सच्चाई यह है कि उन्हें न पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मूल स्वरूप की कोई समझ थी और न उसकी दिशा की। वे अपने आपको उस समय की अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का सबसे बड़ा जानकार मानते थे। वास्तविकता यह है कि शीत युद्ध की परिस्थितियों में भी वे अपने शांतिवादी आग्रहों के कारण भारत की सामरिक तैयारी की उपेक्षा किए रहे। आज हम अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा और मिसाइल प्रौद्योगिकी में अपनी उपस्थिति बनाए हुए हैं तो इसका श्रेय जवाहर लाल नेहरू को नहीं हमारे वैज्ञानिकों को ही जाता है। वे शीत युद्ध की परिस्थितियों के बीच भविष्य की सामरिक चुनौतियों को देख पाए और देर से सही आज हम इस स्थिति में पहुंचे हैं कि अंतर्राष्ट्रीय प्रक्षेपणास्त्र बनाने में समर्थ हुए हैं। हम अगले कुछ वर्षों में मानव सहित यान उतारने की तैयारी कर रहे हैं और मंगल तथा शुक्र अभियान की भी तैयारी में लगे हैं, तथा भारत अन्य महाशक्तियों की तरह अंतरिक्ष में एक स्थायी स्टेशन बनाने में जुटा है। इसके अतिरिक्त हम अब एक नाभिकीय शक्ति भी हैं। इस सबका श्रेय चीन और पाकिस्तान से निरंतर मिलती रही चुनौती को भी जाना चाहिए। उनकी आक्रमकता ने हमें नेहरूकाल की शांतिवादी मूर्छा में नहीं पड़ने दिया। आज हमारे वैज्ञानिकों प्रतिष्ठान में ही नहीं, राजनैतिक प्रतिष्ठान में भी विश्व परिस्थितियों की पहले से बहतर समझ है। इसके बावजूद हमारी सुरक्षा संबंधी चुनौतियां दिन-ब-दिन जितनी गंभीर होती चली जा रही हैं, उसकी तुलना में हमारी तैयारी अधूरी और धीमी ही दिखाई देती है। आज भी हम इस भ्रम से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए कि विश्व के अर्थतंत्र और वैज्ञानिक तंत्र की दिशा मानव कल्याण है। विश्व की महाशक्तियों के बीच की प्रतिस्पर्धा का मूल स्वरूप आज भी सामरिक ही है। यह बात समझे बिना हम अपने अंतरिक्ष, मिसाइल या नाभिकीय कार्यक्रम को अपेक्षित गति नहीं दे पाएंगे। इस बात को ठीक से समझने के लिए हमें अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा के इतिहास पर एक सरसरी दृष्टि डाल लेनी चाहिए। अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा में उतारने की पहल सबसे पहले



जर्मनी ने की थी। 1930 में उसकी सामरिक प्रयोगशालाएं इस दिशा में लगाई गईं। जर्मनी रॉकेट साइंस में अग्रणी होकर अंतरिक्ष में बड़ी शक्ति हो जाना चाहता था। दूसरे महायुद्ध तक उसने कुछ रॉकेट बना भी लिए थे। पर दूसरे महायुद्ध में परायज के बाद उसकी इस आकांक्षा पर रोक लग गई। रॉकेट इंजीनियरिंग में दक्ष उसके वैज्ञानिक अपेक्षिका, ब्रिटेन और सोवियत रूस ने आपस में बांट लिए। अमेरिका ने उसके अनेक प्रमुख वैज्ञानिकों को अपने साथ कर लिया। जर्मनी का रॉकेट साइंस का मुख्य प्रतिष्ठान पूर्वी जर्मनी में था। उस पर सोवियत रूस के नियंत्रण के बाद इस क्षेत्र में सोवियत रूस को अग्रता हासिल हो गई। दूसरे महायुद्ध के बाद लगभग दो दशक तक सोवियत रूस अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा में अमेरिका से आगे था। उसकी अग्रता अपेक्षिका द्वारा चंद्रमा पर अपना मानवसहित यान पहले उतारने से समाप्त हुई। उसके बाद से अमेरिका इस क्षेत्र में अपनी अग्रता बनाए हुए हैं। दोनों के बीच यह प्रतिस्पर्धा 1991 में सोवियत रूस के बिखरने से और शीत युद्ध की समाप्ति से शिशिर पड़ी। लेकिन थोड़े से अंतराल के बाद चीन इस प्रतिस्पर्धा में शामिल हो गया। चीन के प्रतिस्पर्धा में शामिल होने के बाद विशेषकर अमेरिका नए सिरे से अपनी अग्रता बनाए रखने में लग गया है। पिछले कुछ दशकों में प्रौद्योगिकी में जो विकास

हुआ है, उसके बाद अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा और गहरी हो गई है। आज उपग्रहों का उपयोग संचार तंत्र के लिए तो हो ही रहा है। रिमोट सेंसिंग के द्वारा हम पृथ्वी के चर्पे-चर्पे पर नजर रखने और पृथ्वी के ऊपर और उसकी भीतरी परत की महत्वपूर्ण जनकारी प्राप्त करने में सफल हो गए हैं। मौसम संबंधित भविष्यवाणियों के लिए भी अब हम उपग्रहों पर ही अधिक निर्भर हैं। हमारे भौतिक जीवन में उपग्रहों का उपयोग जिस तेजी से बढ़ा है, उतनी ही तेजी से उपग्रहों को नष्ट करके शत्रु के भौतिक जीवन को तहस-नहस कर देने वाली प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। भारत ने भी पिछले दिनों निचली कक्षा में स्थापित अपने उपग्रह को नष्ट करके यह क्षमता प्रदर्शित की है कि वह उपग्रहरोधी प्रौद्योगिकी सिद्ध कर चुका है। पर अब सबसे बड़ी चुनौती साइबर क्षेत्र से आ रही है। यह कहा जाने लगा है कि भविष्य में साइबर युद्ध में दक्षता ही विजय की कसौटी बन जाएगी। इस क्षेत्र में दक्षता से शत्रु के उपग्रहों को नियंत्रिय करके आनन-फानन में उसके जनजीवन को चौपट किया जा सकता है, उसके युद्ध तंत्र को नियंत्रिय किया जा सकता है और उसे घुटने टेकने के लिए विवश किया जा सकता है। इस दिशा में हमने अभी अपेक्षित सक्रियता नहीं दिखाई है। चीन साइबर क्षेत्र में अपना कौशल तेजी से बढ़ा रहा है।

गरीबी से गोल्ड तक का सफर



अ सम के एक छोटे से गांव ढिंग से निकलकर देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में छा जाने वाली हिमा दास की कहानी किसी परिकथा से कम नहीं है। ढिंग एक्सप्रेस से गोल्डन गर्ल बनी 19 साल की हिमा दास ने 19 दिनों के भीतर पांच गोल्ड मेडल जीतकर सबको दाँतों तले अगुलिया दबाने पर मजबूर कर दिया है। हिमा की यह असाधारण सफलता साक्षित करती है कि अगर मन में लगन हो तो कोई भी काम असाध्य नहीं है। अगर पूरी शिद्दत के साथ कोई काम किया जाय तो सफलता झ़ख़ मारकर कदम चूमेगी। एथ्लेटिक्स में लगातार गोल्ड हासिल करके हर रोज एक नया इतिहास रचने वाली हिमा दास का नाम आज

सभी की जबान पर है। हिमा की उपलब्धियां किसी भी भारतीय को गर्व से भर देने के लिए काफी हैं। 19 साल की हिमा की कहानी बेहद दिलचस्प है।

एक गरीब किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाली हिमा असम के छोटे से गांव ढिंग की रहने वाली हैं। इसीलिए उन्हें ह्याँढिंग एक्सप्रेसल के नाम से भी जाना जाता है। हिमा ने दो साल पहले ही रेसिंग ट्रैक पर कदम रखा है। हिमा के पिता असम के नौगांव जिले के ढिंग गांव में रहते हैं। मात्र दो बीघा जमीन के मालिक पिता रंजीत दास इसी पर खेती करके अपने परिवार की आजीविका चलाते हैं। जाहिर है हिमा का बचपन गरीबी में गुजरा है। अभावों के बीच पली बड़ी

हिमा को बचपन में फुटबॉल खेलने का शौक था। वह खेतों में लड़कों के साथ फुटबॉल खेलती थीं और इसी में अपना कैरियर बनाना चाहती थीं लेकिन विधि को कुछ और मंजूर था। सीमित संशाधनों में अपनी प्रतिभा को धार देकर स्वर्णिम यात्रा पर निकली हिमा ने अभी हाल ही में प्रथम श्रेणी से इंटरमीडिएट पास की है। पिता रंजीत दास व मां जोनाली दास की चार संतानों में सबसे छोटी हिमा की प्रतिभा को 2014 में एक इंटर स्कूल दौड़ प्रतियोगिता के दौरान जवाहर नवोदय विद्यालय के पीटी टीचर शमशूल हक ने सबसे पहले पहचाना। शमशूल हक ने हिमा का परिचय नगांव स्पोर्ट्स एसोसिएशन के गौरी शंकर राय से कराई।

एसोशिएशन की तरफ से हिमा ने जिला प्रतिस्पर्धा में भाग लिया और दो स्वर्ण पदक जीत लिए। पैसों की कमी की वजह से उसके पास अच्छे जूते भी नहीं थे। बाबूजूद इसके जिला स्तर की 100 और 200 मीटर की स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीता तो हर कोई हैरान रह गया। हिमा की इस धमाकेदार जीत ने ह्यूस्पोर्ट्स एंड यूथ वेलफेररङ्ग के निपोन दास को काफी प्रभावित किया। उन्होंने हिमा के माता-पिता से मिलकर हिमा को गुवाहाटी ले जाने की सहमति ले ली। निपोन दास ने गुवाहाटी में हिमा के सारे खर्चे खुद वहन किए। उस समय तक असम खेल अकादमी में एथलेटिक्स के लिए अलग विंग नहीं था। निपोन दास के गंभीर प्रयासों के बाद पहली बार हिमा के लिए ही अकादमी में एथलेटिक्स विंग बनी। हिमा को नई उड़न परी बनाने वाले उनके कोच निपोन दास के मुताबिक जब पहली बार जनवरी 2018 में उन्होंने हिमा को हवा की तरह दौड़ते देखा, तो उनके आश्र्य का ठिकाना नहीं रहा। इससे पहले हिमा की उम्र वाली किसी भी लड़की को उतना तेज दौड़ते हुए उन्होंने नहीं देखा था। हिमा की उपलब्धियों से खुद को गैरवान्वित महसूस करने वाले कोच निपोन दास कहते हैं कि उन्हें अपने चयन पर पूरा भरोसा था। वह जानते थे कि यह लड़की एक न एक दिन जरूर देश का नाम रौशन करेगी।

कोच ने शुरू में हिमा को 200 मीटर की रेस के लिए तैयार किया। बाद में वह 400 मीटर की रेस भी लगाने लगी। अन्य खिलाड़ियों की ही तरह हिमा को भी अपने जीवन में हार-जीत के उत्तर- चढ़ाव से गुजरना पड़ा है। अप्रैल 2018 में गोल्ड कोस्ट में खेले गए कॉमनवेल्थ खेलों की 400 मीटर की स्पर्धा में हिमा ने 51.32 सेकंड में छठवां स्थान प्राप्त किया था।

इसके बाद 4400 मीटर स्पर्धा में सातवें स्थान पर संतोष करना पड़ा। जब गुवाहाटी में अंतरराज्यीय स्पर्धा हुई तो हिमा ने गोल्ड मेडल जीत लिया। इसके बाद पिछले साल जकार्ता में 18वें एशियन गेम्स में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ते हुए रजत पदक प्राप्त किया। लेकिन इस साल जो उसने स्वर्णिम दौड़ शुरू किया तो ऐतिहासिक धावक मिल्खा सिंह और उड़न परी के नाम से मशहूर रहीं पीटी उषा को भी पीछे छोड़ दिया है। 400 मीटर की रेस महज 52.09 सेकंड में खत्म करके हिमा वर्ल्ड ऐथलेटिक्स चैंपियनशिप ट्रैक में गोल्ड मेडल जीतने वाली पहली भारतीय धाविका बन गई है।

हिमा इसके पहले और चार गोल्ड मेडल अपने नाम कर चुकी है। हिमा की इस बेहतरीन उपलब्धि पर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने भी टवीट कर बधाइ दी। यहीं नहीं ह्यातुम्हारी जीत की भूख युवाओं के लिए प्रेरणा हैल कहते हुए मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर हिमा की इस अविश्वसनीय जीत से अभिभूत दिखे। गौरतलब है कि हिमा ने इसी महीने अपने स्वर्णिम दौड़ की शुरूआत करते हुए 19 दिनों के भीतर पांच स्वर्ण पदक जीत लिए। दो जुलाई को यूरोप में, सात जुलाई को कुंटो ऐथलेटिक्स मीट में, 13 जुलाई को चेक गणराज्य में और 17 जुलाई को टाबोर ग्रां प्री में अलग-अलग स्पर्धाओं में स्वर्ण जीता। 20 जुलाई को कॉमनवेल्थ गेम्स में हिमा ने वर्ल्ड ऐथलेटिक्स चैंपियनशिप ट्रैक कॉम्पिटिशन में हिस्सा लिया और जीत दर्ज की।



तिरुपति बालाजी दर्शन करने जाएं तो देखना न मूले गुप्त रसोई जहां बनते हैं रोजाना 3 लाख लड्डू



यह मंदिर तिरुमलै पर्वत पर स्थित है, जहां भगवान विष्णु अपनी पत्नी लक्ष्मी जी के साथ विराजमान हैं। तिरुपति शहर इसी पर्वत के नीचे बसा हुआ है। आस्था अगर आप तीर्थयात्रा का पुण्य अर्जित करने के साथ मनोहारी प्राकृतिक टट्ठों का आनंद उठाना चाहते हैं तो चलें तिरुपति बाला जी मंदिर के दर्शन करने। दक्षिण भारतीय मंदिर अनूठी स्थापत्य कला के लिए विश्व-विख्यात हैं। इस दृष्टि, से आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित तिरुपति बाला जी मंदिर भी दर्शनीय है।

श्रीवेंकटेश्वर की सात फुट ऊंची मूर्ति विराजमान

यह मंदिर तिरुमलै पर्वत पर स्थित है, जहां भगवान विष्णु अपनी पत्नी लक्ष्मी जी के साथ विराजमान हैं। तिरुपति शहर इसी पर्वत के नीचे बसा हुआ है। इसकी सात चोटियां भगवान आदिशेष के सात सिरों को दर्शाती हैं। यहां की प्राकृतिक छटा निराली है। बाला जी का मंदिर सातवीं चोटी वेंकटादी पर स्थित है, वेंकट पहाड़ी के स्वामी होने के कारण ही भगवान विष्णु को वेंकटेश्वर भी कहा जाता है। यह मंदिर भारत के सार्वाधिक संपन्न मंदिरों में से एक है। प्रचलित मान्यता के अनुसार मनौती पूरी होने के बाद यहां आने वाले भक्तजन भगवान को अपने बाल अर्पित करते हैं।

यह मंदिर द्रविड़ स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट नमूना है। इसके गर्भगृह को 'अनंदा निलियम कहा जाता है। यहां

चार भुजाओं वाले भगवान श्रीवेंकटेश्वर की सात फुट ऊंची मूर्ति विराजमान है। यह मंदिर तीन परकोटों से घिरा है,

जिन पर स्वर्ण कलश स्थापित हैं। स्वर्णद्वार के सामने तिरुमहापंडपम नामक मंडप है। मंदिर के सिंहद्वार को 'पडिकावलि' कहा जाता है। इसके भीतर बालाजी के भक्त राजाओं एवं रानियों की मूर्तियां स्थापित हैं। परंपरा के अनुसार बालाजी को तुलसी की मंजरी चढ़ाने के बाद उसे यहां स्थित पुण्य कूप में विसर्जित कर दिया जाता है। मंदिर के मुख्यद्वार पर भगवान विष्णु के द्वारपाल जय-विजय की मूर्तियां सुशोभित हैं।

पौराणिक कथाओं के प्रति भक्तों की श्रद्धा

बाला जी के विग्रह पर एक चोट का निशान है, जिस पर नियमित रूप से औषधि के रूप में चंदन का लेप लगाया जाता है। प्रचलित कथा के अनुसार एक भक्त नियमित रूप से भगवान के लिए दूध लाता था। इसके लिए उसे प्रतिदिन दुर्गम पहाड़ी मार्ग पर पैदल चलना पड़ता था। भक्त की कठिनाई देखकर भगवान ने यह तय किया मैं स्वयं उसकी गौशाला जाकर दूध पी आऊंगा। फिर भगवान प्रतिदिन मनुष्य का रूप धारण करके भक्त की गौशाला में जाते और चुपके से गाय का दूध पीकर वापस लौट आते। एक रोज उस भक्त ने मनुष्य रूपी भगवान को ऐसा करते देखा तो चोर समझकर उन पर डड़े से पह र कर दिया। उसी बजह से भगवान

श्रीबाला जी के विग्रह पर चोट का निशान अंकित है।

रोजाना बनते हैं 3 लाख लड्डू

ऐसा कहा जाता है कि मंदिर की मूर्ति से समुद्र की लहरों की धवन सुनाई देती है। इसी कारण उसमें नमी रहती है। यहां प्रसाद के रूप में चढ़ाए जाने वाले लड्डू विश्व प्रसिद्ध हैं, जिन्हें बनाने के लिए वहां के कारीगर आज भी तीन सौ साल पुराना पारपरिक तरीका इस्तेमाल करते हैं। इसे मंदिर के गुप्त रसोईघर में तैयार किया जाता है, जिसे 'पोटू' कहा जाता है। यहां रोजाना लगभग 3 लाख लड्डू तैयार किए जाते हैं।

कैसे पहुंचे

तिरुपति दक्षिण भारत का प्रसिद्ध नगर है। चेन्नई से मुंबई जाने वाले रेलमार्ग के बीच में पड़ते वाले रेणिगुंटा स्टेशन से मात्र 10 किमी. की दूरी पर तिरुपति स्टेशन है। हैदराबाद, कांची और चित्तूर आदि शहरों से तिरुपति जाने के लिए बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं। स्टेशन के पास ही मंदिर ट्रस्ट की ओर से बनवाई गई आरामदेह धर्मशाला स्थित है।

धूमने का बेस्ट टाइम

तिरुपति जाने के लिए अगस्त से फरवरी के बीच का समय सर्वाधिक उपयुक्त है। इस दौरान यहां कई ज्ञाकीय निकलती हैं और मौसम भी सुहावना रहता है। तिरुपति बाला जी को पृथ्वीलोक का साक्षात् वैकुंठ माना जाता है। इसके मार्ग में गोविंदा-गोविंदा का जयघोष प्रत्येक क्षण सुनाई देता है।

बच्चे के लिए भोजन, मां के लिए दवा का काम करता है स्तनपान कराना

भारत समेत पांच देशों चीन, इंडोनेशिया, मैक्सिको और नाइजीरिया में करीब 2,36,000 बच्चों की समुचित स्तनपान न होने के कारण हर साल मौत हो जाती है। इन मौतों को रोकने के लिए यूनिसेफ और डब्ल्यूएचओ हर साल 1-7 अगस्त तक विश्व स्तनपान सप्ताह मनाते हैं। ब्रेस्टफीडिंग मां और शिशु दोनों के लिए बेहद जरूरी है। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स और अमेरिकन कॉलेज ऑफ गायनोकॉलजिस्ट के अनुसार डिलीवरी से छह माह तक शिशु को मां का दूध पिलाना चाहिए। इस दौरान फॉमूला डाइट और जूस कर्तई नहीं देना चाहिए। शिशु के 6 माह बाद ही उसकी डाइट में अनाज, फल शामिल करने चाहिए। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. राखीआर्य से जानते हैं ब्रेस्टफीडिंग क्यों है जरूरी और इसके फायदे...

6 प्वाइंट्स : शिशु के लिए इसलिए है जरूरी

- मां का दूध शिशु को पर्याप्त पोषक तत्व उपलब्ध कराता है। यह विटामिन्स, प्रोटीन और फैट का परफेक्ट कॉम्बिनेशन होता है और बच्चे में आसानी से पच भी जाता है।
- इसमें कई तरह की एंटीबॉडीज पाई जाती हैं जो बैक्टीरिया और वायरस से लड़ने में मदद करती हैं। साथ ही बच्चे की रोगों से लड़ने की क्षमता भी बढ़ाता है।
- रेयुलर ब्रेस्टफीडिंग से नवजात में एलर्जी और अस्थमा का खतरा काफी हद तक कम हो जाता है।
- कई रिसर्च में भी सापेने आया है जिन बच्चों को रेयुलर ब्रेस्टफीडिंग कराई गई बड़े होने पर उनका आईक्यू लेवल भी बेहतर पाया गया है।
- ब्रेस्टफीडिंग के दौरान मां का स्पर्श बच्चे के लिए उसे सुरक्षा का अहसास देने के साथ मां-शिशु के बीच इमोशनल बॉन्डिंग को बढ़ाता है।
- एक अध्ययन के अनुसार यह बच्चों में मोटापा, डायबिटीज और कैंसर का खतरा भी कम करता है।

6 प्वाइंट्स : मां को कई रोगों से बचाती है ब्रेस्टफीडिंग

- ऐसा माना जाता है कि ब्रेस्टफीडिंग से सिर्फ शिशु को ही फायदा होता है। लेकिन ऐसा नहीं है, ब्रेस्टफीडिंग से मां की काफी कैलोरीज बर्न होती हैं इससे बढ़ते वजन से राहत मिलती है।
- ब्रेस्टफीडिंग के दौरान ऑक्सीटोसिन हार्मोन रिलीज होता है जो यूट्रस को वापस पुरानी अवस्था में लाने का काम करता है। साथ ही डिलीवरी के बाद यूट्रस से होने वाली ब्लीडिंग को कम करता है।
- रेयुलर ब्रेस्टफीडिंग कराने पर मां में ब्रेस्ट और ओवेरियन कैंसर का रिस्क भी कम होता है। साथ ही ऑस्टियोपेंसिस होने की आशंका भी काफी कम हो जाती है।
- कई स्टडीज में पाया गया है कि स्तनपान से मां को



टाइप-2 डायबिटीज, रुमेटाइड आर्थराइटिस और हृदय रोगों से बचाव होता है।

- ऐसी महिलाएं जिनमें हाई ब्लड प्रेशर और हाई कोलेस्ट्रॉल की समस्या है, रेयुलर ब्रेस्टफीडिंग से

इनमें भी राहत मिलती है।

- ब्रेस्टफीडिंग के दौरान मां में प्रोलैक्टिन हार्मोन रिलीज होता है जो मां को रिलैक्स और एकाग्र करने में मदद करता है।

अपराध पर अंकुश एवं अपराधियों पर नकेल कसना मेरी पहली प्राथमिकता होगी दिनेश चन्द्र श्रीवास्तव बने बांका के नए एस.डी.पी.ओ



राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका के नये एस.डी.पी.ओ के रूप में २५ जुलाई २०१९ को पदभार ग्रहण किया। बांका जिले में ऐस.डी.पी.ओ के पदस्थापन से लोगों को कुछ नई उम्मीदें भी जगी हैं। आम लोगों की समस्याओं से पुलिस विभाग का सामना दैनिक क्रियाशीलता है। अपितु उसका समुचित समाधान ही पुलिस की उपलब्धि मानी जा सकती है। *पदभार ग्रहण करने के उपरान्त चर्चित बिहार पत्रिका के खास मुलाकात के क्रम में जब जानना चाहा कि पदभार ग्रहण करने के साथ ही बांका नये एस.डी.पी.ओ बांका, आपकी पहली प्रथमिकता क्या होगी। उन्होंने बताया कि अपने बरिय पदाधिकारियों के प्रतिदिन अपराध पर अंकुश लगाना एवं अपराधीयों पर नकेल कसना मेरी पहली प्रथमिकता होगी। पुलिस अगर शक्ति है, तो जनता उसकी प्रेरणा है। साथ ही पुलिस को सामाजिक सहयोग प्राप्त होने से प्रमाणिकता प्रमाणित होती है। उन्होंने आगे बताया कि हमे समाज के लोगों से यह अपेक्षा रखते हैं कि अपने आसपास किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधियां चाहे वह किसी भी परिस्थिति में हो, कोई आशंका या किसी भी तरह की जानकारी जिससे अपराध पर अंकुश लगाया जा सके, और अपराधीयों के हौसले पस्त कर सकें। इसकी सूचना नजदीकी थाने को दें या हमें दें। सूचना देने वालों की जानकारीया गुप्त रखी जाती है। हाँ यह भी ध्यान रहे कि सही और पुक्ता सूचना ही अपराधीयों के हौसले पस्त कर सकती है। अतएव सही जानकारी दें। जिससे तुरंत कार्यवाई की जा सके। उन्होंने आगे बताया मैं राजधानी पटना में बिशेष शाखा में प्रतिनियुक्त था। अतएव राजधानी पटना में तकनीकि अनुसंधान एवं पुलिस की नियमित निगरानी और आम लोगों के सहयोग के कारण बांका के अपराधीयों के हौसले को पस्त करने में हद तक सफलता मिली थी। अब बांका आया हूँ... यहां भी मैं आम लोगों से यही अपेक्षा रखते हुए कर्मपथ पर मुस्तैद हूँ। शहर में बढ़ रहे चोरी। एवं बैंक छिनतर्फ के विषय में आपके द्वारा क्या पहल की जा रही है?; पर बताया कि इसके लिए विशेष गरिमा दल के द्वारा विशेष निगरानी की जा रही है। बैंक छिनतर्फ एवं बाईक लुटेरा गिरोह पर भी हम नियमित कार्यवाई कर रहे हैं। इसमें बहुत हद तक हमें सफलताभी मिली है। साथ ही नियमित इस पर बड़े अधिकारियों के निदेशन में उचित कार्यवाई भी की जा रही है। अपराधीयों बाहर के नहीं, यही के हैं। अतः आमलोगों द्वारा भी इसपर पहल करने एवं पुलिस को सहयोग करने से इस पर हद तक सफलता पाई जा सकती है। अंत में बांका जिले के प्राकृतिक एवं भौगोलिक संरचना से प्रभावित होकर मंदार पर्वत एवं वन सम्पदा के प्रति भी अपना भाव प्रकट करते हुए, *स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद पर्व को शांति और सौहार्यपूर्ण वातावरण में मानवों की अपील आम लोगों से करते हुए। जिलेवासीयों को स्वतंत्रता दिवस हार्दिक बधाई दी।

झोलाछाप डॉक्टरों से मिलेगी निजात

राष्ट्रीय चिकित्सा अधिनियम, 2019 का पास होना भारतवर्ष के लिए, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए, एक युगानुकूल, प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी घटना है। भारतीय चिकित्सा परिषद कानून, 1956 ने देश में चिकित्सा प्रणाली को मजबूत बनाने के बदले चिकित्सा सेवा में प्रभावचार को बढ़ावा देने का या युं कहें कि चिकित्सकों की भारी कमी करने में योगदान देने का काम किया था। स्मरण होगा कि पिछली सदी में, आजादी के पहले 50 वर्षों में, देश में अभियंताओं की भी बहुत अधिक कमी थी। लेकिन विभिन्न राज्यों में अभियंत्रण महाविद्यालय खोलने की कवायद शुरू हुई और आज अभियंताओं की अतिउपलब्धता हो गई है, जबकि हमारे देश में 11000 से भी अधिक व्यक्तियों पर एक प्रशिक्षित चिकित्सक उपलब्ध होने का ही आंकड़ा है। बिहार जैसे राज्यों में यह आंकड़ा एक चिकित्सक प्रति 28000 से भी अधिक व्यक्ति हो जाता है। ऐसी स्थिति में उप प्राथमिक चिकित्सा केंद्र तो दूर की बात है, प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों, जिला अस्पतालों तक अच्छे चिकित्सकों की उपलब्धता नहीं हो पा रही है। मैंने स्वयं देखा है, सारण जिले के 20 प्रखंडों के प्राथमिक चिकित्सा केंद्र सामान्यतः आयुष चिकित्सकों और नर्सों के भरोसे ही चल रहे हैं। कारण, प्रशिक्षित चिकित्सकों की अनुपलब्धता। ऐसी स्थिति कैसे पैदा हुई? बढ़ती आबादी के अनुपात में चिकित्सा महाविद्यालय, नर्सिंग महाविद्यालय खोलने के अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रोत्साहन देने के लिए आयुष चिकित्सकों को ब्रिज कोर्स देकर एलोपैथिक इलाज के लिए भी अनुमति देना, इत्यादि कार्य बहुत पहले शुरू कर देने चाहिए थे। लेकिन भारतीय चिकित्सा परिषद (एम्सीआई) के बाने और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में लगी रही।

कविता

अभिलाषा



डॉ.प्रभा

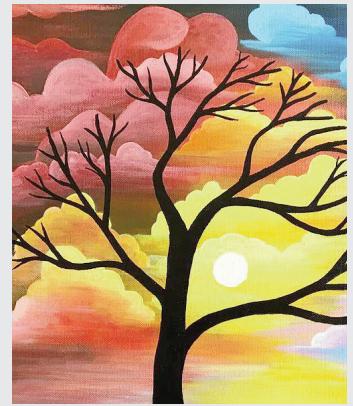
क्या होती है अपनेपन की गंध
क्या होती है चन्दन की सुगंध कहीं झील
सी आँखों में लहराता समंदर,
कोई बात निकाल जाती है जो रहनी थी
दिल के अंदर.....

सोचता है दिल कि है ये अखिरी पड़ाव
और उस पड़ाव पर आकर निकलती है
चतुर्दिश रहें...

सोच होने लगते हैं बोझिल
और साँसे घुटती हैं सीने में!!
जब जब ऐसा होता है बनता है एक
दायरा,

दायरे के ऊपर उफनती है
एक बदहवास विस्तृत आकार.. !!
क्या होती है प्यार की परिभाषा
क्यूँ मुखरित होती जिज्ञासा
क्यूँ समाज के बनाये नियमों की
धज्जियाँ उड़ती ये अभिलाषा??

क्यूँकि जगस्ता का आदेश है ये
विश्वम्भर की भाँति बाहें फैला,
और बना व्योम को अपना घर
पूरित कर जग की अभिलाषा.. !!



दांत हैं अनमोल, इसकी सुरक्षा पर ना बनें कमज़ोर



सी.बी.डेस्क

स्वस्थ दाँत स्वस्थ शरीर दाँत हैं अनमोल, इसकी सुरक्षा में ना बने कमज़ोर. चर्चित बिहार परिक्रामा की विशेष मुहिम के तरह इस माह की खास परिचर्चा दाँतों की सुरक्षा पर है। परिचर्चा में दाँतों की देखभाल, दाँतों में होने वाले, संक्रमण, तथा उसके उचित निदान हेतु, जिले के विभिन्न दृष्टि चिकित्सकों से राय ली तथा उनसे यह जानना चाहा कि आए दिन जो दाँतों में होने वाले संक्रमण को लोग नजरअंदाज कर देते हैं? उससे क्या परिणाम पैदा होताहैं? क्यों इसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है, इसके चलते क्या-क्या गंभीर समस्याएं दाँतों के बिषय में और स्वास्थ्य पर हो सकती हैं। आईए हम मिलाने हैं। बांका जिला के दृष्टि चिकित्सक डॉ दिनेश पंडित एवं डॉ पुष्पम प्रयर्दनी। से चर्चित बिहार परिक्रामा के ब्यूरो चीफ राजेश परिज्ञाकार द्वारा दृष्टि चिकित्सकों से की गई भेटवार्ता का अंश सी.बी.डेस्क की कलम से डॉ. दिनेश पंडित बी.डी.एस (एम.एस सी) दाँत एवं मुँह रोग विशेषज्ञ ने बताया कि आज कल दाँतों की समस्या आम हो गई है। हर उप्र के लोग बच्चे, बूढ़े, जवान ग्रसित हैं। इसकी खास बजह कुछ लापरवाही भी है। एवं अपने दाँतों के देखभाल के प्रति लापरवाह होने सेकई गंभीर बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। *एसेसियेसन की ताजा रिपोर्ट दर्शाति है कि 95% लोग दाँतों के रोग से पीड़ित हैं। बच्चों में भी दाँतों की समस्या पैदा होती है। इसका कारण जंक फूड, ऐसीड युक्त चॉकलेट, या अन्य रासायनिक युक्त खाद्य पदार्थों का अध्यधिक सेवन करना। आम लोगों के द्वारा पान, तम्बाकू गुटखा, या अन्य मादक पदार्थों से सेवन सेही भी दाँतों में धीरे-धीरे संक्रमण पैदा होने लगता है। इससे दाँतों में झनझनाहट, ठंठा गर्म पानी से दाँतों में पीड़ा होने लगता है, और इसीको नजरअंदाज किये जाने पर लोग गंभीर बीमारियों का शिकार हो जाते हैं।

प्रारंभिक लक्षण

कभी-कभी दाँतों पर नीले रंग के धब्बे पड़ने लगते हैं जो ज्यादा फ्लोराइड वाले इलाकों में होता है। इस तरह के दाँतों को ब्ल्यूचिंग तथा कॉस्मेटिक डेटिस्ट्री सर्जरी के

द्वारा किया जाता है। शरीर में सबसे ज्यादा मुँह का कैंसर होता है। मुँह से खाना खते वक्त जलन होता है। मुँह में अंदर में सफेद धब्बा पड़ने लगता है की मुँह के अंदर मांस खराब लगने लगता है। मुँह खोलने में दिक्कत होना तथा घाव जो ठीक नहीं है हो रहा है तो इस तरह की बीमारियां होती हैं। शीघ्र ही अपने चिकित्सकों से मिलने की आवश्यकता होती है। खाने से बीड़ी पीने से गुटका सुपारी तंबाकू चबाने से पायरिया एवं सड़े हुए दाँतों से मुँह में कैंसर होने की संभावना काफी बढ़ जाती है। भारत में मुँह के कैंसर का सबसे ऊपर है नकली दांत के विषय में पूछा तो उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक पद्धति से बनाए गए दांत असली जैसा करते हैं असली दांत निकल निकल जाने से कुछ कुछ ही दिनों बाद नकली दांत लगता लेना चाहिए नहीं तो अलग अलग बगल की खाली जगह की तरफ खिसकने लगता ऊपर का दांत नीचे की तरफ आने लगता है। उस दांत का भारत आगे के दाँतों पर पड़ता है। जिससे आगे के दांत जल्दी कमज़ोर हो जाते हैं। काफी समय पर यूं ही छोड़ देने पर जबड़े की हड्डी के अंदर निरंतर होने लगता है। नकली दांत भी ठीक से मुँह में नहीं बैठ पाते। इस कारण से नकली दांत भी ठीक से नहीं बैठ पाते। दर्द होने लगती है जो की हड्डी के अंदर का ऑपरेशन कर इसे इम्प्लाई किया जाता है। जो दो तरह से बनते हैं। एक लगने वाली प्लांट जो थोड़ा बोझिल होता है। दूसरा क्राउन एवं ब्रीज है।



पद्धति द्वारा किया जाता है। डॉ. पुष्पम प्रियदर्शिनी - बी.डी.एस (डेन्टल सर्जन भूवनेश्वर) ने बताया कि दाँतों एवं मसूड़ों की उचितदेख भाल नहीं करने एवं लापरवाहि बरतने खान पान जैसे चबाने बाले पदार्थ जैसे - खीना, पान गुटखा, आदि के नियमित सेवन से दाँतों की बीमारियां उत्पन्न होने लगती हैं। दाँतों का क्षयडेन्टल कैरिज- के विषय में बताया कि जो ज्यादा मिठाई, बिस्कुट चॉकलेट खोते हैं, एवं कोल्ड ड्रिंस्क पीते हैं, और दाँतों की सफाई पर ध्यान नहीं देते उन्हें यह बीमारी ज्यादा होती है। इसमें बैक्टीरिया लैक्टिक एसिड बनता है। जो दाँतों के एनामेल ऊपरी सतह तथा डेन्टल के भीतरी सतह को गला देता है। इस अवस्था में कैरिज यानी छिद्र भाग को हटाकर उसमें चांदी रंग का पदार्थ के मिश्रण से यह दांत भरने से दांत बच जाता है। लेकिन ऐसे ऐसे ही छोड़ देने से भीतर का संक्रमण भी पैदा होने लगता है, तथा दाँतों में असहनीय दर्द होने लगता है। इस अवस्था में पहुंचने पर दाँतों को निकाल देना पड़ता है। या इसका इलाज रूट कैनाल थेरेपी जिसे आर सी.टी.* कहते हैं, के द्वारा बचाया जा सकता है, जो इलाज थोड़ा महंगा होता है। इसलिए ज्योही ही दाँतों में काले चित्ती दिखाई पड़े। डेन्टल सर्जन से संपर्क कर उसे भरवा लेना चाहिए। ताकि दांत सुरक्षित बच सके। इसके आगे टेढ़े मेढ़े एवं बाहर की तरफ निकले दाँतों के कई कारण हैं, के विषय में बताया दूध के दांत के गिरने का निर्धारित समय होता है। बच्चों के अंगूठा एवं उठने की आदत से मुँह खुला रहने से बंश परंपरा के कारण भी होता है। इन ऊंचे उठे तथा टेढ़े मेढ़े दाँतों के कारण चेहरा क्रूप दिखने लगता है। इसका सही इलाज संभव है। सलाह- एवं परामर्श के तौर पर दोनों चिकित्सकों की माने तो दाँतों की नियमित सफाई, रोज खाने के बाद दिन में कम से कम दो बार मेडिकेट डेन्टल क्रीम (चिकित्सक के परामर्श पर) ही व्यवहार करें। ऐसीड युक्त दूध पेस्ट मसूड़ों को कमज़ोर करने लगता है। जिसके दाँतों के जड़ों तक संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। दाँतों में सनाहट, झनभनाहट, दाँतों से खुन आना ये सभी प्रारंभिक लक्षण दिखाई पड़ने लगे तो इसे नजर अंदाज न करें। बल्कि तुरंत अपने दृष्टि चिकित्सक से परामर्श एवं उचित इलाज करायें।

स्वतंत्रता संग्राम मे बांका जिले के शहीदों स्वाधीनता सेनानियों को अर्पित श्रद्धा सुमन

शालिग्राम प्रसाद सिंह

(सेवा निवृत्त शिक्षक)

एक देश, एक राष्ट्र, एक राष्ट्र भाषा,
एकता स्वतंत्रता देश की ज्वलन्त आशा
लाख अंधकार धिरे, दामिनी प्रचंड गिरे
एकता अखंड रहे, तो सदैव भाय फिरे

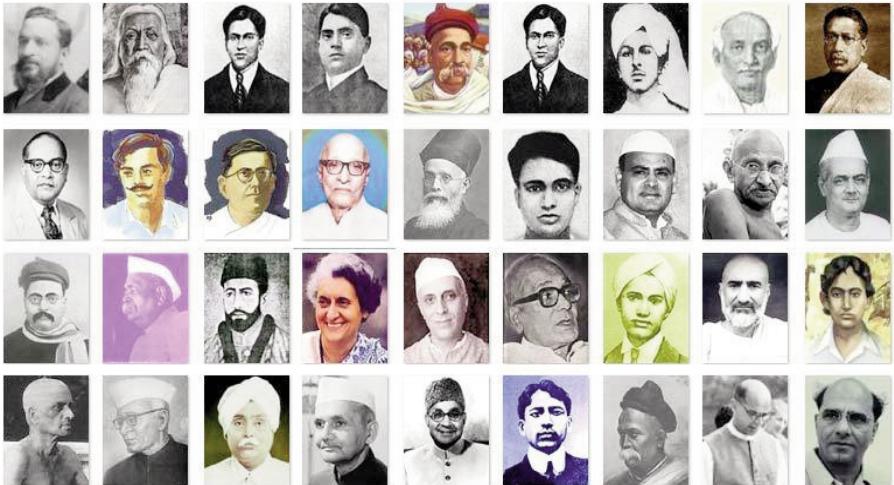
कवि गोपाल सिंह "नेपाली" की उद्घृत करते हुए अपार
हर्ष हो रहा है। 15 अगस्त 1947 भारतीय इतिहास में
स्वर्ण अक्षरों में अंकित अमिट छाप है वीते सात आठ
दशक पूर्व का सिंहावलोकन कर देखें, तो पता चले कि
हमने क्या खोया क्या पाया? देश ने क्या
उपलब्धियां, तरकी की।

स्वतंत्रता से स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों, शहीदों की कुर्बानियों का मीठा फल हम भारतवासी चख रहे हैं, उपयोग कर रहे हैं स्वच्छंद, स्वतंत्र, मनपसंद तराने गा रहे हैं। आइये आज हम उन वीर सपूतों की यादगार कार्यों का स्मरण करें।

बांका जिला (तत्कालीन भागलपुर जिला)में देश की आजादी के लिए अनेक दल काम कर रहे थे, उनके नेता के नाम पर उनके दल का नाम हुआ करता था। यथा महेंद्र दल, श्रीधर दल, और परशुराम दल सियाराम दल, सभी दलों में कार्यकात्मकों की संख्या डेढ़ दो. सौ के करीब हुआ करती थी। सभी दलों की एक साथ बैठकें किसी खास मकसद से हुआ करती थी, यथा शराब की भट्टी, कलाली, जलाना सरकारी बंगले में आग लगाना किसी अंग्रेजों के पिंडू मुलाजिमों को यमराज के पास पहुंचाना, लूटपाट मारकाट छीना झपटी अंग्रेजों की संपत्ति को नष्ट करना आदि कार्य सम्मिलित रूप में निशाना बनाया जाता था।

श्री धर सिंहग्राम भीतिया जिला बांका

स्वाधीनता संग्राम में श्रीधर सिंह की महती भूमिका रही थी, इन्होंने अपने पराक्रम से अंग्रेजों के छवके हुड़ा दिए थे। पर्याप्त संसाधन नहीं रहने के बावजूद भी ये अकेले घुड़सवारी करते थे और अंग्रेजों के उन ठिकानों को नष्ट करते थे, जिनकी सूचना इन्हे इनके गुप्त चर के द्वारा मिलती थी इनकी एक खासियत यह लगेथे कि यह अपने साथ कई लोगों को भ्रमण के लिए लेकर जाते थे वही व्यक्ति इनके गुप्त चर का काम करते थे, वे ही इन्हे अंग्रेजों के बारे में सूचना दिया करते थे। जिस कारण अंग्रेज भी इनसे दहशत में रहते थे। अंग्रेजों का ये डटकर मुकाबला करते थे। श्रीधर सिंह पकाक्रम के काण्ठ काफी प्रसिद्ध हासील कर ली थी। यही कारण था कि ये अंग्रेजों के आंखों में हमेशे खटक ने लगे थे। अंग्रेजों के साथ मुकाबला के क्रम में एक धने जंगल में ये अंग्रेजों के गोली का शिकार हो गए।



शहीद महेन्द्र गोप

सिंह श्रीधर सिंह, प्रद्युमन सिंह, ये सभी प्रमुख थे जिन्होंने जेल से सजा काटकर बाहर निकले थे।

परशुराम दल

इस दल का इस दल का नेतृत्व परशुराम सिंह के हाथों में था। एक सशक्त जट्ठा लक्ष्मीपुर डैम के आसपास जंगलों में सक्रिय था। परशुराम सिंह नाटे कद के सरल स्वभाव के मिलनसारा व्याकुंथ थे आजादी के बाद वे बांका लोकल बोर्ड के चेयरमैन भी बने थे। बौसी प्रखंड क्षेत्र के फागा गांव के निवासी थे स्वतंत्रता सेनानियों की बस्ती फागा रही है। लड़ाई में पूरा गांव स्वतंत्रा संग्राम के योद्धा भुवनेश्वर मिश्र के साथ आजादी की लड़ाई में पूरा गांव के लोग साथ साथ काम करते थे।

शहीद जागो शाही

बांका जिले के बौसी प्रखंड के कचनसा गांव के दो सहोदर भाई थे .जिन्होंने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में 1945 में अंग्रेजों ने जब जुल्म ढाना शुरू कर दिया, तब इन दोनों भाईयों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बिगुल फुल कर अपने संगठन को मजबूत बनाया और कई अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिये। इन दोनों भाइयों का एक ही मकसद था, कि अंग्रेजों भारत छोड़े। इनके क्रियाकलाप से इनकी सक्रियता से अंग्रेज भी दहशत में हो गएथे। और इन दोनों भाईयोंपर कड़ी कड़ी कार्रवाई करने हेतु कई सिपाहियों का दस्ता बनाया गया। अंग्रेजी हुकूमत ने जागो शाही और पागोशाही पर 24 घंटे निगरानी रखने लगा और एक जगह मुठभेड़ के क्रम में उस जर्थी ने दोनों भाइयों को पकड़ लिया और 1945 में सेंट्रल जेलभागलपुर में दोनों भाईयों को फांसी के तख्ते पर लटका दिया।

शहीद गिखिर नारायण

सिंहबेलहर गोलीकांड

२६ नवंबर १९४२ बेलहर प्रखण्ड के धर्म राही गांव के स्वाधीनता सेनानी गिखिर नारायण सिंह ख्याति प्राप्त नेता थे अंग्रेजी हुक्मत ने इनकी गिरफतारी का बारंट जारी की थी। बेलहर थानेदार ने उन्हें गिरफतार कर लिया था। इससे पहले उन्होंने कई ऐसे अंग्रेजों के विरुद्ध संगठन बनाया जिससे अंग्रेजों को बहुत क्षति पहुंची थी। यह बात इलाके में रातों-रात फैल गई की थानेदार ने उन्हें गिरफतार कर लिया है। उन्हें छुड़ाने में इलाके के चारों ओर से आजादी के दीवाने में बेलहर पहुंच गए और हुजूम पर गोली बरसाने लगे। आद्या प्रसाद सिंह, जमुना सिंह, गुड़ सिंह तीनों गोलियों के शिकार हो गए, जबाबी करवाई में पुलिस के द्वारा भी गोली चलाई गई जिसमें यह तीनों शहीद हुए थे। २६ नवंबर १९४२ को तीनों मातृबेदी की बलिदानी पर शहीद हो गए जिसमें आद्या प्रसाद सिंह यमुना प्रसाद सिंह, गुड़ल सिंह व गिखिर नारायण सिंह भी थे।

[१६:२८, ७/२८/२०१९] प्रैरं ढल्ल्य॑ः सियाराम दल-- सियाराम दल का प्रमुख सियाराम सिंह थे

सियाराम सिंह का कार्य क्षेत्र बहुत बड़ा सुल्तानगंज, गांगा पार सोनबरसा, बांका, भागलपुर, सुदूरक्षेत्रों में इनकी पहुंच थी लंबे कद काठी आवाज में गर्जना, ललकार से दुश्मनों की सीधी-पीछी गुम हो जाती थी। अंग्रेजी हुक्मत इन्हें कभी पकड़ नहीं पाई थी। छल दम भेष

बदलना, लुका छुपी में ये माहिर थे। पुलिस को चकमा देकर सामने से निकल जाते थे। फुल्लीडुमर में गांवसे थोड़ी दूरी पर ही इनका बासा हुआ करता था। स्वयं की खेती थी डीमय गाव में एक सौ से डेढ़ सौ बीघे की जमीन उपजाऊ, अच्छी पैदावार भी होती थी। जो उनकी पैतृक संपत्ति थी फुल्लीडुमर कटोरिया डेयेढी। ठाकुर

जसवंत सिंह के कचहरी से चूड़ा गुड़ की रेडीमेट भोजन से प्रभावित होकर कहते थे। कि फुल्लीडुमर का चूड़ा गुड़ कभी नहीं भूलूंगा, कहते थे उनसे अच्छी जान पहचान के कारण बहुत मदद मिलती थी। आजादी के बाद भागलपुर जिला अध्यक्ष बने अनेक पदों पर आसीन सुल्तानगंज प्रखण्ड के निवासी थे इनकी धर्मपत्री विधान परिषद सदस्य रह चुकी थी।

भागलपुर में जिला शिक्षक संघ के भवन के बगल में सिया राम नगर में इनका घर था। पता नहीं वहअब किस अवस्था में है। मैं हमेशा उनसे भागलपुर में उनके घर पर मिलने जाता था। हमारी कोई भी समस्या का समाधान उनके लिए आसान था। काश में कुछ दिनों तक जीवित रहते तो पूरे जिते के लिए खासक हमारे परिवार के लिए बहुत ही लाभदायक सांख्यिक होते। कुछ और नाम हैं। शिवा कांत राय रन्नुचक के उनके सिपाह सलाहकार जैसे थे। शेषभार्जं प्रखण्ड के गुलनी-कुशाहा गांव के शहीद शशि प्रसाद सिंह थे शंभुगंज में उनके नाम का महा बिद्यालय है। शशि प्रसाद सिंह अंग्रेजों के गोली के शिकार हुए थे सतपटी राजपूतों की बस्ती है। स्वाधीनता सेनानियों का गढ़ गढ़ माना जाता था। अंग्रेजी हुक्मत यहां से हड्डिकंप रहती थी। इसी प्रखण्ड के धीरेंद्र यादव, बसंत मंडल वगरह स्वतंत्रा सेनानी थे।

जिन्होंने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। स्वाधीनता सेनानी परशुराम, पशुपति सिंह, कांग्रेस के भागलपुर जिला परिषद के चेयरमैन बने थे बाद में जीवन पर्यंत विधान परिषद सदस्य पटना बने रहे। तेजतरीर नेता उमेश प्रसाद सिंह के जोशीले भाषण से आम जनता उनका मुरीद हुए रहते थे गुनेश्वरी प्रसाद सिंह। कद में बिहार के शिक्षा राज्य मंत्री बने १९५२ में १ महीने के जेल में हम उनके साथ साथ हम लोग उन्हें गुना दा के नाम से प्यार से पुकारते थे। कुमारीह के मथुरा प्रसाद

सिंह, योगेंद्र नारायण सिंह, बनारसी सिंह, राम चरण सिंह इत्यादि स्वतंत्रा सेनानी थे। कुर्मा डीह के ही ठाकुर भागवत प्रसाद सिंह जो भागलपुर जज कोट से फांसी की सजा पाने वालों को राजेंद्र प्रसाद सिंह राष्ट्रपति से जीवन दान दिलाया था। क्योंकि दोनों स्वतंत्रा संग्राम से साथ साथ जेल में थे। और राष्ट्रपति डॉ प्रसाद से डॉक्टर भागवत नारायण सिंह सीनियर थे। बेलीहा के ठाकुर नरसिंह प्रसाद सिंह संपूर्ण बाका सब डिविजन के एकमात्र एम.एल.ए बने थे। पंजवारा के राधवेंद्र नारायण सिंह परिवहन मंत्री बिहार बनेथे चांदन के मथुरा पांडे, अंबिका पांडे, कटोरिया के चक्रधर सिंह, आदि अग्रसर थे बांका खड़हरा गांव के शहीद सतीश प्रसाद ज्ञा पटना सचिवालय में झंडा फहराने के क्रम में शहीद हो गए थे। ढाका मोड में उनकी प्रतिमा मौजूद है। इस तरह बहुत से स्वतंत्रा संग्राम की योद्धा संपूर्ण बांका, भागलपुर बिहार में सक्रिय थे। उनकी बलिदानी, बलिदान की गाथा इतिहास के पन्नों में अंकित है बाराहाट प्रखण्ड के नारायणपुर के पातो बाबू, बाबू राम सिंह स्वाधीनता सेनानी थे विध्यवासिनी देवी विधायक बनी थी। उनकी पुत्री थी भागलपुर बांका के स्वाधीनता सेनानियों की संख्या का आकलन करना इस छोटे से लेख में संभव नहीं है। मैंने प्रयास किया है कि आप पाठकों को मैं अपनी अनुभव को साझा करने का ज्ञाला प्रसाद सिंह की इन परियों के साथ में आपको धन्यवाद के साथ कहता हूँ। ***कि इलाही वह भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे जब अपनी ही जमीन होगी, और अपना आसमां होगा, शहीदों की चिताओं में जुड़ेंगे, हर बरस मेले बतन पर मरने वालों का यही बाकी निशा होगा। स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वालों के नाम के साथ सभी मृत आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित कर इस लेखनी को विराम देता हूँ। शालिग्राम प्रसाद सिंह सेवानिवृत्त शिक्षक बांका।

पर्यावरण की सुरक्षा हेतु पुलिस कप्तान संग पुलिस परिवार ने किया वृक्षारोपण



राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

पर्यावरण की सुरक्षा एवं प्राकृतिक श्रोतों की पूर्ति हेतु वृक्ष लगाव जग बचाओ मुहित को सफल बनाते हेतु बांका पुलिस कसान अरविन्द कुमार गुप्ता, संग क्राईम रीडर सह मंत्री बिहार पुलिस एसोसिएशन शुभ कान्त चौधरी, बांका एवं गोपाल पाठक, लाइन बाबू अशोक ज्ञा, प्रशिक्षण अधिकारी रितेश उपाध्याय, जी. पी. प्रभारी मेंस एसोसिएशन के पद धारक एवं अन्य पुलिसकर्मी एवं महिला प्रशिक्षण सिपाहियों ने भाग लिया। इस मुहिम के द्वारा पुलिस केन्द्र बांका में १०१ पौधों का वृक्षारोपण कर इस मुहिम को सफल बनाया।

स्वच्छ महोत्सव 2019

मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता को स्वच्छता महोत्सव दिल्ली में जिले का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ



स्वच्छता महोत्सव में भाग लेते मुखिया प्रदीप कुमार

राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)

पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 24 जून 2019 को नई दिल्ली में आयोजित मुख्य समारोह में कटोरिया के मुखिया, प्रदीप कुमार गुप्ता को भाग लेने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ .उक्त समारोह में भाग लेने का आमंत्रण बिहार के दो मुखिया क्रमशःप्रदीप कुमार गुप्ता कटोरिया (बांका) एवं मुखिया रिंकू देवी दादरी सीतामढ़ी एवं तीन स्वच्छाग्रही सिंधु देवी पहाड़पुर पूर्वी चंपारण, अर्चना कुमारी ,बिरहा सीतामढ़ी, एवं उदय वर्मा, बैकुंठपुर गोपालगंज को मिला था। लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के प्रशासी पदाधिकारी सह राज्य समन्वयक राजीव कुमार सिंह ने इस संबंध में जिलाधिकारी सह जिला जल स्वच्छता समिति के अध्यक्ष के माध्यम से कटोरिया के मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता को पत्र भेजा था। पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में आयोजित इस समारोह में भाग लेने के उपरान्त चर्चित बिहार को बताया कि देश की





सभा कक्ष में अपनी बारी की प्रतिक्षा में अतिथिगण

राजधानी दिल्ली में बांका जिले का प्रतिनिधित्व करते हुए हमे बहुत ही गर्व महसूस हुआ . साथ ही मैं जिला प्रशासन को धन्यबाद देना चाहता हूं. मेरे कार्यों का निरीक्षण करने के उपरान्त हमारे कार्यों से संतुष्ट होकर हमे इस योग्य समझा कि मैं बिहार के बांका जिले का प्रतिनिधित्व दिल्ली में किया . जो संपूर्ण जिले के लिए यह गौरव की बात है प्रदीप कुमार गुप्ता ने आगे बताया कि मैं अपने क्षेत्रों में किए गए कार्यों के बिषय में बहाँ के अधिकारीयों एवं अन्य जगहों से आए हुए मेहमानों को इसकी जानकारी दी. एकधंडे के अपने व्याख्यान में इन्होंने हर घर जल का नल का पानी , एवं बिशेष रूप से शौचालय के निर्माण में होने परेशानी यों के बारे में बताया किस प्रकार आम जनों की मानसिकता को बदल कर शौचालय निर्माण हेतु प्रेरित किया जातव्य हो कि बिहार सरकार के द्वारा शौचालय निर्माण में जो राशि दी जाती है, वह पर्याप्त नहीं है. अपितु मुखिया जी के अनुसार मेरे क्षेत्रों में शौचालय योजना का लाभ लोग शत प्रतिशत ले रहे हैं. ज्ञातव्य हो कि ग्राम पंचायत कटोरिया में बिहार सरकार की जल नल योजना , सड़क योजना, आवास योजना , सभी योजना पूर्ण रूप से शत-प्रतिशत गतिमान हैं.

अपने अन्य सहयोगी मुखिया में से रिकू कुमारी ने भी आवास योजना एवं शौचालय योजना को गति प्रदान कर क्षेत्र में शत प्रति शत लोग लाधार्भित करने हेतु अपने द्वारा की गई पहल और मेहनत पर भी प्रकाश डाला. इसी प्रकार अन्य सहयोगियों में अर्चना कुमारी ने भी नल जल योजना क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला. साथ ही बिहार के पूर्वी चम्पारण की स्वच्छता ग्राही सिन्धु देवी, अर्चना कुमारी सीतामढी एवं उदय बर्मा गोपलगंज ने भी बारी बारी से अपने अपने क्षेत्रों में स्वच्छता एवं पेयजल ,सड़क ,आवास योजना के गतिशीलता पर अपने अपने बिचार रखे. इस समारोह में बिहार के अलावा अन्य राज्यों के मुखिया एवं जन प्रतिनिधि पठाए थे.



.....नवनीत नयन.....

राहुल, बांका



सुन्दरता मे होती है
नैसर्गिकता,
कोमलता और माधुर्यता
॥

नयनाभिराम द्रुकती है नयना,
रुकती और झुकती ॥

बगिया मे भौरो सी है नयना,
प्रस्फुटित जो करती ॥

मैंने पुछा-

आखिर क्या दुटती है नयना ?

क्या पुलकित मन ?

क्या कोमल तन ?

क्या करारे नयन ?

नहीं हम-

प्रकृति से जन्मे और है मगन,

दूंढता तेरी जो छवि ।

प्रकृति की प्रतिष्ठाया है सजीव

भटकता रहता नयन ।

है यह-

जगत बालक क्रीड़ा,

माया का संघर्ष ही है जीवन ।

निरंतर बहने दो ,

हर पल नवनीत जो नयन ।

स्वच्छ भारत अभियान को धरातल पर देख गदगद हुए परमेश्वरण

पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय भारत सरकार के सचिव हैं, परमेश्वरण



परमेश्वरण से सम्मान प्राप्त करते मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)



भारत सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय के सचिव परमेश्वरण अय्यर, मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी सह निर्देशक जीविका बिहार के वाला मुरैना एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ चांदन प्रखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत चांदन के दावा गांव पहुंचे। इस क्रम में उन्होंने हर घर नल का जल योजना

का निरीक्षण किया। इसके अलावा शौचालयसंख्या पत्तल से बनने वाले दैनों इसके अलावे तसर को कुन से बनने वाले रेशम के धाँओंआदि कार्यों काँभी अवलोकन किया था। आदि के कार्यों का अवलोकन किया। इन मेहमानोंका गांव पहुंचते ही गांव बालों के द्वारा स्वागत किया था। गांव पहुंचते ही पौधारोपण कार्यक्रम के तहत मुख्य अतिथि परमेश्वरण अय्यर ने पीपल का पौधा भी लगाया। हर घर नल का जल, योजना व शौचालय निर्माण आदि का निरीक्षण करने के बाद उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान को आम लोगों ने मिलकर जल आंदोलन का रूप दिया है। स्वच्छ भारत

के प्रति लोगों का उत्साह काफी सराहनीय है। उन्होंने कहा कि जमीनी ग्राउंड बाटर की क्या स्थिति है, इसका भी वह अध्ययन करने पहुंचे हैं। धावा गांव के कार्यों को देखकर वह काफी खुश हुए बल्कि साथ ही साथ कहा कि धावा गांव के इस मॉडल को पूरे देश में भी लागू किया जाए। धावा गांव के लोगों के इस मॉडल को पूरे देश में लागू किया जा सकता है। जल्दी ही धावा गांव को ओडीएफ घोषित किया जाएगा। सचिव परमेश्वरण ने प्रधानमंत्री द्वारा जनपदों के नाम एक पत्र भी प्रदान किया। जिसमें इनके कार्यों की प्रशंसा की गई है। जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा



वृक्षारोजपण करते सचिव परमेश्वरण व जिलाधिकारी एवं अन्य पदाधिकारीगण

कि, आपके आने से प्रशासन में उर्जा बढ़ि है। इतनी गर्मी के बावजूद बांका जिले के लिए समय निकालकर सचिव महोदय जिले की जनता के लिए यहां पथरे जिले की जनता की ओर से मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। इससे पहले गांव पहुंचने पर जिलाधिकारी कुंदन कुमार व एस. पी तलकालिन स्वपना जी मेंत्राम ने अतिथियों का स्वागत बुके प्रदान कर किया। इसके उपरान्त चांदन बाजार स्थित गल्टर्स हाई स्कूल में स्मार्ट ब्लास का भी जायजा। अतिथियों ने लिया। इस मौके पर पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय भारत सरकार के उप सचिव रंजीता, सेक्रेटरी कार्यालय के कंसलटेंट विनोद जैन, एमडीएसके आनंद शेखर डीडीसी अभिलाषा कुमारी शर्मा, डीपीआरओ रंजन कुमार चौधरी, एमडीओ मनोज कुमार चौधरी, जिला कोषागार पदाधिकारी नवल किशोर यादव, एडिशनल एस.पी एसडीपीओ मदन कुमार आनंद वीडियो दुर्गा शंकर, प्रदीप कुमार गुप्ता, मुखिया करोरिया, सुरश यादव मुखिया, उर्मिला देवी, नरेश पांडित, आदि मौजूद थे। मुख्य रूप से यह कार्यक्रम में आए हुए मुख्य अतिथियों का लोगों ने भरपूर अभिवादन किया।

पुष्ट, हर घर में नलक का स्वच्छ जल

योजना

ग जल
6-2017
2017

मुखिया प्रदीप कु.गुप्ता

मनस्त्रिया बाँका प्रोजेक्ट जल संचय बाँका जल संरक्षित तो कल सुरक्षित गो-वार्ड-11 में जल मीनार का पास सांरुता रिचार्ज पिट निर्माण पंचायत-करोरिया, प्रसंड-करोरिया, जिला-बाँका

परमेश्वरम और जीविका के निदेशक, मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, इस क्षेत्र में होने वाले कार्यों की सराहना कर कर, गदगद हो गए वर्तमान समय में जंगली इलाका होने के बाबजूद सरकार की योजनाओं से

जिससे आप जन लाभावात दिखे। सचिव महोदय का मन हर्षित हो उठा। उन्होंने इस पहले हेतु पंचायत के जन प्रतिनिधियों के साथ- साथ जिला प्रशासन की पूरी टीम को धन्यबाद दिया।



सचिव परमेश्वरण द्वारा उन्नयन ब्लास का जायजा लेते हुए।



मुखिया के कार्यों का निरीक्षण करते जिलाधिकारी व उप विकास महोदया

अतिक्रमण के कारण सतवेहडी बांध का अस्तित्व विलुप्ती के कगार पर : स्थानीय प्रशासन मौन

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के प्राकृतिक संचनाओं पर नजर दौड़ाई जाय तो पहाड़े, जंगलों के साथ साथ खनिज सम्पदा की अधिकता है। यहां के जंगली क्षेत्रों में मिट्टी लाल बहुतायत पाई जाती है। जंगली क्षेत्र होने के बाबजूद यहां जल संरक्षण के अभाव में जल श्रोतों में कमी आने लगी है। इसका मूख्य कारण तालावों, बांधों में जल का सरक्षण नहीं होना है, कटोरिया क्षेत्र के अधिकांश तालावों, बांधों पर दर्वांगों के कब्जे में होने के कारण उस पर बदस्तूर अतिक्रमण जारी है। इसके लिए यहां का स्थानीय प्रशासन की शिथिल हो गया है। प्रशासन की उदासीनता के कारण दंवोगों की बल्ले - बल्ले हैं। पिछले दिनों चर्चित बिहार की टीम जब कटोरिया प्रखण्ड के विभिन्न बांधों एवं तालावों की बर्तमान स्थिति जाने हेतु दौरा किया तो पाया गया कि कटोरिया क्षेत्र के अधिकांश बांधों, तालावों पर अतिक्रमण करायी जाकर कब्जा है। जहां कई छोटे-बड़े पक्का मकान, ऊँची-ऊँची इमारत बन कर तैयार हैं। लोग इस स्थान पर निवास कर रहे हैं। आज मैं कटोरिया क्षेत्र के उन तमाम बांधों का विवरण रखवा क्षेत्रफल दर्शा रहा हूं। जिसका अस्तित्व विलुप्ती के कगार पर है।

सतवेहडी बांध -- कटोरिया बाजार से सटे पूरब भाग में यह बांध अवस्थित है जो ग्राम पंचायत कटोरिया के बांड नं ११ - १२ से गोसाई टोला के नजदीक अवस्थित है। जिसका खाता नं-154-खेसरा-1265-रकवा- 2.78डी., तथा जल क्षेत्र का रकवा- 2.00 डी. है। इस बांध के अतिक्रमण से मूख्य सड़क बांका कटोरिया में बर्षा के समय काफी जल जवाब की स्थिति पैदा होने से आम जन जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। दुकानों और घरों में पानी प्रवेश करने लगता है। यातायात बाधित हो जाता है।

स्थानीय लोगों ने बताया कि जल निकासी स्थल सतवेहडी बांध तक नाला है, परन्तु अतिक्रमण के कारण नाला जाम है। कुछ लोगों ने नाम नहीं छपने के सर्त पर यह बताया कि दंवोगों और और स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत के कारण यह स्थिति पैदा हो



जाती है प्रत्येक वर्ष इसके लिए जन आंदोलन भी होता है। लेकिन इसका कोई हल कोई समाधान नहीं निकल पाता है। इस विषय में स्थानीय मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता से जब जानना चाहा कि आपके क्षेत्र में यह बारिस का पानी का जो जमाव होता है इसके निराकरण का क्या उपाय है? इसपर उन्होंने बताया कि यह मुख्य सड़क प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत आती है। जिसका रख रखाव निर्माण आदि कार्य क्रियान्वयन समिति करते हैं। जो हमारे अधिकार क्षेत्र से बाहर है। हमारे क्षेत्र के बांका कटोरिया मूख्य सड़क के अंदर गली जाने का रास्ता जो कंचन कंचन गली कहलाता है में भी बारिस का पानी का जमाव होता था जिससे लोगों का चलना मुश्किल होता था। उसको मैंने अपने क्षेत्र के कार्यों के फंड से पक्की नाली ढक्कन सहित का निर्माण कराया और परिणाम यह है कि हमारे प्रवेश क्षेत्र अंदर गली में

प्रवेश से अतिम गली तक अब कहीं भी जल का जमाव नहीं होता है।

चर्चित बिहार प्रत्रिका - की टीम ने जब मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता के जानना चाहा कि आपके क्षेत्र का यह सड़क के रख रखाव या जल निकासी नहीं होने के कारण आप के क्षेत्र की जानता परेशान होते हैं। इसपर आपके द्वारा क्या पहल की गई।

इसपर उन्होंने कहा कि मैंने इस संदर्भ में यहां के स्थीय विधायक, सांसद, एवं प्रशासनिक पदाधिकारी यों को कई बार लिखित आवेदन देते हुए। इस समस्या से हमारे पंचायत के लोगों को निजात मिले आग्रह किया है। सर्वों के द्वारा आस्वासन भी मिला था, परन्तु समस्या जस की तस बनी है, अब हमने नए सांसद महोदय को भी इस समस्या से निजात दिलाने हेतु आग्रह किया है। उनके द्वारा आस्वासन भी मिला है।

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

मो. हाजा

बीपीएम
बरही बिथान



थन्त्रुष्ण

जिला उपाध्यक्ष
अनुसूचित जाति मोर्चा
समस्तीपुर



रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

विकाश

कुशवाहा

जिला महासचिव
समस्तीपुर, सूचना एवं
तकनीकी प्रकोष्ठ
राष्ट्रीय लोक समता पार्टी

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

लक्षण

पालवान

प्रधानाध्यापक
मध्य विद्यालय
मोहदीपुर, समस्तीपुर

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

धर्मेंद्र दाय

भावी विधायक प्रत्याशी
पूर्व मुखिया
ग्राम पंचायत राज
रहीमपुर हौली
समस्तीपुर (बिहार)

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

यमार्थकर

टाकुर

ईंट उद्योग एवं
समाजसेवी
सोन्मार कल्याणपुर
समस्तीपुर

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

जीतेन्द्र चौधरी

राष्ट्रीय ब्रह्मा संघ के
जिलाध्यक्ष
विधानसभा भावी
उम्मीदवार, भमरुपुर
समस्तीपुर (बिहार)

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस

की



हार्दिक शुभकामनायें

अजय कुमार, समाजसेवी

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

संकल कुमार झा

उ. म. वि. हरपुर
सिंधिया
जिला + थाना
समस्तीपुर

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

सुरज कुमार

पंचायत समिति सदस्य
सह पूर्व मुखिया ग्राम
पंचायत राज
भारीरथपुर
समस्तीपुर

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

छोटे खान

वरीय नेता
आरजेडी

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

विक्रम आचार्य

पु. नि. सह
थानाध्यक्ष

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

शिवनारायण

साहनी

प्राचार्य प्राथमिक विद्यालय
बी. ,एलौथ, वार्ड न. - 3
मुसरीधरारी
समस्तीपुर

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

जगद्गाथ मुखिया

ग्राम पंचायत राज
हरपुर हनौथ
समस्तीपुर



स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त बिहारवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

NAVIT ANAND

NAVIT ANAND, BDM FOR GROUP OF INSTITUTIONS

For Confirm Admission:- Engineering, Medical, Paramedical, Pharmacy, Nursing, Teacher Training, Library Science, Management, Diploma, ITI, Polytechnic, Undergraduate & Postgraduate courses....

(Study in India & Abroad) M:- 8877931135

Email:- anandnavit@yahoo.in



स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



**डॉ. दिनेश
पंडित**
बी.डी.एस
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



**आचार्य रिधुनंदन
शास्त्री**
आवासीय मार्शल
एकेडमी, खेसर,
बांका, मो.: 8002850364

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



**मानोज प्रताप
सिंह**
प्रखंड कॉर्प्रेस
अध्यक्ष, शंभुगंज
जिला बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं



**नरेश
ठाकुर**
इनफिनिटि ईसेलून, जिला
परिषद मार्केट, गांधी चौक - बांका,
मो.: 7493058890

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

ABHIJEET GAIN

DIRECTOR AND CEO RITE WATER SOLUTIONS (I) PVT LTD

Rite WATER SOLUTIONS (I) PVT. LTD.

Branch Office: Rite Water House, Near Babab Market, Katoriya Road, Vijay Nagar, Banka (Bihar)-813102, Works, K-60, M.I.D.C. Industrial Area, Hingna Road, Nagpur-16, Tel 0712-2220002, E-mail: info@ritewater.in, website: www.ritewater.in



स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



**श्री निवास
चन्द्र श्री**

संस्थापक ज्ञान गंगा आवासीय
विद्यालय इदाहा रोड बांका व
मकदुमा रोड सर्वशिल्प रोड, बांका,
मो. 9934831312

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



प्रो. मंटु कुमार

जीवन ज्योति
ट्रेनिंग सेन्टर
अमरदीप हॉटल के गली में,
बांका मो. 9939944798
7070025255

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



**संतोष
कुमार सिंह**

वॉड - पार्षद,
वॉड - नं-8, नगर
परिषद, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



**देवती
रमन चौहे**
प्रखंड भाजपा
कार्यकर्ता
बाराहाट - जिला - बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



शंकर प्रसाद चौधरी
शक्ति केन्द्र प्रभारी
ग्राम पंचायत-मिजार्पुर
चंगोरी, प्रखंड- बाराहाट
जिला- बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं



**प्रो. अटोक
कुमार**
अमन झटका भीट शॉप
जिला परिषद मार्केट
गांधी चौक बांका, मो. 9934757471

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



**रेंगित
कु. शर्मा**
प्रो. शक्ति लालस हाउस
न्यू मार्केट कचहरी रोड,
बांका, 8084789834

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



जययन यादव
अभिकर्ता
भारतीय जीवन बीमा
निगम
शाखा बांका
कोड नं-1202/5011

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

महादेव इनकलेव प्रा. लि.



अमर सिंह राठौर
जी. एम
महादेव इनकलेभ प्रा. लि.



24 घंटे एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध



आर. पी.सिंह
जी. एम
महादेव इनकलेभ प्रा. लि.

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



डा. संगीता
मेहता
बाराहाट
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



गोविंद
राजगडिया
बांका

डायमंड आर्ट्स स्मार्ट
लिमिटेड की ओर से
सभी को सावन और
स्वतंत्रता दिवस की
शुभकामना इस कम्पनी
के किसी भी जानकारी
के लिए सम्पर्क करें
9931921066

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



अजीत
कुमार मंडल
कंपाऊंडर
बिजय नगर बांका
मो. 9934749429

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



Dr Md. Hasnain

Neha janch xray, Ecg & ultrasound centre,
Kashipur Samastipur
All India Medical
Laboratory Technologist
Association District
Secretary, Samastipur

अद्विंद कुमार



आई.सी.डी.एस

बांका की ओर से नागपंचमी,
बकरीद, रक्षाबंधन, स्वतंत्रता दिवस,
कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक
शुभकामनाएं

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं



आरती देवी
प्रमुख
ग्राम पंचायत - रहीपुर
रुदौली, पोस्ट - हरपुर
ऐलौथ, प्रखंड समस्तीपुर
मो. 7766865266
9262618612

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



पंकज कुमार
जय
प्रो.- जयप्रकाश
मेडिकल हॉल
पुनसिया जिला- बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



गुदुल सिंह
सामाजिक
कार्यकर्ता
बांका



स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

पुतुल कुमारी

पूर्व सांसद
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रालिग्राम प्रसाद सिंह

सेवा निवृत शिक्षक
बांका, मो.-8294844546



स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नीरज कुमार

मुखिया
ग्राम पंचायत -घोरमारा
प्रखंड - कटोरिया-
जिला- बांका



स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



पंकज कुमार

कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा - कटोरिया
जिला बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं



निटेन्ड्र कुमार सिंह

पोस्ट मास्टर
प्रधान डाक घर
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



अंगनी कुमार राम

उच्च वर्गीय लिपिक
अनुमंडल कार्यालय
बांका

गांधी जयती एवं दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



दीपक कु. शर्मा

कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा- फुलीझुमर
जिला- बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



मिलिंद कुमार सिंह

सिंह एण्ड सन्स
इलेक्ट्रोनिक सेंटर,
शिवआशीष मार्केट, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



रितेश कुमार गुप्ता

नगर प्रवंधक
नगर परिषद
बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



उत्कम कुमार नियाला

बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



प्रतिज्ञा कुमारी

प्रो. प्रतिज्ञा गैस
एजेंसी, कटोरिया
रोड, बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



अनिल प्रसाद सिंह

संस्थापक -मुक्ति
निकेतन संस्थान
कटोरिया, बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. नालक्ष्मी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S. (Darbhanga)
R.M.P.H. (Patna), D.C.P. (Ranchi)
Regd. No. 16261 दुर्गा
गाँव, नो. 9955601568

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



ताया देवी

जिला परिषद सदस्या
बांका उत्तरी-14

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



अनिल प्रसाद सिंह

संस्थापक -मुक्ति
निकेतन संस्थान
कटोरिया, बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. सत्येन्द्र प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा
वन समिति
जिला- बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ. बलराम मंडल

D.E.H(Redg no 23631
रजि नं-23631
ग्राम - दुधारी
जिला- बांका
9939992228

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



अनेन्द्र कुमार

प्रोपराइंटर- मंदार
प्रिंटिंग प्रेस
तेलिया जिला- बांका
मो. 9546833983

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



नवल किशोर यादव

वरीय कोषागार
पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



एवि रण

जिला निबंधन
पदाधिकारी
बांका

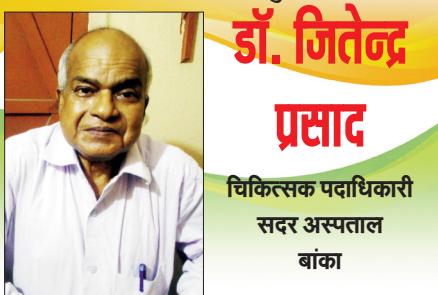
स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



अमिनाव कुमार

कार्यपालक
पदाधिकारी
नगर परिषद- बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की देर सारी शुभकामनाएं



डॉ. जितेन्द्र प्रसाद

चिकित्सक पदाधिकारी
सदर अस्पताल
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



सुरीला धन

बाल विकास
परियोजना
पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



रंजन कुमार चौधरी

जिला पंचायती राज
पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



बिजय कु सिंह

जिला खनन
पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



अजय कुमार

सहायक अभियंता
डी.आर.डी.ए
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



चन्द्र देव महतो

जिला सांख्यिकी
पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



सूर्य भूषण कुमार

निरीक्षक,
माप तौल
बिभाग, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ लक्ष्मण पंडित

एम.बी.बी.एस.
एम.एस. सर्जरी
सदर, अस्पताल, बांका

रक्षाबंधन, सावनी मेला तथा स्वतंत्रता दिवस की देर सारी शुभकामनाएं



गोपाल कुमार

शाखा प्रविधक
इंडिया पोस्ट पेमेन्ट्स
बैंक, बांका.
मो. 7903651006

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



विजय कुमार चन्द्र

प्रखंड विकास
पदाधिकारी
बांका